छन्दोमञ्जरी ।

अर्थात्

भिन्न भिन्न छन्दों के लक्षण उनके उदाहरण सहित
तथा च मात्रा और वर्ण प्रस्तार, नष्ट उद्दिष्ट,
मेरु, पताका, मर्कटी सम अर्धसम विषम वृत्त
इत्यादि उदाहरणों की अपूर्व रचना

जिसे

कविकुलभूषण श्रीपद्माकर कवि के पौत्र श्रीगदाधर
कविजी ने श्रीपरमपूज्य श्री १०८ महाराज माधोसिंह
जी के प्रीत्यर्थ विरचा और जिसे वर्तमान सुधा-
लियाधिपति श्री १०८ महाराज शम्भूसिंहजी
के आज्ञानुसार भारतजीवन सम्पादक
बाबू रामकृष्णवर्म्मा ने अधिकार पा
प्रकाश किया ।

काशी ।

भारतजीवन यंत्रालय में मुद्रित हुई ।

सन् १९०२ ई० ।

द्वितीयवार १०००] [मूल्य ।।=)

वर्तमान सुथालिया नरेश महाराज शंम्भुसिंह जी की प्रशंसा के कवित्त ।

शत्रुन के शाल हैं औ दुष्टन के काल हैं, विनाशै ततकाल हैं जो बल में विशाल हैं ॥ नीति में मराल हैं सुप्रीति में रसाल हैं, सुयश में कमाल हैं सो मेटैं भ्रमजाल हैं ॥ दीन के दयाल हैं सा पूर प्रतिपाल हैं, करैं महानिहाल हैं "पँवार" पै कृपाल हैं ॥ शुचि शशि भाल हैं जो बाहु के मृणाल हैं, महान मोदमाल हैं श्रीशम्भू महिपाल हैं ॥ १ ॥

देखे जो सुठालिया में दीन गुणी आयो कोऊ, याकी परदेशतापै क्रोध करि भाले है ॥ वंशज पँवार धीर वीर नृप शंभुजू ने, टालि २ दारिद्रको द्रव्य से निकाले है ॥ हेमकी जँजीरन में बाँधि बलभद्र भनै मालन रुमालन दुशालनसों शाले है ॥ दाबि गज बाजिन के पाँयतरे दुःख काहिं, शेर सम आनि शमशेर शीश घाले है ॥

दान सनमान गुण ज्ञान बल पौरुष औ, राज कोष मालवा के मध्य में अखण्ड भो ॥ खिलिगे कविन्दकंज याचक मलिन्द कवि, पंडि-

तहू कोक भारी भास बरिबगड भो ॥ चोरसों उलूकनको जोर करि तोर तम, बैरिन को घालक अपार परचगड भो ॥ भाषै बलभद्र पूर शंभू कि प्रसाद सन, शंभूसिंह भूपति उदित मारतगडभो ॥ ३ ॥

आवै जो सुठालिया दुवारिका में दीन गुणी, ताको उठि भेटैं बड़े आदर समेत हैं ॥ पूँछि कै कुशल छेम आसन बिठाय वर, सबभाँति मारगको श्रम हरि लेत हैं ॥ भणि बलभद्र श्याम शंभूसिंह भूपतिजू, पूरण प्रमोदितकै राखैं बहुहेत हैं ॥ गज रथ पालकी तुरंग रंग २ और, धन धाम भूमि दै सुदामा करि देत हैं ॥ ४ ॥

सवैय्या ।

शील सनेह सुभाव सुचातुरी, बुद्धि विवेक महा अवरेखी ॥ नीतरता शुभचिन्तकता गुणग्राहकता भरी भूरि विशेखी ॥ यों बलभद्र प्रशंसित है, शुभकीरति धीर गँभीरता पेखी ॥ जो है उदारता शम्भु सुरेश में, सो परै शम्भू नरेश में देखी ॥ ५ ॥

धन्यवादपत्र।

यह छन्दोमंजरी नामक छन्दों विषयक ग्रन्थ सुठालिया-नरेश श्री १०८ महाराज माधवसिंह जी ने सम्वत १९४५ में प्रथम बार हमारे भारत-जीवन छापेखाने में छपवाया था। ग्रंथ समाप्त हो जाने पर ऐसे उपयोगी ग्रन्थ के लोप हो जाने के भय से, हमने वर्तमान सुठालियाधिपति श्री १०८ महाराज शम्भुसिंह जी से जो स्वर्गवासी महाराज माधवसिंह जी के सुयोग्य पुत्र हैं प्रार्थना की, कि ऐसे साहित्यहितकारक ग्रंथ को अवश्य पुनः छापकर प्रकाश करना चाहिये। गुणग्राही महाराजा साहब बहादुर ने उसे छापने की आज्ञा मुझे प्रदान कर परम अनुगृहीत किया जिसके लिये कवितापेमी मात्र उनको सदा के लिये धन्यवाद देंगे।

रामकृष्णवर्म्मा

भारतजीवन प्रेस काशी।



भूमिका।

सम्वत् १६४० विक्रमीय में कई सङ्केतपत्र प्रेषित करने के पश्चात् दतिया राजधानी बुन्देलखण्ड से जगत्‌विख्यात सर्वसद्गुणाकर पण्डित श्री भट्ट पद्माकर जू तैलिङ्ग बैकुण्ठवासी के पौत्र भट्ट पण्डित श्रीगदाधर जू कविवर मेरी राजधानी सुठालिया में सुशोभित हुये और मुझ को अपनी कविताशक्ति वाक्‌पटुता, और नम्रता से आश्चर्य्य में निमग्न कर दिया। यद्यपि अस्सी वर्ष के वृद्ध थे तथापि काव्य, कोष, अलङ्कार, व्याकरण जिस विषय का प्रश्न कीजिये ऐसी शीघ्रता से उत्तर देते थे कि मानों सरस्वती आपकी जिह्वाग्र वास करती थी—मैंने उक्त महाशय से निवेदन किया कि नायिकाभेद इत्यादि के तो अनन्त ग्रन्थ निर्मित और मुद्रित हुये हैं किन्तु प्रस्तार भेद, मेरु मर्कटी पताका के जानने का सुगम ग्रन्थ उदा-

हरणों सहित बहुत कम दृष्टिगोचर हुआ है अतएव इस विषय का कोई ग्रन्थ आप निर्मित करें कि जिससे कवितारसिक महानुभावों को आनन्द और छात्रों का परम उपकार हो— उन्होंने मेरे इस वचन को सादर स्वीकार कर यह "छन्दोमञ्जरी" नामक ग्रन्थ निर्माण किया इनके वंश की कविता की जो ख्याति है उसका उल्लेख निरर्थक है क्योंकि पद्माकर जू के कवित्त आसमुद्रान्त सूर्य्यवत् देदीप्यमान हैं—

श्रीमत् रघुनाथराव राजा सागर और महाराज जगतसिंहजी जयपुरनरेश तथा पारीछत महाराज दतियाधीश ने लक्ष २ मुद्रा का दान ग्राम सहित दे दे कर गुणग्राहकता का परिचय दिया है यद्यपि इस ग्रन्थ के निर्माण समय कवि बर वृद्धावस्था के कारण अति कृश थे तिस पर अधिकता यह हुई कि ज्वर की विषम दृष्टि में पड़कर और भी दुर्बल हो गये अतएव इस ग्रन्थ को समग्र निर्मिति करके सर्वतोभाव पुनरावृत्ति

कर शोध न सके और दतिया पहुंचकर आमया-क्रान्त हो इस असार संसार को त्याग वैकुण्ठ-वासी हुये—कविवर जी कुछ इस एकही ग्रन्थ के कर्त्ता न थे उन्होंने कई बड़े २ ग्रन्थ जैसे "कामान्धक" संस्कृतनीति ग्रन्थ का विविध छन्दों में श्रीमान् महाराजाधिराज सवाई राम-सिंहजी जयपुराधीश की आज्ञानुसार अनुवाद किया। अनुमान छ: हजार श्लोक का ग्रन्थ उनके स्वहस्त का लिखा हुआ मेरे पुस्तकालय में प्रस्तुत है किन्तु किसी विशेष कारण से मुद्रित न होने पाया—

यह छन्दोमञ्जरी नामक उनका अन्तिम ग्रन्थ लोकहितार्थ किसी उत्तम यन्त्रालय में मु-द्रित कराने का विचार था कि इसी अवसर में कार्य्यपरत्व सीहोर कण्टूनमेंट में मेरा आगमन हुआ। वहां मित्रवर्य्य पण्डित सूर्य्यबलीजी बाज-पेयी हेड पण्डित सीहोर हाईस्कूल की यह स-म्मति हुई कि भारतजीवन प्रेस बनारस जिसमें

हमारी रची हुई पद्यचन्द्रिका अति उज्वलता से छपी है मुद्रित कराया जाय तो उचित है; निदान उनकी सम्मति स्वीकार होकर यह ग्रन्थ बाबू रामकृष्णवर्म्माजी द्वारा प्रकाशित करके विद्वज्जनों से प्रार्थना करता हूं कि यदा तदा जो कुछ त्रुटि हो तो उसे शुद्ध करके मुझे चिरबाधित करें इत्यलं बहुना सुज्ञेषु किम्—

दोहा।

नेत्र वेद ग्रह चन्द्रमा वत्सर विक्रम भूप।
शित कार्तिक चौदश रवी सोवरनगर अनूप॥१॥
बाण सिद्धि दिगपाल भुव सन्मसीह पहिचानि।
बीस नवम्बर वार रवि मुठालिया रजधानि॥२॥
नूतन काव्य प्रबन्धयुत छप्यो ग्रन्थ गुणधाम।
धर्यो छन्द पद्य जानिये "छन्दमञ्जरी" नाम॥३॥

भवदीय

महाराज माधवसिंहवर्म्मा

राजधानी मुठालिया जिला अमटबाड़ी

प्रान्त मालवा।

श्रीगणेशाय नमः ।

॥ छन्दोमञ्जरी ॥

कवित्त ।

गिनत गजानन हैं आनन षड़ानन के लोचन समेत अति आनँद अदम्बा के । गदाधर कहैं सुण्ड नापत उदण्ड तेऊ दाबि दाबि श्रवन समान दल रम्बा के ॥ करत विवाद कौ न मानत विषाद नेक ठानत निनाद शम्भु हरषैं ततम्बा के । लौनि कर मोदक प्रमोद कौं बढ़ावैं ख्याल खिलत विनोदभरे गोद जगदम्बा के ॥ १ ॥

छप्पय ।

अरुनबरन चरनारबिन्द भयहरन बिराजत । नख मणिगन अभिराम विविध विधि भूषन साजत ॥ लाल बसन उपवीत माल उर बाहन उन्दर । भुज मोदक बरदान अभय अंकुश जुत सुन्दर ॥ शशिभाल मुकुट शोभित विशद विघनहरन इक बररदन । नव निद्धि सिद्धिदायक सदा जय जय जय सिन्दूरबदन ॥ २ ॥

जय गिरीश गौरीश जयति जगदीश बरद-बर। जयति भालभूषितबिसालशशि व्याल-मालधर॥ जयति गङ्ग सिर सङ्ग रङ्ग रञ्जित बि-भूति कर। जयति शम्भु हर दम्भ कम्बुद्युति अङ्ग अङ्ग भर॥ जय जय महेश अमरेश प्रभु ध्रुव दि-नेश दर तमदरन। जय प्रमथनाथ भवनाथ जय भूतनाथ भव-भयहरन॥ ३॥

धरधरात ध्रुव लोक ओक छबि जटा जूट तकि। हिरद दिग्ग दिगपाल क्रोड़ मद जान रहत चकि॥ बटुकनन्द हेरम्ब अम्बसुत करत ताल बिधि। रचत गीत सङ्गीत शम्भु निज प्रीति रीति सिधि। फुङ्करत शेष फनिवृन्द प्रति फबि फुलिङ्ग बिष झर्झरत। कच्छपन पिठ्ठ भूधारतन भू-बिदार भूधर धरत॥ ४॥

अथ श्रीमन्नृपतिवंशावलीवर्णनम्।

दोहा।

परम पवित्र पमारकुलकुवलय-कलानिधान।
भोज नृपति विख्यात हुव भुवमण्डल मघवान॥५॥

कवित्त ।

कीरति बिसाल कला कलित बिसाल राजै महिमा बिसाल मही मङ्गल बिसाल है। गदाधर कहै धर्म्म प्रभुता बिसाल साजै नीति मैं बिसाल रनजीत मैं बिसाल है ॥ मान मैं बिसाल शिव ध्यान मैं बिसाल धनदान मैं बिसाल गुन ग्यान मैं बिसाल है। ओज मैं बिसाल चित चोज मैं बिसाल मन मौज मैं बिसाल भुव भोज महिपाल है ॥ ६ ॥

दोहा ।

भोज नृपति की भूमि पै छाय रह्यौ यस वृन्द ।
हिम सौ हर सौ छीर सौ चन्द्रक चौसर चन्द ॥
नव कबिता सुनि कविन को लच्छ लच्छ धन दीन ।
पुन प्रत्यच्छर लच्छ दिय लच्छ लच्छपति कौन ॥८॥
तिहिं कुल मे भूपति बहुत भूमिभार-हरतार ।
दानबीर रनधीर पुन पृथु पारथ अवतार ॥ ९ ॥
छत्रसिंह रावत भये तिहिँकुलकमलदिनेश ।
रावत मोहनसिंह भे तिनके मौल महेश ॥१०॥

छप्पय ।

तिनके सूरतसिंह बीर जिन रन अवगाहिय। तिनकी जैपुर धनी भूप जयसिंह सवाइय ॥ महाराज पद दियव लियव कर अप्प समानहि। बाण तुरङ्गम ताल चन्द्र सम्बत् (१७७५) जग जानहि ॥ चम्पत्तिराय पेड़ीय सौं जुद्ध जुट्ट ता छनिय छिय। पारसन टब्बि निज खग्ग बल रज-धानी महाराज किय ॥ ११ ॥

दोहा ।

चम्पतिराय हनौ हरषि सूरतसिंह महाराज ।
सम्वत्नभहयरिषिससी१७७०पारसनैकियराज ॥

छप्पय ।

तिनके भारतसिंह भयउ महाराज अवनि पर। खण्डिय खल निज खग्ग जोर जगमग्गिय जस वर ॥ महाराज गोपालसिंह तिनके बल मण्डित। पुहमी प्रगट प्रताप लसत महिमा सु अखण्डित ॥ बलवन्तसिंह महाराज हुव चतुरंगिनि सैना सहित। महाराज सु मुहकमसिंह हुव तिनके श्रिय सम्पत्ति नित ॥ १३ ॥

दोहा ।

तिनके श्रीशिवदानसिंह महाराज हुव बेस ।
सत्यसन्ध दाना द्विजन पूजत सदा महेस ॥१४॥

सवैया ।

मण्डित श्रीरजताचल पै मुख पञ्च विसाल प्रभाव प्रतीजे । अम्बर अङ्ग बघम्बर सङ्ग सु सीस जटा जल गङ्ग गनीजे ॥ श्रीजगदम्ब गनेश षड़ानन शोभित देखि सुधारस पीजे । श्रीशितिकण्ठ सदा मनवाञ्छित श्रीशिवदाननरेश कौं दीजे ॥

कवित्त ।

भूप शिवदानसिंह रावरो सुजस वृन्द फैल रह्यो छिति पै छबीलो छीर-गात सो । गदाधर कहै कोटि कम्बु सो कलानिधि सो कुन्द सो करिन्द कलहंसन के तात सो ॥ हर सो हरा सो हीरहार सो हलायुध सो हिम सो हिमाचल सो हरी हरयात सो । पण्डुर पृथी मैं पुन्यपाथ सो पवित्र पूरो पुण्डरीक पत्र सो पटीर पारिजात सो ॥ १६ ॥

दोहा।

श्रीशिवदानमहीप-सुत माधवेस महाराज ।
करत सुराज सुठारियां सप्त अङ्ग सुख साज ॥१७॥

कवित्त।

चारौ ओर अटवी अटूट अवनी पै बनी तटिनी तड़ाग,धेनु सिंहन भगर है। गदाधर कहै चार आश्रम बरन चार सील सत्यबादी दानी भूपति सगर है॥ आपगा दुग्ग गज बाजि रथ प्यादे घने अम्बिका महेश प्रभु भक्ति मैं पग रहै। ऊमटनरेस माधवेस महाराजा जहां बैरिन कौं मारिया सुटारिया नगर है॥ १८॥

छप्पय।

उमापद्म-मुख मधुप हरित मण्डित तन अम्बर। रति बिलोक किय दया दलित कन्दर्प अडम्बर॥ जित्तिय इक शर त्रिपुर काल्ह काको दरभूषन। मुण्डमाल गजखाल हयन पावक शशि-पूषन॥ सनकादिसिद्धसेवित-चरन भक्त भूरि भावुक सबहँ। जय दैहु प्रमथपालक सदा माधवेस महिपाल कहँ॥ १९॥

आशीर्वचन—छप्पय ।

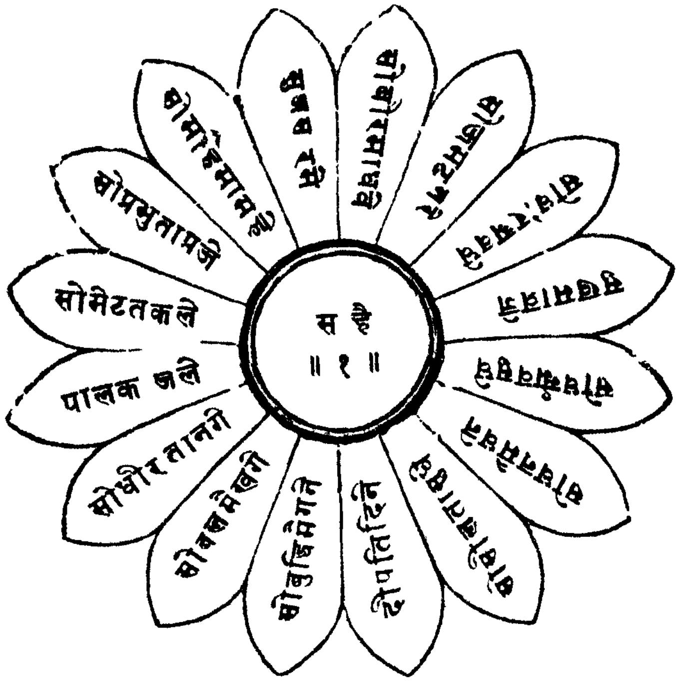
कहा विष्णु सौं कहै काम जम्बू नद भाषहि ।
चन्द्र वरुण चित औद सुरभि वारण अभिलाषहि॥
दिक ईशन कह कहै शब्द पशु कौ जल का कहि।
पङ्कज सौं का कहै प्रश्न दश चार सु छाकहि ॥
इन नाम आदि अक्षर कलित बाँचहु बुध परतक्ष कार। तिहि जोर देत आशिष सदाँ। सुकवि गदाधर पूजि हर ॥ २० ॥

श्रीपति	जलेश	सिंधुर	जीवन
मनोज	मानस	हरित	वनज
हाटक	धनेश	चिकुर	॥ १ ॥
राकेश	वसन्त	रश्मित	

सुजस रमेस है सो महिमा महेस है सो प्रभुता प्रजेस है सो मेटत कलेस है । पालक जलेस है सो धीरता नगेस है सो बल मे खगेस है सो बुद्धि में गनेस है ॥ दीपति दिनेस है सो सीतता सुधेस है सो धन में धनेस है सो धर्म

बसुधेस है । सुखमा ब्रजेस है सो धीर अवधेस है सो जमटनरेस है सो बीर माधवेस है ॥२१॥

कमलबन्ध—सर्वतोभद्र ।



कवित्त ।

शम्भु-पदपङ्कजपरागप्रेमपागी अनुरागी भक्ति भाव के प्रभाव सुख साजा है । गदाधर कहै धर्मनीति सौं प्रतीति परमारथ सौं प्रीति छिति छेम छवि छाजा है ॥ गुनिन को गाहक

है पाइक सिपाइ महा बाङ्कु रन धीर दानबीर जस काजा है। भूप शिवदान सिंह नंदकुल चंद राजे बखत बुलंद माधोसिंह महराजा है ॥२२॥

यश वर्णन – कवित्त।

भूप शिवदान सिंह नन्द माधोसिंह बीर रावरो सुजस फैलो सत्व गुन सत्ता सो। गदाधर कहै पुण्डरीक सो तड़ागन में बागन में मल्लिका प्रसून मधुमत्ता सो॥ गिरि पै गिरीस सो गिरीस सीस गङ्ग-धार क्षीरधि में क्षीर सुधासार रसवत्ता सो। चन्द्रक कों चौंर चारु चौंर कों चमूपति सो चाँदिनी कों चन्द्र सम चन्द्र कों चकत्ता सो॥

पुनर्यथा—कवित्त।

पाटल में पुण्डरीक पटना पटीर कसमीर में सुनीर सुधा सुखमा सुवेस को। गदाधर कहै जोधपुर में जुही सी जगै जैपुर में जन्हुजा अलूसी अलकेस को ॥ कोकन में कुन्द सो कपूर सो कनौज कामरूप में अनूप कामधेनु पय-पेस को।

सिस सौ महेस सौ दमेस देस देसन मैं फैलौ
जस जयटनरेस माधवेस कौ ॥ २४ ॥

दोहा।

गुनी आप गाहक गुनी कविता करत विसाल।
काव्यरसिक कवि कल्पतरु श्रीमाधव महिपाल॥

सोरठा।

श्रीमाधवमहिपाल, सुकवि गदाधर जान निज।
दीनौ हुकुम विसाल, छन्द रीति वर्नन करहु॥

दोहा।

श्री माधव महराज को हुकुम पाय उर धार।
पिङ्गलमत वर्नन करत निज मति के अनुसार॥
श्रीपद्माकरपद्मपद ध्याय सु प्रतिभा हेत।
बरनत छन्दोमञ्जरी जो है छन्द निकेत॥ २८॥
सम्वत् नभ आश्रम सुनिधि चन्द्र मास वैशाख।
प्रगटी छन्दोमञ्जरी अघती कर अभिलाष॥२९॥
मञ्जुल छन्दोमञ्जरी भरी मोद मकरन्द।
चञ्चरीकसम पाइ कर लेहिं स्वाद कविवृन्द॥३०॥

अथाष्टगण वर्णन—कवित्त ।

तीन गुरु जामैं सोई मगन बखानैं गन नगन सुतीन लघु जामैं सो प्रमान है। आदि गुरु जामैं सोई भगन् यगन जामैं आदि लघु सोई चार सुख के निधान है ॥ मध्य गुरु जामै सोई जगन जहाँन जानै रगन सु मध्य तामे लघुता विधान है। अन्त गुरु जामैं सोई सगन सराहैं ताहि तगन सु अन्त लघु अशुभ महान है ॥ ३१ ॥

ऽ ऽ ऽ	मगन
। । ।	नगन
ऽ । ।	भगन
। ऽ ऽ	यगन
। ऽ ।	जगन
ऽ । ऽ	रगन
। । ऽ	सगन
ऽ ऽ ।	तगन

अथ गण देवता शुभाशुभ फल—छप्पय ।

भूमि भव्य को हेतु बुद्धि अभिनव्य देत अहि।
मङ्गलीक निसिनाथ पाथ अति कुसल गाथ कहि॥
सोखत सुख बहु सूर अग्नि दारुन तन दाहत।
रुखत पवन पयान सून्यता नभ निरवाहत॥ या
विधि सु अष्ट गण शुभ अशुभ जो पिङ्गल फनपति कहत। तिहिं हेतु आदि नर हत्त के शुद्ध चार और न चहत ॥ ३२ ॥

दोहा।

म न भ य सुखदा चार ये ज र स त दुखदा लेखि।
तीन तीन अक्षर कलित वसु गन ये अवरेखि ॥

अथ गण मित्रदास उदासीन शत्रुभाव वर्णन।

दोहा।

मगन नगन कों मित्र गनि भगन यगन ये दास।
उदासीन ज त जानिये र स रिपु करै प्रकाश॥३४॥
कवित आदि में अङ्ग जो ताहि अशुभ उर आन।
तातें द्विगुन बनाय शुभ बासुकि करत बखान॥

अथ दग्धाक्षर वर्णन – छप्पय।

ह,झ,घ,न,ख,भ,ध,र, अष्ट ये सु दग्धाक्षर मानहु। छन्द आदि में धरत नाहिं कवि जे जन जानहु॥ हानि सु करत हकार झगर करतार झकारहु। घोर सु बनो घकार नष्टता करत नकारहु॥ खलता खकार तें जानिये भय भकार तें जग विदित। धन धूर धकारहि तें गनो रन रकार रचत अहित॥ ३६ ॥

दोहा।

मङ्गल सुरवाचक शबद गुरु होवै पुनि आदि।
दग्धाक्षर को दोष नहिं अरु गण दोषहु बादि।

अथ गुरु लघु विचार - दोहा।

संयोगी जाके परे बिन्दु सु दीरघ होय ।
सोई गुरु है और लघु यह बरनै कवि सोय ॥
दीरघहू लघु कर पढ़ैं लघुहू दीरघ जान ।
मुख सौं प्रगटै सुख सहित कोविद करत बखान॥

उदाहरण यथा—कवित्त।

बैनु को बजाय नव गोपिका बुलाय आछे गाई कै सुराग रच्यौ कौतुक प्रवीनो है। गदाधर कहै मोरपच्छ को मुकुट धारे पीतपट अङ्ग अङ्ग भूषित नवीनो है॥ मञ्जुल मृदङ्ग मुहचङ्ग औ उपङ्ग बाजै नाचैं रीझि छवि सौं छपाकर न छीनो है। दूर कै दरद काममद को मरद आली सरद जुन्हाई मैं कन्हाई रास कीनो है॥ ४० ॥

इति गण दग्धाक्षर, गुरु, लघु वर्णन।

अथ नवधा प्रत्यय वर्णन — छप्पय।

प्रथम जान प्रस्तार १ द्वितिय सूची २ परमानहु।
तृतिय बरनि पाताल ३ चतुर्थोद्दिष्ट ४ बखानहु॥
पञ्चम नष्ट ५ सुमेरु षष्टवैं ६ कवि जन लेखहु।
खण्डमेरु सप्तवै ७ पताका अष्टम ८ देखहु ॥

मर्कटी नवम ९ बरनत बिबुध मात्रा अरु बर्नन कहत। दस अष्ट सर्व १८ प्रत्यय प्रथित कठिन सु अति पिङ्गल कहत ॥ ४१ ॥

दोहा।

म, य, र, स, त, ज, भ, न, ग, ल, सहित दश अक्षर इन साहि। सर्व शास्त्र व्यापित लखौ विश्व विष्णु सों ज्योंहि ॥ ४२ ॥

अथ मात्रा गण वर्णन—दोहा।

सर्व अन्त मधि आदि गुरु चारहु लघु जुत जान। आर्यादिक में पञ्च गण पिङ्गल करत बखान ॥

ऽ ऽ ऽ	मगन
। ऽ ऽ	यगन
ऽ । ऽ	रगन
। । ऽ	सगन
ऽ ऽ ।	तगन
। ऽ ।	जगन
ऽ । ।	भगन
। । ।	नगन

अथ संज्ञा वर्णन—दोहा।

छन्द १ बाहु २ गुन ३ वेद ४ शर ५ शास्त्र ६ बार ७ वसु ८ अङ्क ९। दिशा १० शम्भु ११ रवि १२ आदि दै संज्ञा विदित निशङ्क ॥ ४४ ॥

ऽ ऽ ऽ	१
। । ऽ	२
। ऽ ।	३
ऽ । ।	४
। । । ।	५

सब छन्दन मैं कहत हैं चतुरथांश को पाद।
विच्छेदित संज्ञित सुयति विश्रामित अनुवाद ॥
युक्त सु कहत समथान को अयुक्त विषम को नाम।
पिङ्गल मैं संज्ञा कही इनही सों सिधि काम ॥

अथ छन्द लक्षण—दोहा।

अनुप्रास है अन्त्य पद वसु गण गुरु लघु साज।
छन्द सु होत अनन्त विधि भाषत पिङ्गलराज ॥
प्रथम छन्द द्वै विधि कहै गद्य एक १ विय २ पद्य।
गद्य होत बिन छन्द को पद्य सछँद अनवद्य ॥

अथ छन्द वर्णन—छप्पय।

सम १ सुअर्द्धसम २ विषम ३ तीन विधि छन्द बखानहु।

इक सम चारहु चरन छन्द सम सो परिमानहु ॥
प्रथम चरन सततीय द्वितिय चतुरथ सम देखहु।
छन्द अर्द्धसम विदित नाम ताको अवरेखहु ॥
चारहूँ चरन जिहि छन्द के भिन्न २ लच्छन कलित।
सोइ विषम छन्द कवि वृन्द कहि रचिय व्यास भारत ललित ॥ ४६ ॥

दोहा।

इक अच्छर सों लेइ के छब्बिस लों परमान ।
छन्द होत बहु भाँति के को कर सकै बखान ॥
छब्बिस तें जो है अधिक दण्डक ताको नाम ।
चण्डवृष्टि आदिक विदित रचत सुकवि गुनधाम॥
औरहु बाको छन्द जे गाथा नाम प्रमान ।
तीन चरन षट चरन के पिङ्गल करत बखान ॥

अथ षड्विंशत्यक्षर छन्द संज्ञा वर्णन—छन्द ललित पद।

उक्ता १ अत्युक्ता २ सुमध्यमा ३ गनो प्रतिष्ठा ४ जो है । पुनि सु प्रतिष्ठा ५ गायत्री ६ अरु उष्णिक ७ अधिको सोहै ॥ गनो अनुष्टुप ८ बृहती ९ पंक्ती १० त्रिष्टुप ११ जगती जानो १२ । लति जगती १३ शक्करी १४ औरहु अति शक्करी १५ बखानो ॥ ५३ ॥

अष्टी १६ अत्यष्टी १७ पुनि धृति १८ गनि अतिधृति १९ कृति को २० लेखौ। प्रकृति २१ आकृती २२ विकृति २३ संसकृति २४ अति-कृति २५ उत्कृति २६ देखौ॥ छब्बिस वरन छन्द की संज्ञा या विधि करत बखानी। लच्छन लच्छ सर्व छन्दन को मात्राछन्द प्रमानौ॥ ५४॥

दोहा।

है विधि मात्राछन्द की है प्रस्तार प्रमान।
इक है मात्रा विषम को सम को दूजो जान॥

पद्धरी।

इक तीन पाँच अरु सात लेखि। मात्रा सु विषम प्रस्तार देखि॥ दुइ चार सु षट अरु अष्ट मान। सममात्र सु यह प्रस्तार जान॥ ५६॥

अथ मात्रा प्रस्तार लक्षण—पद्धरी।

गुरु प्रथम तरें लघु धरौ बेस। ऊरध सु पंक्ति सम करि बिशेस॥ उबरै सु गुरू लघु धरौ आदि। प्रस्तार सुमात्रा यह अनादि॥ ५७॥ जबलौं न सर्वलघु अङ्क होय। प्रस्तार करौ तबलौं जु सोय॥ यह ग्रन्थ रीति पिङ्गल बिचार। कवि करै सु इच्छित ता प्रचार॥ ५८॥

अथ विषम सम मात्रा प्रस्तार ।

१	। १	विषम	सम
२	S २ ।।	सम	S S S । । S S
३	। S ३ S । । । ।	विषम	। S । S S । । S । । । । S
४	S S ५ । । S । S । S । । । । । ।	सम	। S S । S । S । । । । S । S S । । । । S । ।
५	। S S S । S । । । S S S । । । S । । S । । S । । । । । । । ।	विषम	। S । । । S । । । । । । । । । । ६
	८		१३

मात्रा छन्दन की संख्या ।

मात्रा	संख्या
१	१
२	२
३	३
४	५
५	८
६	१३
७	२१
८	३४
९	५५
१०	८९

छन्द हरि गोतिका ।

ग्यारह सु मात्रा को रचौ जो छन्द ता संख्या उरै । जानौ चहै तौ दसहि को अरु नवम को अङ्कहि जुरै ॥ जो अङ्क होवै सिद्ध सो इक शत चवालिस १४४ संख्य है । या भाँति मात्राछन्द की संख्या सु जान असंख्य है ॥ ६० ॥

दोहा ।

याही सूची अङ्क कौ कहि उद्दिष्ट सु और ।
मात्रा छन्दन में लखौ पिंगल कहि सब ठौर ॥

स्वरूप यथा ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	१४४

अथ सूची वर्णन—वचनिका ।

मात्रिक छन्दों की संख्या की शुद्धता, और उनके भेदों में आदि अन्त लघु और आदि अन्त गुरु की संख्या सूची के द्वारा जानी जाती है ॥

अथ सूची की रीति।

मात्रिक छन्दों की संख्या के अङ्क सूची कहाते हैं। और जितनी मात्रा के छन्द की सूची देखनी होय उतनीही छन्द की संख्या एक आदि के क्रम से लिखे॥ अब जो अन्त्य का अङ्क है वही मात्रिक छन्द अर्थात् कल्पित छन्द की शुद्ध संख्या है। और उस संख्या के बाँई ओर के अर्थात् दूसरे अङ्क की समान संख्या के तुल्य आदि में और अन्त में लघु मात्रा है। और उससे बाँई ओर के अर्थात् तीसरे अङ्क के समान आदि और अन्त में गुरु मात्रा है॥ और इसी तीसरे अङ्क के समान आद्यन्त लघु है। और इस सों बाँई ओर के दूसरे अर्थात् अन्त अङ्क से पाँचवें अङ्क के समान आद्यन्त गुरु है॥ और विद्यार्थियों के ज्ञान होने के लिये आगे आठ मात्रा तक की सूची लिखते हैं। एक मात्रा की सूची नहीं होती है॥

अथ सूची स्वरूप यथा ।

	आदिलघु । अन्तलघु ।	छन्द संख्या
२ मात्रा की सूची ।	१	२

	आदिगुरु । अन्तगुरु ।		छन्दसंख्या
३ मात्रा की सूची ।	१	२	३
	आद्यन्तलघु		

	आदिगुरु । अन्तगुरु ।	आदिलघु अन्तलघु	छन्दसंख्या ।
४ मात्रा की सूची ।	२	३	५
	आद्यन्तलघु		

			आदिगुरु। अन्तगुरु।	आदिलघु। अन्तलघु।	छन्द संख्या
५ मात्रा की सूची	१	२	३	५	८
	आद्यन्तगुरु		आद्यन्तलघु		

				आदिगुरु। अंतगुरु।	आदिलघु। अंतलघु।	छंद संख्या
६ मात्रा की सूची।	१	२	३	५	८	१३
		आद्यन्तगुरु		आद्यन्तलघु		

					आदिगुरु। अंतगुरु।	आदिलघु। अंतलघु।	छं० सं०
७ मात्रा की सूची।	१	२	३	५	८	१३	२१
			आद्यंतगुरु		आद्यंतलघु।		

						आदिगुरु। अंतगुरु।	आदिलघु। अंतलघु।	छं० सं०
८ मात्रा की सूची।	१	२	३	५	८	१३	२१	३४
				आद्यंतगुरु		आद्यंतलघु।		

इस सूची के करने से प्रकाशित हुआ कि एक मात्रा का भेद नहीं । और दो मात्रा के दोही छन्द हो सकते हैं॥ उनमें से एक छन्द ऐसा होगा कि जिसके आदि में लघु और अन्त में भी लघु है । और तीन मात्रा के तीनही छन्द हो सकते हैं॥ उन में से दो छन्द ऐसे आन पड़ेंगे कि जिनमें आदि लघु और अन्त में भी लघु है। और एक छन्द ऐसा आन पड़ेगा कि जिस के आदि में गुरु और अन्त में भी गुरु है। और एक छन्द ऐसा आन पड़ेगा कि जिस के आद्यन्त में लघु है। और चार मात्रा के पाँचही छन्द होते हैं॥ तिन में से तीन छन्द ऐसे होंगे कि जिन के आदि में लघु और अन्त में भी लघु है। और दो छन्द ऐसे हैं कि जिन के आदि में गुरु और अन्त में भी गुरु है। और सम्पूर्ण छन्दों में दो छन्द ऐसे होंगे, जिनके आद्यन्त में लघु है॥ इसी प्रकार आठ मात्रा तक की सूची जान लो।

और इस की शुद्धता के हेतु पूर्व प्रस्तार देखते चले आओ ॥

इति मात्रासूची ।

अथ पाताल का वर्णन ॥

कि एक मात्रिक छन्द के भेद अर्थात् संख्या की गिनती का ज्ञान, लघु गुरु और सम्पूर्ण कला और सम्पूर्ण वर्ण और पिण्ड जानने को पाताल कहते हैं ॥

पाताल बनाने की क्रिया ।

जितनी मात्रा का पाताल बनाना होवे उतनी ही ऊर्द्धरेषा खेंचे । फिर एक रेखा पाताल की शोभा के लिये और खेंचे ॥ और चार रेखा तिरछी खेंचे । जिस से कि कोष्ठ बन जावें ॥ फिर पहिले कोष्ठ में एक, दूसरे में दो, तीसरे में तीन, आदि अङ्क लिखे ।

फिर इस के नीचे के कोष्ठों में सूची के अङ्क लिखे। फिर इसके नीचे के कोष्ठों में इस प्रकार लिखे कि पहिले में एक, और दूसरे में दो, और तीसरे में शेष अङ्क और दूसरे कोष्ठ का अङ्क जोड़कर लिखे और चौथे में शेष के अङ्क और तीसरे कोष्ठ का अङ्क जोड़कर लिखे। निदान इसी प्रकार इच्छानुसार लिखता जावे॥ और विद्यार्थियों के जानने के लिये ८ मात्रा का पाताल बनाया जाता है॥

अथ पाताल चक्र।

१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	५	८	१३	२१	३४
१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०

इस पाताल चक्र में पहिला कोष्ठ मात्राओं की संख्या का है, और दूसरा छन्दों की संख्या का है॥ तीसरा लघु और गुरु संख्याओं के

बताने का है । और यही सम्पूर्ण कला और सम्पूर्ण वर्ण और पिण्ड बताने का है ॥ जैसे छ मात्रा की छन्द की उक्त मात्रा देखनी है तो छ अङ्क के नीचे के कोष्ठ में १३ का अङ्क है तो छ मात्राओं के छन्दों की सम्पूर्ण संख्या १३ है, और १३ के नीचे के कोष्ठ में ३८ का अङ्क है, तो छ मात्रा के सम्पूर्ण छन्दों में ३८ लघु मात्रा हैं। और ३८ से पूर्व का अर्थात् बाईं ओर का २० का अङ्क है, तो छ मात्रा के सम्पूर्ण छन्दों में २० गुरु मात्रा हैं॥ और २० के दूने ४० हुये तो ४० और ३८ का जोड़ ७८ है, इसलिये छ मात्रा के छन्दों में सम्पूर्ण कला ७८ है। और सर्व वर्ण लघु गुरु मात्राओं के योग समान जैसे ३८ लघु मात्रा और २० दीर्घ मात्रा हैं, इनका योग ५८ है इसलिये छ मात्रा के सम्पूर्ण छन्दों में ५८ वर्ण हैं । और सर्व कलाओं का आधा पिण्ड होता है। जैसे सर्व कला ७८ है, तो इस का आधा ३९ पिण्ड कहावेगा ॥ इसी प्रकार

उक्त पाताल में और भी मात्राओं का निश्चय कर लेवो ॥

इति पातालचक्रवर्णन ।

अथ उद्दिष्ट वर्णन ।

कितनोही मात्रा के प्रस्तार का भेद, प्रश्नकर्त्ता लिख कर पूछे कि यह कौन सा भेद, अमुक मात्रा का है, तो इसके जानने को उद्दिष्ट कहते हैं ॥

अथ उद्दिष्ट की रीति ।

दिये हुये प्रस्तार के भेद के ऊपर मात्रिक सूची के अङ्क इस प्रकार लिखो कि लघु के केवल शीर्ष पर और गुरु के शीर्ष और पग पर दोनों स्थानों में क्रमपूर्वक लिखे । फिर अन्त के अङ्क में से बाईं ओर के गुरु के शीर्षाङ्कों का जोड़ घटा दो॥ जो शेष रहै वही भेद होगा अर्थात् उसी संख्या का छन्द होगा। जैसे किसी प्रश्नकर्त्ता ने छ मात्रा के छन्दों में ऽ । ऽ । यह

भेद अर्थात् छन्द की संख्या पूछी कि कौन सी है तो उक्त रीति से सूची अङ्क इस प्रकार लिखे।

१	२	५	१३
ऽ	।	ऽ	।
२		८	

फिर अन्त अङ्क १३ में बाईं ओर के गुरु शीर्ष के अङ्कों का योग अर्थात् १ और ५ का योग (६) को घटाया तो ७ शेष रहे। इसलिये सातवाँ भेद अर्थात् सातवाँ छन्द है। इसकी शुद्धता प्रस्तार से देख लो॥ और विद्यार्थियों के ज्ञान होने के हेतु एक मात्रा से लेकर ५ मात्रा तक का उद्दिष्ट लिखा जाता है यथा—

१ मात्रा का उद्दिष्ट।	२ मात्रा का उद्दिष्ट।	३ मात्रा का उद्दिष्ट।
१ ।	१ ऽ २	१ २ । ऽ ३
	१ २ । ।	१ ३ ऽ । २
		१ २ ३ । । ।

४ मा० का उ०		५ मात्रा का उद्दिष्ट ।		
१ ३ ऽ ऽ २ ५	१ भेद	१ २ ५ । ऽ ऽ ३ ८	१ भेद	स्मरण रहे कि अन्त अङ्क केवल शीर्ष पर ही नहीं पग तल पर भी आन पड़ता है। जैसे पाँच मात्रा के छन्द के भेद में पहले औ दूसरे तीसरे भेद में आया है तो इसी अङ्क में से गुरु शीर्ष अङ्को का योग घटावे।
१ २ ३ । । ऽ ५	२ भेद	१ ३ ५ ऽ । ऽ २ ८	२ भेद	
१ २ ५ । ऽ । ३	३ भेद	१ २ ३ ५ । । । ऽ ८	३ भेद	
१ ३ ५ ऽ । । २	४ भेद	१ ३ ८ ऽ ऽ । २ ५	४ भेद	
१२३५ ।।।।	५ भेद	१ २ ३ ८ । । ऽ । ५	५ भेद	
		१ २ ५ ८ । ऽ । । ३	६ भेद	
		१ ३ ५ ८ ऽ । । । २	७ भेद	
		१ २ ३ ५ ८ । । । । ।	८ भेद	

नष्ट का वर्णन ।

कितनीही मात्रा के प्रस्तार का प्रश्नकर्त्ता कहै कि अमुक संख्यक भेद अर्थात् छन्द कौन से रूप का होवैगा इस के जानने को नष्ट कहते हैं ।

अथ नष्ट की रीति वर्णन ।

जितनी मात्रा के प्रस्तार में जौन से भेद का रूप पूछै, तो उतनीही लघु मात्रा लिखकर उनके ऊपर सूची के अङ्क लिखै । फिर अन्त अङ्क में से जौन सा भेद पूछा था उस भेद की संख्या को घटा देओ॥ जो शेष बचे उनको पूर्व अङ्कों में कि जिसमें घटने का सम्भव हो घटा दो । जौन २ सा अङ्क घट जावे उसके तले की लघुमात्रा गुरु कर और आगे की एक लघुमात्रा मिटा दो । जो रूप शेष रहैगा वही रूप प्रश्न-कर्त्ता की सख्या का होगा । जैसे प्रश्नकर्त्ता ने पूछा कि छ मात्रा के छन्दों में सातवाँ भेद अर्थात् छन्द का रूप कैसा होगा, तो उस रीति

से छ मात्रा इस प्रकार लिखे । और सूची के अङ्क भी लिखे ।

१	२	३	५	८	१३
।	।	।	।	।	।
ऽ	।	।	ऽ	।	।
ऽ		।	ऽ		।

अब अन्त अङ्क १३ है तो १३ में से प्रश्नकर्त्ता के ७ सातवें भेद के अङ्क को घटाया तो ६ शेष रहे । और यह ६ का अङ्क ५ और एक से घट गया तो इन्हीं ५ और १ के नीचे लघु को जगह दीर्घ अर्थात् गुरु लिख आगे का एक एक लघु मिटा दिया तो ऽ । ऽ । यह रूप शेष रहा । इसलिये छ मात्रा के छन्दों में यही सातवाँ भेद होगा । आगे विद्यार्थियों के ज्ञान के

हेतु एक मात्रा के नष्ट से लेकर चार मात्रा के नष्ट तक का उदाहरण लिखा जाता है ॥ जो मन को ध्यान देकर समझेंगे तो शीघ्रही समझ में आ जावैगा। जानो कि एक मात्रा का एकही छन्द होता है इसलिये नष्ट के उदाहरण को आवश्यकता नहीं ॥

२ मात्रा का नष्ट।

भेदों की संख्या	सर्वलघु	शेषाङ्क	सिद्धरूप
१	१ २	१ १	ऽ
२	। ।	। ।	। ।
	१ २	१ ०	
	। ।	। ।	

३ मात्रा का नष्ट।

भेदों की संख्या	सर्वलघु	शेषाङ्क	सिद्धरूप
१	१ २ ३ । । ।	१ २ २ । । ।	। ऽ
२	१ २ ३ । । ।	१ २ १ । । ।	ऽ ।
३	१ २ ३ । । ।	१ २ ० । । ।	। । ।

४ मात्रा का नष्ट।

भेदोंकीसंख्या	सर्वलघु	शेषाङ्क	सिद्धरूप
१	१ २ ३ ५ । । । ।	१ २ ३ ४ । । । ।	ऽ ऽ
२	१ २ ३ ५ । । । ।	१ २ ३ ३ । । । ।	। । ऽ
३	१ २ ३ ५ । । । ।	१ २ ३ २ । । । ।	। ऽ
४	१ २ ३ ५ । । । ।	१ २ ३ १ । । । ।	ऽ । ।
५	१ २ ३ ५ । । । ।	१ २ ३ ० । । । ।	। । । ।

इसी प्रकार जितनी मात्रा का नष्ट निकालना हो निकालते चले जाओ।

अथ मेरु वर्णन॥

जितनी मात्रा के सम्पूर्ण प्रस्तार के भेदों अर्थात् छन्दों के रूपों में जितने २ गुरु और जितने २ लघु के जितने रूप होते हैं उनकी संख्या बताने यन्त्र को मेरु कहते हैं।

मेरु बनाने की रीति।

पहिले एक कोष्ठ लिख के फिर नाभि की

ओर अर्थात् नीचे दुहरे २ तिहरे २ चौहरे २ आदि अभीष्ट मात्रा तक के कोष्ठ खेंचै। फिर इन कोष्ठों के भीतर इस प्रकार अङ्क लिखे कि पहिले कोष्ठों में १ का अङ्क लिखे। फिर दाहिनी ओर के कोष्ठों में जो अन्त में हैं एक ही एक लिखे। फिर बांई ओर के कोष्ठों में जो आदि में है उनमें एक, दो, फिर एक, तीन, फिर एक चार, आदि लिखे। और बीच के कोष्ठों के भरने की यह रीति है कि उनके शीर्षाङ्क को वक्र गति से जोड़ कर लिख दे, जैसे इस मेरु में (जो विद्यार्थियों के ज्ञान के निमित्त दश मात्रा तक का लिखा है) प्रकाशित होगा।

इस मेरु से प्रकाशित हुआ कि दश मात्रा के छन्दों में एक छन्द सर्वगुरु है। और १५ छन्द ऐसे होंगे जिन में चार गुरु दो लघु हैं और ३५ छन्द ऐसे होंगे जिनमें तीन गुरु और चार लघु हैं और २८ छन्द ऐसे होंगे जिनमें २ दो गुरु और छ लघु हैं। और ९ नौ छन्द ऐसे

होंगे जिनमें एक गुरु और आठ लघु हैं औ एक ऐसा होगा जिसमें सर्वलघु हैं इसी प्रकार सब मात्रों के मेरु में एक २ गुरु घटाता जाय और ह्रस्व अर्थात् लघु के रूप जोड़ता जाय ।

मात्रा मेरु का स्वरूप ।

मात्राओंकी संख्या							
एकमात्राकारूप	१					१	सर्वसंख्या
दोमात्राकारूप	१	१				२	
तीनमात्राकारूप	२	१				३	
चारमात्राकारूप	१	३	१			५	
पांचमात्राकारूप	३	४	१			८	
छमात्राकारूप	१	६	५	१		१३	
सातमात्राकारूप	४	१०	१६	१		२१	
८मात्राकारूप	१	१०	१५	७	१	३४	
९मात्राकारूप	५	२०	२१	८	१	५५	
दश मात्राकारूप	१	१५	३५	२८	९	१	८९

SSSSS,SSSSII,SSSIIII,SSIII III SIIIIIII,IIIIIIII,

अथ एकावली मेरु वर्णन।

उक्त मेरु में तो गुरु उलटे कहने पड़ते हैं परन्तु एकावली मेरु में सीधे ही गुरु कहने पड़ते हैं।

अथ एकावली मेरु बनाने की रीति।

पहिले एक कोष्ठ लिख कर फिर दुहरे दो तिहरे दो, चौहरे दो, कोष्ठ दाहिनी ओर को बनावे। फिर कोष्ठों को इस प्रकार भरो कि बाँई ओर के कोष्ठों में एकही एक लिखो, फिर दूसरे कोष्ठों में एक, दो, तीन, आदि लिखो॥ फिर अन्त्य के कोष्ठों में जो दाहिनी ओर को हैं उन में एक, तीन, एक, चार, आदि लिखो। और शेष कोष्ठों के शीर्षाङ्क के अङ्कों को वक्र गति से जोड़कर लिख दो जैसे नौ मात्रा का एकावली मेरु लिखा जाता है।

एकावली मेरु ।

१	१				
१	१	२			
१	२	३			
१	३	१	५		
१	४	३	८		
१	५	६	१	१३	
१	६	१०	४	२१	
१	७	१५	१०	१	३४
१	८	२१	२०	५	५५

||||||||| S||||||| SS||||| SSS||| SSSS |

अब इस एकावली मेरु से प्रकाशित हुआ कि नौ मात्रा के छन्दों में सर्वलघु का एक छन्द है। और आठ छन्द ऐसे हैं जिन में एक गुरु और सात लघु हैं ॥ और २१ छन्द ऐसे हैं जिनमें २

दो गुरु पाँच लघु हैं । और २० छन्द ऐसे हैं जिनमें ३ गुरु और तीन ३ लघु हैं॥ और पाँच छन्द ऐसे हैं जिनमें ४ गुरु और एक १ लघु हैं। इसी प्रकार सब को दशा जानो ।

अथ खण्ड मेरु का वर्णन ।

बिना मेरु के बनाये जिस से मेरु का काम निकले उसे खण्ड मेरु कहते हैं ।

खण्डमेरु बनाने की रीति ।

जितनी मात्रा का खण्डमेरु बनाना होय उनसे एक अधिक कोष्ठ बनावे, और उन कोष्ठों में एक २ का अङ्क लिखे, फिर उसके नीचे दो कोष्ठ कम बना कर उन में पहिले में एक, फिर वक्रगति की रीति से अङ्क जोड़ के भरे । फिर दो अङ्क के कोष्ठ कम कर उन में पहिले एक, फिर वक्रगति की रीति से अङ्क भरे । निदान इसी प्रकार जितना अभीष्ट होय लिखता जाय। फिर सब कोष्ठों के अङ्क का अपना उत्तर समझो । जैसे दश मात्रा का खण्डमेरु नीचे लिखा जाता है ।

दोहा ।

खण्डमेरु सों होत है मेरु बराबर काम ।
तासों पिङ्गल कहत है लघुही में सिधि धाम ॥

खण्डमेरु ।

१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	२	३	४	५	६	७	८	९		
१	३	६	१०	१५	२१	२८				
१	४	१०	२०	३५						
१	५	१५								
१										

सब कोष्ठों का अन्त्य अङ्क १, १५, ३५, २८, ९, १, इस खण्डमेरु से प्रकाशित हुआ कि दश मात्राओं के छन्दों में एक छन्द सर्वगुरु का है। और १५ छन्द ऐसे हैं जिनमें ४ गुरु अरु २ लघु

हैं और ३५ छन्द ऐसे हैं जिनमें ३ गुरु और चार लघु हैं और २८ छन्द ऐसे हैं जिनमें २ गुरु और ६ लघु हैं और ८ छन्द ऐसे हैं जिनमें एक गुरु औ ८ लघु हैं। और एक छन्द ऐसा है जिस में सर्वलघु हैं इसी प्रकार इच्छित मात्रा का खण्डमेरु बना लो और मेरु का काम निकालो।

अथ पताका वर्णन ।

गुरु और लघु के भेद जितने २ मेरु के द्वारा प्रकाशित होवें। उनके स्थान जानने को पताका कहते हैं।

अथ पताका के बनाने की रीति ।

प्रथम एक दण्डाकार लिखकर उसमें कल्पित मात्रा की संख्या के समान कोष्ठ बनावे। फिर अन्त अर्थात् नीचे से सूची के अङ्क लिखै। फिर ऊपर के तीसरे कोष्ठ को दाहिने ओर को बढ़ा दो। फिर इस बढ़े हुये तीसरे कोष्ठ को दाहिनी ओर को बढ़ाओ। इसी प्रकार तीसरे २ कोष्ठ को बढ़ा दो। फिर न बढ़े हुये में लिखने का

प्रारम्भ इस प्रकार करो। प्रथम के बढ़े हुये में ऊपर के अङ्क में से नीचे का अङ्क एक २ घटा कर लिखो। फिर इस बढ़े हुये अङ्कों में से दो २ तीन २ चार २ आदि अङ्क नीचे के घटा कर दूसरे बढ़े हुये में लिखो। फिर तीसरे आदि बढ़े हुये में इसी प्रकार लिखते जाओ। परन्तु जो घटा हुआ अङ्क किसी बढ़े हुये दण्ड में दिखाई दे तो उसको न लिखो। जानना चाहिये पहिला बढ़ा हुआ दण्ड एक गुरु का, दूसरा बढ़ा हुआ दो गुरु का, और तीसरा बढ़ा हुआ तीन गुरु आदि का जानो। जैसे विद्यार्थियों के जानने के हेतु दो मात्रा की पताका से लेकर आठ मात्रा की पताका तक लिखी है, उसमें पाँच मात्रा की पताका से यह जाना गया कि पाँच मात्रा के छन्दों में तीसरा और पाँचवाँ और छठा और सातवाँ छन्द ऐसा है कि जिस में एक गुरु अरु तीन लघु हैं। और पहिला दूसरा चौथा छन्द ऐसा है कि जिसमें दो गुरु

और एक लघु हैं । इसी प्रकार और पताका जो नीचे और आगे पृष्ठ पर लिखी हैं ध्यान में कर लो जैसे—

दो मात्रा की पताका का वर्णन ।

१	२	सर्वलघु का स्थान ।
१	१	गुरु का स्थान ।
	२	

तीन मात्रा की पताका ।

१	३		सर्वलघु ।
	२		
२	१	२	१ गुरु
	३		

चार मात्रा की पताका।

१	५	सर्वलघु।		
	३			
३	२	३	४	एक गुरु
१	१	२ गुरु का		
	५			

पाँच मात्रा की पताका।

१	८	सर्वलघु			
	५				
४	३	५	६	७	१ गुरु
	२				
३	१	२	४	२ गुरु	
	८				

छ मात्रा की पताका।

१	१३		६ सर्वलघु का स्थान।
	८		
५	५	८ १० | ११ | १२	१ गुरु का स्थान।
६	२	३ | ४ | ६ | ७ | ९	२ गुरु का स्थान
१	१		३ गुरु
	१३		

सात मात्रा की पताका।

१	२१		सर्वलघु का स्थान।
	१३		
६	८	१३ | १६ | १८ | १९ | २०	
	५		
१०	३	५ | ६ | ७ | १० | ११ | १२ | १४ १५ | १७	२ गुरु का स्थान।
	२		
४	१	२ | ४ | ९	३ गुरु का स्थान।
	२१		

आठ मात्रा की पताका।

३४	सर्वलघु का स्थान।													
२१														
१३	२१	२६	२९	३१	३२	३३	१ गुरु का स्थान।							
८														
५	८	१०	११	१२	१६	१८	[illegible]	२०	२३	२४	२५	२७	२८	३० २ गुरुकास्थान
३														
२	३	४	६	७	९	१४	१५	१७	२०	३ गुरु का स्थान।				
१	४ गुरु का स्थान।													

१ ३४

मर्कटी का वर्णन ।

जितनी मात्रा के प्रस्तार में जितने लघु अरु गुरु और सर्वकला और सर्व वर्णों की संख्या जानने को मर्कटी कहते हैं ।

अथ मर्कटी बनाने की सारणी ।

खड़ी पंक्ति सात कोठा की बनावे और लम्बी अभीष्ट मात्रों तक की बनावे, तो इस प्रकार कोष्ठ से बन जायँगे। और इन कोष्ठों के भरने की यह रीति है कि पहले लम्बे कोष्ठ में एक दो आदि अङ्क लिखे। और दूसरे कोष्ठों में पहिले १ फिर २ आगे लिखे। और आगे के कोष्ठों के भरने की यह रीति करे कि उस कोष्ठ के पीछे के दो कोष्ठों के अङ्कों को वक्र गति से जोड़ कर लिख दे । और तीसरे कोष्ठों में दूसरे कोष्ठ का गुणन फल लिखे । और चौथ कोष्ठ में पहिले सून्य फिर सून्य के आगे एक, और एक के आगे दो लिखे। और आगे के कोष्ठ भरने की यह रीति करे कि उस कोष्ठ के पीछे के अङ्क का दूना करके उसी के शीर्ष अङ्क में घटा कर लिखे इसी प्रकार सब आगे के बनाते जाओ और पँचवें कोष्ठ में चौथे कोष्ठ के अङ्क शून्य त्याग करके लिखो और

छठे कोष्ठ में चौथे और पाँचवें कोष्ठ के अङ्कों का योग लिखो और सातवें में तीसरे कोष्ठ के अङ्कों का आधा लिखो परन्तु पहिले में शून्यही लिखो जैसे एक मात्रा से लेकर दस मात्रा तक की मर्कटी विद्यार्थियों के ज्ञान के हेतु लिखी जाती है।

मर्कटी की सारिणी।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कला
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	संख्या
१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५	८९०	सर्वकला।
०	१	२	५	१०	२	३८	७१	१३	२३५	गुरु
१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०	लघु
१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५	६५५	वर्ण
०	२	४॥	१	२०	३९	७३॥	१३६	२४७।	४४५	पिण्ड

इस मर्कटी से प्रकाशित हुआ कि दस मात्रा के छन्दों की सम्पूर्ण संख्या ८९ है और सर्वकला ८९० है उनमें २३५ गुरु मात्रा हैं और ४२० लघु हैं और ६५५ वर्ण हैं और ४४५ पिण्ड का मान है।

इति मात्रा प्रस्तार दिन व प्रत्यय वर्णनम्।

मात्रिक छन्द की सम्पूर्ण मात्राओं में से छन्द के सम्पूर्ण वर्ण घटावे। शेष बचे उन्हें गुरु मात्रा जाने। और दीर्घ मात्रा की संख्या को दूना कर के छन्द की सम्पूर्ण मात्राओं में से घटावे शेष लघु मात्रा जाने। जैसे ४८ मात्रा का दोहा छन्द उक्त रीति की शुद्धता जानने के लिये लिखा जाता है। "विश्वम्भर नामे नहीं मही विश्व में नाहि। इन दुह मे झूठी कवन यह संसय जिय माहि॥" इस दोहे में ३४ वर्ण हैं तो ३४ को सम्पूर्ण छन्द का ४८ मात्राओं में से घटाया तो शेष १४ बचे इसलिये १४ मात्रा गुरु होंगी और १४ के दूने २८ हुये, इन २८ को, ४८ सम्पूर्ण छन्द की मात्रा हैं उनमें घटाया तो बचे बीस २० इतनीही लघु मात्रा होंगी इसी प्रकार सब मात्रिक छन्दों में गुरु लघु की संख्या जानो।

इति मात्रा प्रकर्ण वर्णन।

अथ मात्रा छन्द वर्णन—दोहा।

मात्रा प्रस्तारादि ये प्रत्यय बरने बीस ।
मात्रा छन्दन को सु अब बरनत ध्याय गनेस॥१॥

इक द तीन रु चार पुनि पाँच मात्रिका आदि।
छन्दन लखौ प्रसिद्ध जगगण मैं मिलत अनादि॥
सुमत आदि जे छन्द हैं मात्रा कै बहु भाय ।
तिनही को वर्णन करत लच्छन लच्छ बनाय ३॥

सुगति छन्द लच्छन—दोहा।

कला तुरङ्गम् (७) चरन प्रति श्रुति (४) गुन (३) पै यति जान। सुगति छन्द सो जानिये पिङ्गल करत बखान॥ ४॥

सुगति छन्द यथा।

शिव शिव कहौ। जो सुख चहौ॥
जो सुमति है। तौ सुगति है॥५॥

मधुभार लच्छन—दोहा।

बसु(८)मात्रा है चरन प्रति यति इच्छित मन मान।
छन्द जान मधुभार सो मधुर मधूक समान॥६॥

उदाहरण यथा।

हरि हर कृपाल। महिमा बिसाल ।
धरि मनहि ध्यान। तब मिलहि ज्ञान॥ ७॥

कवि छन्द लच्छन—दोहा।

द्विरद (४) कला चहुँ चरन मैं लघुगुरु लघु

अवसान। यति विधिमुख (४) सुखदा जहँा छन्द सु छबि परमान ॥ ८ ॥

उदाहरण यथा।

हम हैं सुदीन। तुम हौ प्रवीन।
जग मैं महेश। हरिये कलेश ॥ ९ ॥

बरवै लच्छन—दोहा।

प्रथम तृतिय पद मै कला रवि (१२) यति अन्त बखान। द्वितिय सु चौथे मुनि (७) कला बरवै छन्द प्रमान ॥ १० ॥

उदाहरण यथा।

बाम अङ्ग शिव शोभित, शिवा उदार ।
शरद सु वारिद मैं जनु, तड़ित बिहार ॥ ११ ॥

मोहनो छन्द लच्छन—दोहा।

द्विपद मोहनी छन्द गनि यति रवि (१२) मुनि (७) परिमान। पिङ्गल फनिपति कहत है जानत सुकवि सुजान ॥ १२ ॥

उदाहरण यथा।

शम्भु भक्तजनत्राता। भव दुख हरै ॥
मन वञ्छित फलदाता। मुनि हिय धरै ॥१३॥

अथ दीपक छन्द लक्षन—दोहा।

कलित कला अवतार की (१०) प्रतिपद लघु है अन्त। दीपक छन्द बखानिये बिरति अन्त बिलसन्त ॥ १४ ॥

उदाहरण यथा।

श्रीप्रभु पद भजि मन। सन्तन कहँ यह धन ॥
घटत न कबहुँ तनक। याहि लहि हुय धनक ॥

अथ आभीर छन्द लक्षन—दोहा।

चरन चरन प्रतिशिव (११) कला अन्त होय लघु वर्न। विरति स्वरन (७) पै छन्द सो आभीरहि कवि वर्न ॥ १६ ॥

उदाहरण यथा।

श्रीपति दयानिधान। धारहु ध्यान सुजान ॥
होवे सब सिध काम। तबै लहै सुखधाम ॥१७॥

अथ रसिक छन्द—दोहा।

रसिक छन्द मैं शिवकला (११) गुन (३) लघु पद पद अन्त। स्रुति गुनि विरति बखानियै यहै कहै कवि सन्त ॥ १८ ॥

उदाहरण यथा।

हरि हर उर महँ धरहु। नितप्रति गुन गन करहु॥ कलिमल दल सब दहहु। तब प्रभु निज पद लहहु॥ १९॥

अथ निसानी छन्द लक्षण—दोहा।

प्रथम तृतिय पद में कला तेरह तेरह ठान।
दूजे चौथे दस कला छन्द निसानी मान॥२०॥

उदाहरण यथा।

बन की छबि सोहै बनी। लखि लेहु पियारे॥
मन में हित सों है घनो। हर लेहु हिया रे॥२१॥

अथ तोमर छन्द लच्छन—दोहा।

प्रति पद तोमर छन्द में रवि (१२) मात्रा परिमान। बिरति तत्व (२४) पर जानिये पिङ्गल करत बखान॥ २२॥

उदाहरण यथा।

भजि गोकुलेश मुरारि। करुनानिधान उदारि॥
ब्रज की सु जीवनमूर। कुसुमेषु*की छबि पूर।

अनुफल छन्द लच्छन - दोहा।

भानु कला (१२) प्रतिपद जहाँ बसु श्रुति पै विश्राम। छन्द सु अनुफल जानिये बरनत पिङ्गल नाम॥ २४॥

* कामदेव।

उदाहरण यथा ।

श्रीपति के गुन गावत। वञ्छित सो फल पावत॥
भक्ति हिये दरसावत। लोक सबै सिर नावत॥

अथ दोहा छन्द लक्षण दोहा ।

प्रथम तृतिय पद में जहाँ तेरह मात्रा साज ।
दूजे चौथे चरन शिव दोहा सब सुख काज ॥
रचिये दोहा छन्द जो गनि प्रस्तार उदार ।
प्रगटत भेद अनन्त हैं को कर सकै विचार॥२७॥

दोहा छन्द के १६०६५५६२५ इतने भेद होते हैं अर्थात् इतने तरह के दोहा बनते हैं । तिनमें तेइस २३ प्रकार तिनके नाम —

छप्पय ।

भ्रमर १ सुभ्रामर २ शरभ ३ श्येन ४ मण्डूक ५ बखानहु । मर्कट ६ करभ ७ सु और नरहि ८ हंसहि ९ परिमानहु ॥ गनहु गयन्द १० सु और पयोधर ११ बल १२ अवरेषहु । बानर १३ त्रि-कल १४ प्रतच्छ कच्छपहु १५ मच्छ १६ विसेषहु ॥ शार्दूल १७ सु अहिवर १८ व्याल १९ जुत वर बिड़ाल २० अरु श्वान २१ गनि। उद्दाम उदर २२ अरु सर्प २३ शुभ तेइस विधि दोहा बरनि॥२८॥

अथ सामान्य दोहा उदाहरण—दोहा।

श्रीरघुबर राजिवनयन रमारमन भगवान।
धनुष बान धारन करे बसहु सु मो उर आन॥

अथ भ्रमर—दोहा।

सीता सीतानाथ को गावो आठो जाम।
इच्छा पूरी जो करे देवे सो निज धाम॥ १॥

या दोहा में २२ गुरु हैं चार ४ लघु।

अथ भ्रामर—दोहा।

माधव मेरेही बसो साधी येही साज।
कामी क्रोधी लम्पटी जानो सेवा काज॥ २॥

या दोहा में २१ गुरु और ६ लघु हैं।

अथ शरभ दोहा।

हर से दानी कहुँ नहीं दीन्हे केते दान।
केसे को भाषे लखो बानी एके जान॥ ३॥

या दोहा में २० गुरु अरु ८ लघु हैं।

अथ श्येन - दोहा।

श्रीराधा श्रीनाथ प्रभु तुमही सों है काज।
सेवा ता पद कञ्ज को औरो है बेकाज॥ ४॥

या दोहा में १८ मात्रा गुरु हैं और दस १० मात्रा लघु हैं।

अथ मण्डूक दोहा।

मेरी ओरै देखिये करि कै दाया साज ।
कामी मन में हौं महा सब विधि राखो लाज ॥

या दोहा में १८ मात्रा गुरु और १२ मात्रा लघु हैं।

मर्कट—दोहा।

ब्रज में गोपन संग में राधा देखि श्याम ।
भूली सुध बुध प्रेम सौं मोही मानहुं काम ॥६॥

या दोहा में १७ मात्रा गुरु और १४ मात्रा लघु हैं।

अथ करभ—दोहा।

देखि देखि कै टूर सो देखो चढै मुरारि ।
छकी सुकवि में दृगन भरि रही लुकानी हारि॥

या दोहा में १६ मात्रा गुरु हैं और १६ मात्रा लघु हैं।

अथ नर—दोहा।

गोप गोपिका संग में रवितनुजा तरु तीर ।
देखि हरि तब तें भये मेरो ओर अधीर ॥ ८ ॥

या दोहा में १५ मात्रा गुरु और १८ लघु मात्रा हैं।

अथ हंस—दोहा।

मोसि औरो हैं नहीं अघ की खानि मुरारि ।
चरन सरन प्रभु दीजिये यह ही भव में सार ॥

या दोहा में १४ मात्रा गुरु और २० मात्रा लघु हैं ।

अथ गयन्द—दोहा।

गोकुलेस गोकुलभवन गोपगोपिगन-राय ।
गोवर्द्धनगिरिपानिधर ब्रज की कीन्ह सहाय॥१०॥

या दोहा में १३ गुरु मात्रा हैं और २२ लघु मात्रा हैं ।

अथ पयोधर दोहा।

ब्रज में बस घर त्यागि अब कलि जग आयौ जान।
भूल न श्रीगोविन्द को भजो दीन सुखदान॥११॥

या दोहा में १२ गुरु मात्रा हैं और २४ मात्रा लघु हैं।

अथ चल दोहा।

सेवक सुखद सहाय कर अघहर नाम उचार ।
या कलि में न अधार कछु है सो मोहि अधार ॥

या दोहा में ११ मात्रा गुरु हैं और २६ लघु मात्रा हैं ।

अथ वानर—दोहा ।

सुरतरु सम जग महँ लखौ वञ्छित देत उदार ।
श्रीरघुबर को छोड़ अब क्यों भटके खल हार ॥

या दोहा में १० गुरु हैं और २८ मात्रा लघु हैं ।

अथ त्रिकल—दोहा ।

कमलवदन सोभासदन कदन मदनमद हाल ।
रदन छदन सुखमा करै मोती माल गुपाल॥ १४॥

या दोहा में ९ गुरु मात्रा और ३० लघु मात्रा हैं ।

अथ कच्छप—दोहा ।

तन मन धन धरनो धरम परम परस पाखण्ड ।
कलिमलहर गोविन्द के भजिये पद जसमण्ड ॥

या दोहा में ८ गुरु मात्रा और ३२ लघु मात्रा हैं ।

अथ मच्छ—दोहा ।

सुन्दर सलिल सुगङ्ग तट थिति कर अघहर तार ।
हरिभक्ति तजि जग पन्थ यह लहिहौ भव को पार॥

या दोहा में ७ गुरु मात्रा और ३४ मात्रा लघु होती हैं ।

अथ शार्दूल दोहा।

अधमन में मुहि को अधम मन महँ करहु विचार।
भवजलनिधिजिमिउतरिकै लहिहौंहरिपदसार॥

या दोहा में ६ गुरु मात्रा हैं और ३६ मात्रा लघु हैं।

अथ अहिवर—दोहा।

कनक बरन तन मृदुल अति कुसुम सरस दरसात।
लखि हरि दृग रस छकि रहे बिसराई सब बात॥

इस दोहा में ५ गुरु मात्रा हैं और ३८ मात्रा लघु हैं।

अथ व्याल—दोहा।

हम सम अधम न अउर है तुम सम अवर न धीर।
चरन सरन इहि उर गह्यो हरहु सु हरि भव पीर॥

या दोहा में ४ गुरु मात्रा हैं और ४० मात्रा लघु हैं।

अथ विड़ाल दोहा।

बिरदसुमिरसुधिकरतनित हरितुवचरननिहार।
यह भवजलनिधि तैं सु तुम अब प्रभु करिहहु पार॥

या दोहा में ३ गुरु और ४२ लघु मात्रा हैं।

अथ श्वान—दोहा।

तुव गुन अहिपति रटत नित लहत न कहत न अन्त।
जगजन तुव पद सरन गहि किमि गुनि सकहि अनन्त॥

या दोहा में २ गुरु मात्रा और ४४ लघु मात्रा हैं।

अथ उदर दोहा।

लहि हरि तुव पद परस अब कलि बनौ न कह पर्म।
जितहु तन मन करि सुबस यह जगजन कह धर्म॥

या दोहा में १ गुरु और ४६ लघु मात्रा हैं।

अथ सर्प—दोहा।

ममउरमहँकियसदनइनकलिकलुषनजगजयन।
हरिहर हरहु सुसरन तुव तब परहहि चित चयन॥

या दोहा में ४८ वर्णों में ४८ लघु मात्रा होती हैं और पहिला दोहा है सो प्रसङ्ग सों लिखा है। वह भी इन २३ प्रकार के दोहों में है औ शरभ जाति है।

अथ ४८ मात्रा को सोरठा छन्द—दोहा।

द्वितिय चरन पहिले पढ़ै प्रथम चरन पुनि सोय।
चतुरथ पुनि तीजो पढ़े छन्द सोरठा होय॥३०॥

यथा सोरठा।

द्रुपदसुता की लाज, राखी श्रीब्रजराज नै।
तिनहिं सुमिर जस काज, मनबंछित पावहिं सबै॥

छन्द उल्लाला लच्छन दोहा।

तेरह तेरह मत्त * जहँ चरन चरन प्रति होय।
उल्लाला सो छन्द है पिङ्गल भाषत सोय॥ ३२॥

यथा।

सेवहु हरि सरसिजचरन, गुनगन गावहु प्रेमकर।
पावहु मन मैं भक्ति को, और न इच्छा जानि यह॥

अथ चन्द्रमनि छन्द लच्छन—दोहा।

चरन चरन प्रति होय जहँ तेरह तेरह मत्त।
छन्द चन्द्रमनि जानि सो बरनै पिङ्गल सत्त॥ ३४॥

चन्द्रमनि यथा।

राम भजै सब काम सिध, होत आन मुद सों सुभन।
राजराज धन की सुरिधि, सोभमान पावत सुजन॥

उपगीति लच्छन—दोहा।

प्रथम तृतिय पद रवि कला दूजै चतुरथ जान।
पन्द्रह कल उपगीति सो छन्द सु विदित बखान॥

* मात्रा।

उपगीति यथा।

निरखतकातुमसजनी, लखतिनरजनीबड़ीभारी।
कान्ह बतावत ऐसे, लिपट हिये पूतना मारी ॥

हरिपद छन्द लच्छन दोहा।

पहिले तीजे चरन मैं कला कला * परिमान।
दूजे चौथे शिव कला † हरिपद छन्द बखान ॥

हरिपद छन्द यथा।

ब्रजपति प्रभु तुम हो जग मैं नित, पालो करिके दास। परम धरम ज्ञाता परिमानहु, येही मन अभिलास ॥ ३८ ॥

कज्जल छन्द लच्छन—दोहा।

विद्या ‡ मात्रा चरन प्रति जगन अन्त मैं जान।
कोउ कवि तगन बखानही कज्जल द्विविध प्रमान ॥

कज्जल यथा।

हरिपद सेवो लेहु लाव §, जग महँ नाहीं और दाव।
तजि सब येही जान जाव, गावहु श्रीमाधो प्रभाव॥

द्वितीय कज्जल छन्द यथा।

कोने तोहि दियो ज्ञान, चाहै जा जगत सौं मान।
देतजिकामअरुक्रोधादि, सेवहुरामपदजोआदि ॥

* (१६) † (११) ‡ (१४) § लाभ

या छन्द को कोई कंदको छन्द भी कहते हैं।

अथ मधुमत्त छन्द लच्छन—दोहा।

प्रतिपद विद्या मत्त गनि यति पद अन्त प्रमान।
छन्द सु यह मधुमत्त कहि पिङ्गल भारत बखान॥

उदाहरण यथा।

राम नाम लीजिये यही, सदा होय यों विचार सही।
सुनौजानकरोमनभलो, अबऔरलोकजोवकलो॥

अथ हाकल छन्द लच्छन—दोहा।

चरनं चरन विद्या कला निधि अरु तत्व विराम।
कीजे अरु अवसान मैं हाकलिका अभिराभ॥

उदाहरण यथा।

ब्रजराजही को गुन गनौं, अब और सो तौ कह बनौं। मन चाहि सो यह जाम लै, दिन रैन जग सुख मान लै॥ ४६॥

अथ चारुहासिनी छन्द लच्छन दोहा।

प्रतिपद जहँ विद्या कला बसु षट पर विश्राम।
चारुहासिनी छन्द सो गुरु अन्ते अभिराम॥४७॥

उदाहरण यथा।

हमैं विसारी कहो कहा, चहो न मोरी यही चहा।
सुनो हमारो सबै यहो, कभी उधारी कहो नहीं॥

अथ सुलच्छन लच्छन - दोहा ।

हैमात्राविद्या(१४)जहँप्रतिपदरिषि (७) विश्राम ।
छन्द सुलच्छन जानिये पिङ्गल मत अभिराम ॥

उदाहरण यथा ।

हरिहर देव नित उठि सेव, अस को हेव पावहि भेव ।
मनमथिएवयहँकारटेव, सबसिषदेवनाबहिलेव ॥

अथ मनमोहन छन्द लच्छन—दोहा ।

चरन चरन विद्या कला अन्त नगन लखि लेहु ।
छन्द मनोहर नाम सो पिङ्गल भाषत येहु ॥५१॥

उदाहरण यथा ।

हरहरी नारायण परम, भल करो तुम राखो सरम ।
तुमको निहारै शुभ करम, तुमको भजै पावै धरम॥

हंसोगति छन्द लच्छन दोहा ।

कला रत्न प्रति चरन मे शास्त्र सु वसु विश्राम ।
हंसीगति सो छन्द है भाषत मति अभिराम ॥

उदाहरण यथा ।

हरि को जप, ये नर देहो । दुख को तजि, आनँद लेहो ॥ प्रभु नामहि, लै सब गेही । विमुलोकहि, पावहि तेहो ॥ ५४ ॥

अथ आर्य्याछन्द लच्छन – दोहा ।

प्रथम तृतिय पद रविकला द्वितिय अठारह लेखि।
चतुरथ पद पन्द्रह गनौ आर्याछन्द विसेखि॥५५॥

या छन्द के भेद ८१९२०००० होत हैं।

उदाहरण यथा ।

मेरी भवबाधा को, काटहु साहबजौनजान मोको।
औ,औगुन पापो के, चित न धरिये उचितनतोको॥

अथ विपुलाछन्द लच्छन—दोहा ।

प्रथम तृतिय बारह कला दो माता अधिकाय ।
तीस सताइस दुहु दलनि विपुलाछन्द बनाय ॥

उदाहरण यथा ।

परमेश्वर मधुरिपु सु देव । माधौ यादौ गिरि धरन भूप ॥ जगतारन प्रभु हौ अभेव । तुमहौ सब के अनुरूप ॥ ५८ ॥

अथ चपला छन्द लच्छन दोहा ।

चौथी माता लघु जहाँ पँचईं गुरु अवरेख ।
छठईं लघु निहचै लखौ चपला छन्द विसेख ॥

उदाहरण यथा !

परमसुचेतउदारा,धरमधुरीनविपदाहरनस्वामी ।
जगजिनकेअनुसारा,कसनहिंलेहुउनकेनामी॥६०॥

अथ मुखचपला लच्छन — दोहा ।

प्रथम सुदल चपला सदृश द्वितिय सु आर्या तुल्य ।
मुख चपला तासौं कहैं छन्द सुजान अतुल्य ॥

उदाहरण यथा ।

प्रभु गोकुलेश दयाल । मो मलिन पै कृपा करहु फिर करहु । विभु यादवेश कृपाल, हरि हमारी सुनहु फिर सुनहु ॥ ६२ ॥

जघन चपला छन्द लच्छन — दोहा ।

प्रथम सुदल आर्या सदृश भुज चपला सम जान ।
जघन सु चपला छन्द यह पिङ्गल करत बखान ॥

उदाहरण तथा ।

कुञ्जविहारी अघहर, मधुसूदन माधव गिरिधारी प्रभु । पतित उधारन सुर वर, जग के विनोदक समर्थ विभु ॥ ६४ ॥

अथ उद्गीति छन्द लच्छन — दोहा ।

प्रथम तृतिय पद रविकला द्वितिय सुपन्द्रह लेखि ।
चतुरथ अष्टादस गनौ उद्गीतौ सु विसेखि ॥ ६५ ॥

उदाहरण यथा ।

आहि मिलन बहुनारी, मोह करत जीव मैं भारी ।
मानत जो किन प्यारी, वहतु वमग हेरत हरिमुखकारी ॥

गाहाछन्द लच्छन—दोहा ।

प्रथम तृतियपद रविकला द्वितिय चतुर्थहि लेखि।
अष्टादस पन्द्रह कला गाहा छन्द विसेखि ॥६७॥

उदाहरण यथा ।

रामचन्द्र पदपङ्कज, मनमधुकर किन करत अबही।
फिरन पायहै औसर, कठिनकाल आयहै जबही॥

यह छन्द २६ प्रकार का होता है ।

अथ विगाहा छन्द लच्छन - दोहा ।

सत्ताइस कल प्रथम दल उत्तर दल है तीस ।
छन्द विगाहा जानिये पिङ्गल कहत फनीस॥६८॥

उदाहरण यथा ।

तव प्रताप ते रघुबर पयोराशि मैं बाँधौ सेत ।
पार उतारी सैना मारौ रावन लखि के समरखेत॥

अथ दच्छिणान्तिका छन्द लच्छन —दोहा ।

पहिले तीजे चरन मैं विद्या कला बखान ।
दूजे चतुरथ तिथि कला दच्छिणान्तिका मान ॥

उदाहरण यथा ।

हरे दयालो मनोरमा, करो दया देव अमान से ।
रामविहारी करौ छमा, सुनो हमारी धर कान से॥

द्विपदी छन्द लच्छन – दोहा ।

चरन होय जा छन्द के द्विपदी गुरु अवसान ।
उनतिस मात्रा चरन प्रति रवि सत्रह यति ठान ॥

उदाहरण यथा ।

तेरोमुखदेखिरामचन्द्र को कान्तिदीसतहीनसो ।
मदनखकीललाईमेंकिंदुरी * कीललाईकौनसो ॥

अथ रुचिराछन्द लच्छन—दोहा ।

रुचिरा के प्रति चरन में सोरह चौदह मत्त ।
तिनही पै विश्राम है मात्रा तीस गिनत्त ॥७५॥

उदाहरण यथा ।

हरिहर भगवत सुन्दर स्वामी, सब के घट की तुम जानो। मेरे मन की कीजे पूरी, इतनी अब हरि मम मानो ॥ ७६ ॥

गाथा छन्द लच्छन—दोहा ।

प्रथमहतियपदरविकलाद्वितियचतुर्थपुरान(१८) ।
गाथा छन्द बखान सो पिङ्गल के परमान ॥७७॥

उदाहरण यथा ।

करुनानिधानजागे,सुजनजनकेसबदुखद्वन्द्वभागे ।
सबजीवजन्तुपागे,छबिदेखकरनिजनिजधन्धलागे॥

* कुँदुरू ।

अथ उग्गाहा लच्छन – दोहा ।

प्रथम तृतिय पद रविकला द्वितिय चतुर्थ अठार ।
उग्गाहा सो छन्द है पिङ्गल कहत उदार ॥७९॥

उदाहरण यथा ।

रघुवर तुव यश समता, चन्द करै कहो कौन भाँतिन तें। दोषान्वेषी वह नित, यह निर्मल है प्रकाश कान्तिन तें ॥ ८० ॥

अथ चौबोला लच्छन—दोहा ।

चौबोला के चरन प्रति पन्द्रह मात्रा जान ।
बसु रितु पै विश्राम सो पिङ्गल करत बखान ॥

उदाहरण यथा ।

रघुवर तुम सौं बिनती करौं, कीजे सोई जाते तरौं । गुन औगुन मेरे न निहारौ, कृपा करौ लखि पार उतारौ ॥ ८२ ॥

अथ गीतिछन्द लच्छन—दोहा ।

छन्द गीति सो जानिये प्रथम तृतिय कल भान ।
द्वितिय चतुर्थ पुराण कल पिङ्गल करत बखान ॥

उदाहरण यथा ।

अपने मनहिं बिचारौ, हित अनहित युत सखि बचन हमारौ । फिर पीछे पछतैहौ, अलि अवसर यो सु फेर नहिं पैहौ ॥ ८४ ॥

अथ चौपई छन्द लच्छन—दोहा ।

पति पद पन्द्रह है कला छन्द चौपई होय ।
पिङ्गल फनपति कहत है जानहु कविजन सोय॥

उदाहरण यथा ।

राम रमापति तुम मम देव, नहिं प्रभु होत तुमारी सेव । दीन दयानिधि भेद अभेव, मम दिसि देखो यह जस लेव ॥ ८६ ॥

अथ गोपालछन्द लच्छन—दोहा ।

प्रति पद पन्द्रह है कला दिशा तत्व विश्राम ।
कहौ छन्द गोपाल यह पिङ्गल मत अभिराम ॥८७॥

उदाहरण यथा ।

मधुर मनोहर प्रिय जिमि प्रान, सुख मुख दर्पण कृपानिधान। आरतिहरन सरण जनु हेत, सुलभ सकल अघरकुलकेत ॥ ८८ ॥

अथ बैतालो छन्द लच्छन—दोहा ।

पहिले तीजे चरन मैं कह माचा उपरान्त ।
दीरघ लघु दीरघ स लघु दीरघ रचि सिद्धान्त ॥८९॥
और द्वितिय चौथे चरन बसु माचा उपरान्त ।
पूरब दल सम जानियै बैतालिय सिद्धान्त ॥९०॥

उदाहरण यथा ।

दीनबन्धु कों भजौ लला, भयौ अवतार सोरहू कला।
भक्तकाजधाममेंचला, भजौनिरन्तरभानकोसला॥

अथ आपातलिका छन्द लच्छन—दोहा ।

पहिले तीजे चरन में छह मात्रा उपरान्त ।
गुरु लघु लघु गुरु गुरु सु पुनि जानि लेहु सिद्धान्त ॥
दूजे चौथे चरन में वसु मात्रा उपरान्त ।
पूरब दल के सम गनौ आपातलिका कान्त॥८३॥

उदाहरण यथा ।

मेघवर्ण शोभित रूपा, अवधविहारी मोहि माया । दीनबन्धु लौकिक भूपा, चितव मम ओर को कर दाया ॥ ८४ ॥

अथ उदीच्यवृत्ति लच्छन—दोहा ।

पहिले तीजे चरन में कला रतन परिमान ।
दूजे चौथे में कला (१६) वृत्ति उदीच्य बखान ॥

उदाहरण यथा ।

भली हमारी तुम्हो सुनौ, सीतानाथ अनादि रूप जू।
हमै उबारौ प्रभू गुनौ, कौसल्या सुत राम भूप तू॥

अथ प्राच्यवृत्त लच्छन—दोहा ।

वृत्ति उदीच्य समान है प्राच्य वृत्ति परमान ।
काकुक भेद लघु दीर्घ को पिङ्गल करत बखान ॥

उदाहरण यथा ।

जैसी काकु आज की ढली, कान्ति की कहत सो डरात हैं। सोभा तन की लखी अली, कोटि काम लखि कै लजात हैं ॥ ९८ ॥

अथ प्रवर्त्तक छन्द लच्छन दोहा ।

पहिलो तीजो चरन को जान लेहु इह रीति ।
उदिचिवृत्ति पहिले चरन सम लेखहु कर प्रीति ॥
दूजे चौथे चरन जो याही रीति प्रमान ।
प्राच्यवृत्ति के द्वितिय सम ताहि प्रवर्त्तक जान ॥

उदाहरण यथा ।

मलीन मैं हूँ भला हरी, कौन भाँति जप को करैं कहो । हमैं उधारी कलाधरी, जान दास प्रभु भुजा गहो ॥ १ ॥

अथ सिंहिनी छन्द लच्छन दोहा ।

प्रथम तीसरे चरन में बारह मात्रा जान ।
दूजे नख (२०) चौथे चरन अष्टादस सु बखान ॥

उदाहरण यथा।

राम हमैंही तारौ, तुम बहु पातकीन कौ क्यौ उबारौ। इतनौ नैक बिचारौ, अपने मुख सो आपनौ उचारौ ॥ ३ ॥

अथ घत्तानन्द छन्द लच्छन—दोहा।

दोऊ दल में होत जहँ इकतिस इकतिस मत्त। शिव(११)मुनि(७)तेरह पै बिरति घत्तानन्द कहत्त॥

उदाहरण यथा।

जय कन्दियकुलकंस, बलिविध्वंस, केशिय बक दानव दरन। सो हरि दीनदयाल, भक्त-कृपाल, कवि सुखदेव कृपाकरन ॥ ३ ॥

हरिणी छन्द लच्छन—दोहा।

पहिले तीजे चरन में तिथि (१५) मात्रा परिमान। दूजे चौथे में कला(१६)कला सुहरिनी जान॥६॥

उदाहरण यथा।

करुनाकर राम कहो हरी, रघु सु सुन्दर बामन भूधरी। अज धीर कृपा जन पै करी, तव सुनाम सुना गनिका तरी ॥ ७ ॥

अथ गाहिनी छन्द लच्छन—दोहा ।

तीस कला पूरब दलहि उत्तर दल बत्तीस ।
छन्द गाहिनी जानियै बरनत नाग फनीस ॥८॥

उदाहरण यथा ।

तुव प्रताप रवि तेजन, जलनिधि भू के समान अवरेखौ। अरिवर वनिता नैनन, भरि भरि वारि-धारन बहुरि अवरेखौ ॥ ९ ॥

अथ साहिनी छन्द लच्छन—दोहा ।

पूरब दल बत्तिस कला उत्तर दल गनि तीस ।
छन्द साहिनी जान सो बरनै नाग फनीस॥१०॥

उदाहरण यथा ।

चढ़त प्रबलदल राघव, उठ के गरद गगन लौं गई है छाय । हलहल हालत भूधर, दब ते रविपिट्ठ कमठ कलमलाय ॥ ११ ॥

अथ शिखा छन्द लच्छन—दोहा ।

कला प्रथम दल में जहाँ अट्ठाइस परमान ।
अट्ठाइस अच्छरन में लघु इक दीरघ ठान ॥१२॥
या विधि मात्रा तीस हैं पूरब दल में देखि ।
उत्तर दल बत्तीस हैं शिखाछन्द सो लेखि॥१३॥

उदाहरण यथा ।

कमलनयन प्रभु हरिहर सुखकर, धरणिधरन दुखहर सुखदा । असरन सरनद सुभग वपुषधर, परमधरमयुत रघुबर धनदा ॥ १४ ॥

अथ खञ्जा छन्द लच्छन—दोहा ।

शिखाछन्द उलटा पढ़ौ खञ्जा छन्द सरूप ।
याही तें यह होत है खञ्जा छन्द अनूप ॥ १५ ॥

उदाहरण यथा ।

निज भवन कहु सुख-सन भवभयहर, बसत सुजनचित हित करके । हम सुमिरत तव चरन विमल मति, धन तन मन कर बल धर कै ॥ १६ ॥

अथ खम्भाछन्द लच्छन - दोहा ।

चरन चरन प्रति मत्त जहँ सारह सुखद प्रमान ।
जानहु खम्भा छन्द सो पिङ्गल करत बखान ॥ १७ ॥

उदाहरण यथा ।

अब काहे को सुनौ नाथ जू, कुबजा कीन्ह जान घरवारी । हम जानी अब नेह बिसारी, कौन चूक हुइ गई हमारी ॥ १८ ॥

अथ पद्धरी छन्द लच्छन यथा—दोहा।

छन्द पद्धरी चरन प्रति सोरह कला प्रमान ।
चार चार मात्रान पै यति ताकी सु बखान॥१९॥

उदाहरण यथा।

श्रीकृष्णचन्द अरविन्दनैन, धर अधर बजावत मधुर बैन। गन ग्वाल सङ्ग आगे सु धेन, बन तैं ब्रज आवत मोद देन ॥ २० ॥

अथ अरिल्ल छन्द लच्छन—दोहा।

छन्द अरिल्ला के लखो प्रति पद सोरह मत्त ।
पिङ्गल फनपति कहत हैं कविजन भाषत सत्त ॥

उदाहरण यथा।

ले हरि नाम मुकुन्द मुरारी, नारायन भगवन्त खरारी। राधावल्लभ कुञ्जविहारी, जानकिनाथ सदा सुखकारी ॥ २२ ॥

अथ चौपाई चतुष्पदी वा कुलक लच्छन—दोहा।

याकी चारहु चरन मैं सोरह कला बिचार ।
छन्द चौपई कहत हैं कविजन बुद्धि उदार॥२३॥

उदाहरण यथा ।

सोसुखधर्मकर्मजरजाऊ। जहँनरामपदपङ्कजभाऊ॥
भोगकुभोगज्ञानअज्ञानू। जहाँनरामप्रेमपरधानू ॥

अथ आर्य्यागीति छन्द लच्छण दोहा ।

पहिले दल है चरन मैं बत्तिस मात्रा लेखि ।
उत्तर दल रवि नखकला आर्य्यागीति बिसेखि ॥

उदाहरण यथा ।

राधा-साथी गोपी छलिया, सुन्दर सरस रूप बपुधारी। कंसा केशी दलिया, जगकर्ता जगदाता पुरुष बिहारी ॥ २६ ॥

अथ परान्तिका छन्द लच्छण – दोहा ।

लखौ परान्तिक छन्द कै चारौ चरन सुवेस ।
प्राच्यवृत्ति दूजे चरन सम जानहु सु बिसेस॥२७॥

उदाहरण यथा ।

राम नाम जप लै सुधार कै, काम त्याग पहले बिचार कै। सोक छाँड़ रट ले हुँकार कै, राम राम कह ले पुकार कै ॥ २८ ॥

अथ अचलधृति छन्द लच्छण – दोहा ।

छन्द अचलधृति चहुँ चरन सोरह सोरह मत्त ।
सोरहहौ अच्छर गनौ बुधजन भाषत सत्त ॥ २९॥

उदाहरण यथा ।

जगपति धनपति फणिपति हलधर, जगहित शुभचित रटत तुमहि नर। सुखद अभयप्रद वपुष धरत वर, हमहिं अभयकर सुजन हृदयचर॥३०॥

अथ मात्रासमक छन्द लच्छन—दोहा ।

मात्रासमक सुछन्द को निधि मात्रा लघु लेखि।
और सर्व सोरह कला कविजन भाषत देखि ॥

उदाहरण यथा ।

राधामुखदा करुणाकन्दा, साधौ सुमिरहु यसुदानन्दा। वीरा अघहा कुल को चन्दा, काटौ हमरे यम के फन्दा ॥ ३२ ॥

अथ स्कन्धक छन्द लच्छन—दोहा ।

पूरब दल बत्तीस कला उत्तर दल ता भाँति ।
स्कन्धकछन्द बखानही अट्ठाइस विधि काँति ॥

उदाहरण यथा ।

मणिमय सिंहासन पै सोभा, साजै सिय सहित राम सोहै। मान लेहु रतिपति की मूरति, जीवन सबै जगत मन मोहै ॥ ३४ ॥

अथ विश्लोक छन्द लच्छन—दोहा ।

यह सुछन्द विश्लोक है चरन चरन प्रति जास ।
सोरह कला समान है पिङ्गल करत प्रकास॥३५॥

उदाहरण यथा ।

गोविन्द पूतना को मारौ. सारे सुखी करे गोपाला। तैने कियौ उधारौ सारौ, कीनौ भलौ यशोदालाला ॥ ३६ ॥

अथ बानबासिका छन्द लच्छन—दोहा ।

बानबासिका छन्द के प्रतिपद कला विसाल ।
सोरह २ होत हैं पिङ्गल कहत रसाल ॥ ३७ ॥

उदाहरण यथा ।

गोकुलचन्दा करे प्रबन्धा, काटत फन्दा हरै कुधन्धा। यादवनन्दा पूरित गन्धा, तार दिये तैं अनेक अन्धा ॥ ३८ ॥

अथ उपचित्रा छन्द लच्छन—दोहा ।

यह उपचित्रा छन्द के चरन चरन प्रति जान ।
सोरहकला विलोकिये पिङ्गल करत बखान ॥३९॥

उदाहरण यथा।

मेरी सुन चित दै रनधीरा, कर दाया हम पै बलबीरा। तुम जानौ मम हिय की पीरा, कब मोकौ करिहौ निज तीरा ॥ ४० ॥

अन्यमते उपचित्रा लच्छन—दोहा।

आठकला तैं ग्रंथ जहँ गुरु लघु लघु गुरु होय।
उपचित्रा सो जानिये मात्रा क्रम तैं सोय ॥४१॥

उदाहरण यथा।

दुष्टा काली कौ तुम मारा। जानै पानी कौनहु खारा॥ रच्छा को धारी गिरि भारा। मेरी कीजे नाथ उधारा ॥ ४२ ॥

अथ पादाकुलक छन्द लच्छन दोहा।

प्रथम तीसरी चरन है मात्रासमक समान ।
सोरहकलभुज(२)श्रुति(४)चरणपादाकुलकबखान॥

उदाहरण यथा।

बसुदेव अमरपति लोकपती, आनन्दकन्द गोविन्द जती। भयहर राम करुनानिधाना, तुम हौ कृपाल माया हरना ॥ ४४ ॥

अथ अनङ्गक्रीड़ा छन्द लच्छन—दोहा ।

पूरब दल सोरह बरन बत्तिस कला प्रमान ।
सो अनङ्गक्रीड़ा लखौ दूजे दल लघु जान ॥४५॥

उदाहरण यथा ।

राधा माधौ कृष्णा विष्णो केशी कंसा मुष्ठा काला । सुरपति जगपति फनिपति कलिमलदल हित धरत वपुष निज जग मधि ॥ ४६ ॥

अथ उपजाति छन्द लच्छन – दोहा ।

प्रथम तृतिय पद मैं कला होय अठारह बैस ।
सत्रह दूजे चतुरथै सो उपजाति बिसेस ॥ ४७ ॥

उदाहरण यथा ।

राधापती माधव कंसकाला । गोविन्द केशो यमुदा सु लाला ॥ बंशी बजावै मधुरी गुपाला । हरे बिहारी तुम हौ दयाला ॥ ४८ ॥

अथ राजीवगण छन्द लच्छन – दोहा ।

सु राजीवगन छन्द मैं कला अठारह चर्न ।
नवमात्रा पै गति गनौ भाषत पिङ्गल वर्न ॥४९॥

उदाहरण यथा ।

दीनानाथ हरि बोलौ माधवा । चित मोहन

करन गोकुल माधवा॥ तन सोहन सुभग चन्दन यादवा। मन भजौ प्रीतम सङ्कट बाधवा ॥५०॥

अथ मनोरमा छन्द लच्छन—दोहा।

प्रथम तृतिय अष्टादसै कला चरन मैं जान ।
उनइस दूजै चतुरथै मनोरमा सु बखान ॥५१॥

उदाहरण यथा।

कर जोर गये भृगुकुल के चन्दन। सुर देखत सोहनै श्रीरघुनन्दन॥ घन घोष सुदुन्दुभि आवत बाजत। वर्षं कुसुमावलि अञ्जली साजत ॥५२॥

अथ द्वितीय प्रकार झूलना लच्छन। दोहा॥

द्विपद झूलना छन्द है प्रतिपद दस कल लिख ।
पुनि दस पुनि दस मात पुनि यति ताकौ अवरेख॥

उदाहरण यथा।

राम गोविन्द प्रभु राधिकानाथ हरि गोकुलाधीश प्रभु क्रोधनाशी। दीजिये दास कौ आपनै धाम कौ चक्रपाणिहि नाम ज्योतिराशी ॥ ५४ ॥

पीयूषवर्ष छन्द लच्छन—दोहा।

पीयूषवर्ष सु छन्द यह प्रतिपद उन्निस मत्त ।
आनँदवर्द्धन नाम विय भाषत कविजन सत्त ॥

उदाहरण यथा ।

सुमिर मन रघुबीर सुख पैहै जहाँ। कुहू निसि मैं लखौ चाहत ससि कहा॥ यह सकल संसार सपनै तूल है। साँच मति जानै बड़ी मति भूल है॥ ५६॥

अमरावती छन्द लच्छन—दोहा।

पहिले तीजे चरन में कला अठारह जान।
दूजे चौथे बीस कहि अमरावती बखान॥ ५७॥

उदाहरण यथा।

राम राम कृष्ण कृष्ण यादवेश। विभू प्रभू कृपा करी यदुनाथ बीरा॥ दीनबन्धु दीनबन्धु राघवेश। हमें दयाल दीजिये निज धाम हीरा॥ ५८॥

अथ हंसगति छन्द लच्छन—दोहा।

छन्द हंसगति में लख्यो चरन चरन प्रति बीस।
मात्रा विंशति श्रवन सुखकारी नाम बिसीस॥ ५९॥

उदाहरण यथा।

जगत ईस नरभूप सिया ढिग सोहत। गल बैजन्ती माल सुजन मन मोहत॥ चरन चारु

कौ सोभा निरखि पुरन्दर । मगन नयन हो गये प्रमुदकर सुन्दर ॥ ६० ॥

अथ स्रग्विनो छन्द लच्छन—दोहा ।

होत स्रग्विनो छन्द के चरन चरन प्रति बीस ।
काला मनोरम जानिये भाषत बेस फनीस ॥ ६१

उदाहरण यथा ।

नन्द के पुत्र कौ गाय लै बावरे । मन्दता छोड़ कै नेम सौं धावरे ॥ चित्त सैं प्रीति सैं सीस कौ नाव रे । राम कहु कृष्ण कहु श्याम कहु गाव रे ॥ ६२ ॥

अथ प्लवङ्गम छन्द लच्छन—दोहा ।

छन्द प्लवङ्गम चरन प्रति इकइस मात्रा लेखि ।
ग्यारह औ दस पै विरति पिङ्गल कहत विसेखि ॥

उदाहरण यथा ।

करिये प्रभु पद ध्यान राम रट लीजिये ।
रघुबर बामन रूप राम रस पीजिये ॥
करुणानिधि भूपाल चरन चित दीजिये ।
प्रतिदिन हरि की प्रीति राम रँग भीजिये ॥६४॥

अथ द्वितीय प्लवङ्गम छन्द लच्छन—दोहा ।

छन्द प्लवङ्गम चरन प्रति मात्रा गनि इक्कीस ।
विरति आठ तेराहि पै भाषत द्वितिय फनीस ॥

उदाहरण यथा ।

यह जग नश्वर तहाँ विषय रस तुच्छ है ।
जन्म मरण को आदि दुःख की गुच्छ है ॥
तातें हरिजन सङ्ग सदा मन दीजिये ।
राम कृष्ण गुनग्राम नाम रस भीजिये ॥ ६६ ॥

अथ चाँद्रायन छन्द लच्छन—दोहा ।

चन्द्रायन के प्रति चरन गनि मात्रा इकईस ।
ग्यारह अरु दस पै विरति पिङ्गल कहत फनीस ॥

उदाहरण यथा ।

हरिहर कृपानिधान परम पद दीजिये ।
बिभु प्रभु दयानिकेत सरन रख लीजिये ॥
नरवर विष्णु कृपाल सबहि सुख कीजिये ।
अपनो दया बिचार पाप सब मीजिये ॥ ६८ ॥

अथ त्रिटपद छन्द लच्छन—दोहा ।

मात्रा त्रिटपद छन्द के चरन चरन प्रति जान ।
तेइस मत्ता जानिये तेरह दस यति ठान ॥६६॥

उदाहरण यथा।

पहिलेही गजकर्ण को, सुमिरन मन कीजे।
तिस पीछे सब देव को, मन मैं धर लीजे ॥
लम्बोदर के रूप को, पूजन कर लीजे।
एकदन्त के नाम को, रस रस मन पीजे ॥७०॥

अथ उपमान छन्द लच्छन—दोहा।

तेइस मात्रा चरन प्रति तेरह दस विश्राम।
छन्द जान उपमान सो बरनत बुध अभिराम ॥

उदाहरण यथा।

राम कृष्ण गोविन्द भज ए मेरे मीता।
दीनबन्धु आनन्दघन कहि कै तू जीता ॥
अब बोल ले हरि नाम काल जात बीता।
हाथ जोड़ बिनती करो नाहिं जात रीता ॥७२॥

दृढ़पद छन्द लच्छन—दोहा।

इहाँ सु प्रतिपद छन्द के होहिं कला तेईस।
तेरह दस विश्राम है दृढ़पद कहत फनीस॥७३॥

उदाहरण यथा।

रामचन्द्र पूरन परम लखि के अपनावो।
दीनबन्धु सुन्दर सरस चित मो हित लावो ॥

भानुवंस-अवतंस कौ मन से नित ध्यावौ ।
मेरी बुधि हित मान कै रघुराज मनावौ ॥७४॥

हीरक छन्द लच्छन—दोहा ।

चरन २ तेइस कला चरन आदि गुरु जान ।
चरन अन्तगुरु लघु गुरू हीरक छन्द बखान ॥७५॥

उदाहरण यथा ।

आप करौ सो होय भलो नीको सो सबै ।
और करै सो दण्ड बुराई जानी फबै ॥
यौ अम्बेर तुमार भला चला आवत है ।
तौ क्यों जीव प्रजा हितु जहँ अस पावत है॥७६॥

रोला छन्द लच्छन—दोहा ।

प्रतिपद रोला छन्द में चौबिस कला प्रमान ।
है यह तेरह भाँति को पिङ्गल करत बखान॥७७॥

उदाहरण यथा ।

राम कृष्ण गोविन्द भजें सुख होत घनेरो ।
यहाँ प्रमोद लहन्त अन्त बैकुण्ठ बसेरो ॥
मृगतृष्णा सो विषय तुच्छ अति बन्धन जी कौ ।
तातें छाड़ कुसङ्ग गहौ सरणो हरिहो कौ ॥७८॥

काव्य छन्द लच्छन -- दोहा ।

चौबिस मात्रा चरन प्रति छह बसु दस विश्राम ।
काव्यछन्द सो जानिये पिङ्गल कहि अभिराम ॥

उदाहरण यथा ।

केशव कृष्ण कृपाल कंस कालिय कुल गञ्जन ।
गोकुलेश गोविन्द सकल सज्जन मनरञ्जन ॥
दामोदर देवेश दयानिधि दानवखण्डन ।
जय जय यादवनाथ जगत गुरु असुर-विहण्डन ॥

अथ शोभना छन्द लच्छन—दोहा ।

प्रतिपद चौबिस है कला विद्यादिक विश्राम ।
नाम शोभना छन्दयह पिङ्गल करत बखान॥८१॥

उदाहरण तथा ।

जोर कर मुनि पाय पङ्कज करी दण्ड प्रनाम ।
पूजिवे कौ कुसुम लावै लई आयसु राम ॥
साथ सुन्दर बन्धु लछ्मण चले आनँदकन्द ।
देह दुति जिमि भ्रमर कञ्चन चाल बाल गयन्द ॥

अथ गन्धान छन्द लच्छन—दोहा ।

प्रथम तृतिय पद मैं बरन सत्रह कल चौबीस ।
दूजे चौथे अष्ट दस बरन कला चौबीस ॥ ८३ ॥

प्रथम तृतिय पद मैं गनौ बारह पै बिश्राम ।
दूजे चौथे शिव (११) त्रिदश (१३) गंधन है अभिराम ॥

उदाहरन यथा ॥

राम राम कृष्णचन्द्र राधिका विनोद करन ।
प्रीतिपात्र रूप सब जन हेतु भूमि कौ धरन ॥
दीनबंधु ग्रीश ईश दास के कलेशहरन ।
दास कौ निहाल अब कीजिये सु तारनतरन ॥

अथ लीलाछन्द लच्छन — दोहा ॥

प्रति पद लीला छन्द के चौबिस कला बखान ।
सात सात पुनि सात त्रय बिरति रचत बुधिवान ॥

उदाहरन यथा ।

जिनके चरन सु सुंदर हैं कछु उपमा न बनै ।
जिन के शरण अजादिक हैं इमि सब वेद भनै ॥
जिन ध्यान मुनीश करैं नित शेष उठ गिनै ।
ऐसे प्रभुहि बिचार भजौ जो सब पाप हनै ॥ ८७ ॥

अथगगनानंगछन्द लच्छन — दोना ॥

प्रतिपद पच्चिस है कला कला (१६) अंक (६) विश्राम ।
छन्द सुगगनानंग कहि बरनत अति अभिराम ॥

उदाहरन यथा ।

माधव परम वेदनिधि देवक असुर हरंत तू ।
पावन धर्म्मसेतु कर पूरण सज्जन महंत तू ॥
दानव हरण राम नृप संतन काज करन्त तू ।
देखहु कस न नीति कर मोहक मान धरंत तू ॥८६॥

अथ मुक्तामणिछन्द लच्छण - दोहा ।

मात्रा पच्चिस चरन प्रति मुक्तामणि सो छन्द ।
तेरह बारह पै बिरति पिंगल कह स्वच्छंद ॥६०॥

उदाहरण यथा ।

कुंडल ललित कपोलन पर छवि देत जु ऐसे ।
घन में चपला दमक लगत नीकी दुति जैसे ॥
चंदन खौर बिराजत मनहुं लच्मी अति राजै ।
तिनहुं लोक की आभा मुख के आगे लाजै ॥६१॥

अथ शंकरछन्द लच्छन—दोहा ।

छब्बिस मात्रा चरन प्रति शंकर छन्द बखान ।
सोरह दस पर यति जहां कवि जन करत प्रमान ॥

उदाहरण यथा ।

राम राम रघुवीर कृपाला संत पर अनुकूल ।
दीनानाथ दयानिधि दाता अन्त प्रद के मूल ॥

रघुबीर पद में नहिं दियो चित यही तेरी भूल।
सुख संपति धन धाम देह को देख कर मत
फूल ॥ ९३ ॥

अथ कामरूप छन्द लच्छन—दोहा।

कामरूप में चरण प्रति छब्बिस मात्रा होय।
निधि ऋषि दिशि मात्रान पै बिरति बखानत सोय॥

उदाहरण यथा।

शित पच्छ दसमी विजय तिथि सुर वैद्य न-
खत प्रकाश। कपि भालु दल युत चले रघुपति
निरखि समय सुभास॥ तरु कुधर मुख नख शस्त्र
चित बुधि वीर्य विक्रम दृढ़। नभ भूमि जहँ तहँ
भरा बनचर राम कृपा अरूढ़ ॥ ९५ ॥

अथ तृतीयप्रकार झूलना छन्द लच्छन—दोहा।

छन्द झूलना के लखौ प्रति पद छब्बिस मत्त।
सात सात पुनि सात पै बिरति पंच पर सत्त॥९६॥

उदाहरण यथा।

हरि कृपा बिभु पावन परम गोकुल बसत
मन मान। छविधाम सुर मारन-असुर मूरति

मथन वलवान ॥ यदुवंश प्रभु तारन तरन सुख-सार हैमप्रधान । भल जान कह पछिताय फिर क्यों रहत हो अनुमान ॥ ९७ ॥

अथ हीरामणि छन्द लच्छन—दोहा

प्रथम द्वितिय पद है जहां दोहा के सम जान ।
तीजो चौथो चरण है उग्गाहा सम ठान ॥९८॥
हीरामणि सो छन्द है मात्रा तीस समेत ।
पिंगल फणिपति कहत है जानि लेहु यह चेत ॥

उदाहरण यथा ।

कृष्ण कन्हैया श्याम की शोभा सुंदरसीम ।
ताकी छबि निज हीय में धरिये कर के नीम ॥
हीरामणि करि राखिये मोहन लाला रसिक तिहारो है । पेम महीपति साखिये देखो कैसो चन्द उजारो है ॥ १०० ॥

अथ सरसीछन्द लच्छन – दोहा ।

मात्रा सत्ताइस जहां यति सोरह शिव(११)ठान ।
सरसीछंद बखान हीं पिंगल मान प्रमान ॥१०१॥

उदाहरण यथा ।

अब तो कृपा करिय मम स्वामी अंतर्यामी

आप। एमि हो मन माहिं विचारो काटो मेरे पाप॥ तुम बिन और दृष्टि नहिं आवै कोऊ जाको जाप। तुमहि बताओ ध्यावैं जाको जा जारे मम ताप॥ १०२॥

अथ सारछन्द लच्छन—दोहा।

पहिले दूजे चरण में अट्ठाइस कले जान।
तीजे चौथे चरण में ता विधि सार बखान॥१०३॥

उदाहरण यथा।

उर अभिराम राम अरु लछमण मधुर मनोहर जोरी। बारों सकल विश्व की शोभा जो कछु कहो सु थोरी॥ पीत चोतनी धरे शीस पै पीतांबर मन माना। पीत यज्ञ उपवीत विराजत मनो बसन्तो बाना॥ १०४॥

अथ हरिगीति छन्द लच्छण—दोहा।

प्रतिपद कला अठाइस हरिगीता सो जान।
निविकलपिकलपिअरुपाँचपयतिकविकहतसुजान॥

उदाहरण यथा।

हरि चरण सेवहु शरण अशरण सकल कलिमल कन्दना। पहिरहु विभूषन मिलहु भगवत कारहु

छन छन बन्दना ॥ घनश्याम सुन्दर मन मनो-
हर हरहु दुख सुखदान है । मन बचन क्रम तें
सेइये सा सर्व सङ्कट हान है ॥ १०६ ॥

अथ ककुभा छन्द लक्षण—दोहा ।

प्रतिपद ककुभा छन्द में अट्ठाइस कल जान ।
सोरह बारह पै बिरति पिङ्गल करत बखान॥१०७॥

उदाहरण यथा ।

बिन जाये प्रभु के चरणों में और कछू नहिं ठानों।
जो मोको सिख देय दूसरो एक न वाको मानों ॥
जो कछु होनो होय राम के पद ही हिय में आनों।
सब के जीवन प्रभू सांवरे मन में यों पहिचानों ॥

अथ दुवैया छन्द लक्षण—दोहा ।

होत दुवैया छन्द के प्रतिपद अट्ठाईस ।
कला कला पै यति सुपुनि रवि पै कहत फनीस॥

उदाहरण यथा ।

राम राम हरि गोविंद स्वामी दीनदयाला गावो।
कृष्ण कृष्ण प्रभु अन्तर्यामी मीत चित्त में लावो ॥
विष्णु विष्णु नरसिंह पियारे ताको को कहि धावो।
इक दिन होगा मरना तेरा फेर न यह तन पावो॥

अथ शिख्या छन्द लक्षण—दोहा।

कल अट्ठाइस चरण प्रति शिख्या छन्द बखान।
सोरह बारह पै विरति कविजन कोविद जान॥

उदाहरण यथा।

मम औगुन न कदापि मन धारौ तुम तो दीन-दयालू। अब किरपा करनी हि विचारो हम सुने तुम कृपालू॥ तुम्हें न कछू बात उर धारो है मम नाथ गुपालू। निज दृशि देख कीजे उबारौ तुम जग के भूपालू॥ ११२॥

अथ रायसेन छन्द लक्षण—दोहा।

पहिले तीजे पाँचवें पद पन्द्रह कल ठान।
दूजे चौथे चरन शिव और सु दोहा मान॥११३॥

उदाहरण यथा।

गोकुलपति संसार उधारन। गोविन्द कुल तारन॥ मोहन मन आपत्ति विदारन। कंस वकादिक मारन॥ कीना तिनको पाप जारन। ऐसेहो तुमने पतित तारे केते नाथ॥ मैं तबही जिय जानिहौं मेरो पकड़ो हाथ॥ ११४॥

अथ चुलिहाला छन्द लच्छन—दोहा ।

चुलिहाला के चरण प्रति उन्तिस मात्रा लेखि ।
सोरह २ पै बिरति पिङ्गल कहत बिशेखि ॥११५॥

उदाहरण यथा ।

हरि प्रभु माधव बीरवर मनमोहन गोपति अबिनासी । ⁂ मुरलीधर धीर नर बरदायक काटत भव फासी ॥ जन बिपदाहर राम प्रिय मनभावन सज्जन घट बासी । अब मम ओर निहार सुख सम्पति हरि दीजै सुखरासी॥११६॥

अथ मरहट्टा छन्द लच्छन—दोहा ।

मरहट्टा प्रति चरण में उन्तिस मात्रा लेखि ।
दस बसु शिव पै यति कहत पिङ्गल मत अवरेखि ॥

उदाहरण यथा ।

जय मीन कमठ बर सूकर नरहरि वामन फरसाधार । जय दशरथनन्दन रघुकुलमण्डन कृष्ण चरित सुखसार ॥ जय बुद्ध दयाकर कल्कि म्लेछहर ये शुभ दस अवतार । जय धर्म्म उधारन खलसंहारण प्रगट हरण भू भार ॥ ११८ ॥

अथ अतिरुचिरा छन्द लच्छन—दोहा।

अति रुचिरा प्रतिपद कला उनतिस वसु विश्राम।
फिर मुनि फिर गुह के बदन यति गुरु अन्त प्रकाम॥

उदाहरण यथा।

भजन करन हित बसत बनहि बन तजत भवन सुमन करके। रटत परम चित असन करत फल तन मन कसत सुख हरके॥ बकुल बसन कर अहित न हित कछु इक रस सबहि गुन धरके। असहि सहित सब तव सुरपति मन चढ़त सु उपरि मन भरके॥ १२०॥

अथ चौपैया छन्द लच्छन – दोहा।

चौपैया के चरण प्रति तीस कला लखि लेहु।
दिशि वसु रवि मात्रान पै विरति तासु रचि देहु॥

उदाहरण यथा।

जय जय रघुनन्दन असुर विहण्डन कुलमण्डन जस धारी। सेवक सुखकारी विपिनबिहारी नारि अहिल्या तारी॥ शरणागत आयो ताहि बचायो राज विभीषण दीनो। दशकन्धविदारी पन्थसुधारी काज सुरन कहँ कीनो॥ १२२॥

अथ ताटङ्क छन्द लच्छन — दोहा ।

तीस मत्त प्रति चरण जहँ सो ताटङ्क बिचार ।
सोरह विधा पै विरति पिङ्गल मत अनुसार॥१२३॥

उदाहरण यथा ।

दीनदयाल कृपाल सुनौ हरि दीनानाथा कंसारी। पूरण पावन दास उधारण माधौ यादौ औतारी ॥ मुष्टिक मारण विपदा तारण कुब्जा दासी के तारी । हम अघभागी तुम जन पाग तारौ मेरीही बारी ॥ १२४ ॥

अथ ककुभ छन्द लच्छन — दोहा ।

ककुभ छन्द प्रतिचरण में तीस कला परिमान ।
सोरह चौदह पै विरति पिङ्गल करत बखान॥१२५॥

उदाहरण यथा ।

गिरिधर मोहन बंशीधारी राधापति हरि बलबीरा । ब्रजबासी सज्जन हितकारी शूरा हलधर रणधीरा ॥ सुन्दर राम प्रताप मुरारी जसुधा को पीओ छीरा । चक्रपाणि कह सुनौ मुरारी चित मन से मम हर पीरा ॥ १२६ ॥

अथ चूड़ामणि छन्द लच्छन – दोहा ।

चूड़ामणि प्रति पद जहाँ कला तीस परिमान ।
बारह और अठारवें विरति कहत बुधिवान ॥ १२७ ॥

उदाहरण यथा ।

तुम तो दीनदयालू मम औगुन न कदापि मन धारो । हम सुनि तुम कृपालू अब दया कृपा करनीय बिचारो ॥ हे मम नाथ कृपालू तुम कौन कछु बात मो उर धारो । हे नरवर भूपालू निजहि ओर देखि कीजै उबारो ॥ १२८ ॥

अथ त्रिभङ्गी छन्द लच्छन – दोहा ।

होत त्रिभङ्गी छन्द के प्रतिपद कला बतीस ।
दश बसु बसु छह पै विरति पिङ्गल कहत फनीस ॥

उदाहरण यथा ।

जय जय रघुनन्दन दुष्ट निकन्दन जनमन-रञ्जन भव भञ्जन । जय जय गुण-मन्दर रसिक पुरन्दर तन घन सुन्दर दुखगञ्जन ॥ जय जय रघुनायक सन्त सहायक प्रीति चमायक सर-सावन । जय जय जय पावन जन हित धावन मोद बढ़ावन मनभावन ॥ १३० ॥

अथ समान सवैया छन्द लच्छन—दोहा ।

प्रतिपद छन्द समान यह नाम सवैया जान ।
मात्रा बत्तिस विरति जहँ सोरह पै परिमान ॥

उदाहरण यथा ।

आँसू तीरथ न्हात रहत है पलक मढ़ी सुमिरन आराधक। दर्श आस की माला लीन्हे मोह मान को मन ते बाधत॥ तपिबो करत ताप विरहानल जापबो करत गुनन तन दाधत। सोवत नहिं सेवत बरुणी बन रघुवर नैन योग नित साधत ॥ १३२ ॥

अथ पद्मावती छन्द लच्छन—दोहा ।

प्रति पद पद्मावतिय में बत्तिस कला प्रमान ।
दस बसु विद्या कलनि पर यति ताको सु बखान ॥

उदाहरण यथा ।

जय गोकुलचन्दा आनँदकन्दा मोहन माधौ कृष्ण हरी । कृत गोप सु वेषो गिरधर केशो दीनन के सु विपत्ति हरी॥ वारन दुःख निवारण गणिका तारण दाता भुवन धरी । बृन्दावनचारी रासबिहारी कवि सुखदेव सु ध्यान करी ॥ १३४ ॥

अथ जलहरण छन्द लच्छन—दोहा ।

चरण चरण जलहरण के बत्तिस कला प्रमान ।
दस वसु वसु षट् पै विरति पिङ्गल करत बखान ॥

उदाहरण यथा ।

जय यदुपति नरहरि कमलनयन कहि कलिमल हर गिरिधर ये । जगपति छवि जय जय गुरु जग जय जय मनसिज जय जय मनहर ये ॥ जय परम सुमतिधर कुमतिन क्षयकर जगत तपत हर नरवर ये । जय जलज सदृश छवि सुजन नलिन रवि पढ़त सु कवि जस जग पर ये॥१३६॥

अथ कमलावती छन्द लच्छन—दोहा ।

कमलावति के छन्द प्रति कला जान बत्तीस ।
दस वसु वसु षट पै विरति पिङ्गल कहत फनीस ॥

उदाहरण यथा ।

घेरौ महिषासुर दैत्य महासुर लात उक्र तेहि धर मारौ । बहु मुद्गर मारा गदा प्रहारो शूल सँवारो उर फारौ ॥ देवन गुण बरणत पुष्पन वर्षत अति गुण हर्षित जय काली । सुरपति गुण गावहिं गुणहि रिझावहिं पद सिर नावहिं जनपाली ॥

अथ लीलावती छन्द लच्छन — दोहा ।

लीलावति के प्रति चरण बत्तिस मात्रा होय ।
अष्टादश विद्याहि पै विरति बखानी सोय॥ १३९॥

उदाहरण यथा ।

रघुराज बिहारी जन सुखकारी रामा बामन रूप धरी । गौतम तिय तारण भार उतारण खरदूषन के प्राण हरी ॥ अवधेश बिहारी नर वपुधारी प्रतिपालक सुखधाम करी। लीजै सुधि मेरी मैं अब तेरी शरण लई अब सूझ परी ॥१४०॥

अथ प्रेमावती छन्द लच्छन — दोहा ।

प्रेमावति के चरण प्रति बत्तिस कला प्रमान ।
सोरह सोरह पै विरति पिङ्गल करत बखान॥ १४१॥

उदारहण यथा ।

हरजू हरजू हरजू हरजू हरजू हरजू हरजू कहिये । भवजू भवजू भवजू भवजू भवजू भवजू भवजू धरिये॥ अजजू अजजू अजजू अजजू अजजू अजजू अजजू लहिये । शिवजू शिवजू शिवजू शिवजू शिवजू शिवजू शिवजू गहिये ॥ १४२ ॥

अथ दण्डकला छन्द लच्छन - दोहा ।

दण्डकला के प्रति चरण बत्तिस कला प्रमान ।
दस बसु बिद्या पै बिरति पिङ्गल करत बखान ॥

उदाहरण यथा ।

पुरुषोत्तम नरवर मनमोहन प्रभु गिरिवर धारन रामा जू । अखिल अनूपम विभु यदुबर रिपुहन सुन्दर परम सकामा जू ॥ करुणानिधि भयहर पूरन पावन मङ्गलकारन सु नामा जू । किस से कहहि सुनहि को तुम बिन जो हमहिं देय सुखधामा जू ॥ १४४ ॥

अथ कुण्डलिया छन्द लच्छन - दोहा ।

दोहा रोलाछन्द मिलि कुण्डलिया सो जान ।
आदि अन्त में एक सो शब्द करो निरमान ॥ १४५ ॥

उदाहरण यथा ।

बसिबो बृन्दाबन करो यह चाहत मन मोर ।
सुनिबो करो गुपाल को अरु मुरली को घोर ॥
अरु मुरली को घोर भोर यमुना को अन्हैबो ।
बंशीबट तरु छाँह बहुरि कहुँ अन्त न जैबो ॥
कहि गिरधर कविराय कोटि पापन को नसबो ।
मन में यही बिचार करो बृन्दाबन बसिबो ॥ १४६ ॥

अथ करखा छन्द लच्छन दोहा।

यह करखा के चरण प्रति सैंतिस मात्रा जान।
वसु रवि वसु फिर अङ्क पै विरति सुवेस बखान॥

उदाहरण यथा।

नमो नरसिंह बलवन्त नरसिंह प्रभु सन्त हित काज अवतार भारी। खम्भ ते निकस भू हिरन-कश्यप पटक भटक दै नखन सा उर विदारो॥ ब्रह्मरुद्रादि सिर नाय जय जय कहत भक्त प्र-ह्लाद को गोद लीनो। प्रीति सौ चाट दै राज सुख साज नारायणदास को अभय दीनो॥१४८॥

अथ हंसाल छन्द लच्छन—दोहा।

प्रतिपद गनि हंसाल के कला रचौ सैंतीस।
विंशति सत्रह कलन पर विरति बखान फनीस॥

उदाहरण यथा।

तोसोंही चतुर सुजान परवीन अति परै जिन पींजरे मोह कूआ। पाय उत्तम जनम लाय कै चपल मन गाय गोविन्द गुण जीत जूआ॥ आपहि आप अज्ञान नलिनी बँधो बिना प्रभु विमुख कई बार मूआ। दास सुन्दर कहै परम पद तो लहै राम हरि राम हरि बोल सूआ॥१५०॥

अथ प्रथम झूलना छन्द लच्छन—दोहा ।

होत झूलना छन्द में सैंतिस कल गुरु अन्त ।
दस दस सत्रह पै विरति भाषत सुकवि अनन्त ॥

उदाहरण यथा ।

कर्क वर लग्न ब्रष राशिचर चन्दसुत मीन युत भौम रवि मेष राशी । चन्द्र अरु देव गुरु कीट राशी युगल केतु अरु शुक्र दोउ मकर वासी ॥ मन्द सप्तम भवन मास मधु भौम दिन मध्य रवि राहु कन्याबिलासी। नौमि तिथिपक्ष सित जासु यह पत्रिका रच्च तिहु लोक कमला-निवासी ॥ १५२ ॥

अथ छप्पय छन्द लच्छन—दोहा ।

पद छः छप्पय छन्द के प्रथम सु रोलाचार ।
उल्लाला पद दोय गणि पिङ्गल विविध बिचार ॥

उदाहरण यथा ।

धरो ध्यान घनश्याम सरस सुन्दर नँदलाला ।
मुक्तमाल बकजाल तड़ित पट पीत विशाला ॥
सीस मुकुट शर चाप गरज मुरली धुनि राजै ।
धुरवा अलक सु अरुण इन्दवधु नख छवि छाजै ॥

शुभ नेह मेह वर्षन्त तहँ सो सुख तैं तन हर्ष मन।
दुखदरु सुखद अद्भुत हगन देखो सुनो न मैं श्रवन॥

अथ छप्पयभेद नाम—छप्पय।

अजय १ विजय २ बल ३ कर्ण ४ वीर ५
बेताल ६ विहङ्कर ७। मर्कट ८ हरि ९ हर १०
ब्रह्म ११ इन्द्र १२ चन्दन १३ जु शुभङ्कर १४॥
श्वान १५ सिंह १६ शार्दूल १७ कच्छ १८ को-
किल १९ खर २० कुञ्जर २१। मदन २२ मत्स्य २३
ताटङ्क २४ शेष २५ सारङ्ग २६ पयोधर २७॥
शुभ कमल २८ कन्द २९ वारण ३० शलभ ३१
भवन ३२ अजङ्गम ३३ सर ३४ सरस ३५। गणि
समर ३६ सु मारस ३७ मेरु ३८ कहि मकर ३९
अली ४० सिद्धिहि ४१ सरस॥ ११५॥

बुद्धि ४२ सु करतल ४३ और सु कमलाकार ४४
धवल ४५ बर। मलय ४६ सु ध्रुव ४७ गनि
कनक ४८ कृष्ण ४९ रञ्जन ५० मेधा ५१ भर॥
गिद्ध ५२ गरुड़ ५३ शशि ५४ सूर्य्य ५५ शल्य ५६
पुनि नवल ५७ मनोहर ५८। गगन ५९ रत्न ६०
नर ६१ हीर ६२ भ्रमर ६३ शेखर ६४ शुभ गोहर॥

जानिये कुसुम आकार ६५ पति ६६ दीप ६७ शङ्क ६८ बसु ६९ शब्द ७० मुनि ७१ । छप्पय सु भेद शशि मुनि बरन गुरु लघु घट बढ़ि रीति गुनि ॥ १५६ ॥

अथ मदनहर छन्द लक्षण—दोहा ।

छन्द मदनहर प्रतिचरण चालिस कल गुरु अन्त।
विरति सु बत्तिस आठ पै पिङ्गल कहत अनन्त ॥

उदाहरण यथा ।

तुम प्रीतम प्यारे हितू हमारे दास तुम्हारे नित हमही तू मन हमरो । करुणा कर देखो अपनो लेखो पालन करता हरि तुमही निज धाम करी ॥ दुख दारिद नाशो देहु सुबासो पूरण आशो तुम करना शर चाप धरो । हम कछु नहिं लायक तुम सुखदायक परे तुम्हारे हम चरण सुध लो हमरो ॥ १५८ ॥

अथ उद्धत छन्द लक्षण—दोहा ।

प्रतिपद उद्धत छन्द में चालिस मात्रा होत ।
दस दस मात्रा के तहाँ चार सु विरत उदोत ॥

उदाहरण यथा।

प्रभु पूरन रघुबर सुन्दर हरि नरवर विभु परम धुरन्धर राम जू सुखमार। मम आशय पूरन बहु दानव मारन दीनन जन तारण कृष्णा जू हर भार॥ बहु दैत्य निकन्दन जन मन शुभ अञ्जन कलिमल सब गञ्जन सन्त मन आधार। रवि वंशहि मण्डन दुख दारुण खण्डन अग जग नित बन्दन बेग दीजे तार॥ १६० ॥

अथ हरिप्रिया छन्द लक्षण—दोहा।

हरिप्रिया प्रतिपद कला क्यालिस गनौ प्रमान।
चौबिस बाइस पै बिरति पिङ्गल करत बखान॥

उदाहरण यथा।

सोहनै कृपानिधान देव देव रामचन्द्र भूमि पुत्रिका समेत देव चित्त मोहै। मानो सुरतरु समेत कल्प बेल छवि निकेत शोभा शृङ्गार किधौं रूप धरे सोहै॥ लक्ष्मीपति लक्ष्मीयुत देवीयुत ईश किधौं छायायुत परम ईश चारु बेष राखे। बन्दौं जग मात तात चरण युगल नीरजात काको सुर सिद्ध विद्य मुनिजन अभिलाखे॥ १६२ ॥

अथ नाराच छन्द लक्षण -दोहा।

प्रतिपद छँद नाराच के चौबिस मात्रा जान ।
लघु गुरु के क्रम से गनौ पिङ्गल करत बखान ॥

उदाहरण यथा।

सुपात्र को कुपात्र को बिचार दान दीजिये ।
स्वकर्म औ सुधर्म माहिं नित्त चित्त कीजिये ॥
कुसङ्ग को बिचार साधु सङ्ग रङ्ग भीजिये ।
सदा मुकुन्द विष्णु राम कृष्ण नाम लीजिये ॥१६४॥

अथ शुभग छन्द लक्षन—दोहा।

शुभग छन्द प्रतिपद कला चालिस २ देखि ।
दस २ दस २ पै विरति पिङ्गल फणिपति लेखि ॥

उदाहरण यथा।

जब चलत दशरत्थ सुत राम समरत्थ बल जुत्थ सिलहत्थ मदमत्त गर्जन्त। बर शुण्ड फुङ्कार धौंसाहि धुङ्कार मुनि धनुष टङ्कार हुङ्कार सामन्त॥ रथ चक्र घहरन्त धराधर थहरन्त, बर बाजि पदरेणु उठि सूर ढापन्त। सटपटत लङ्केश अटपटत दिग्गज रु लटपटत चपि शेष लपि कमठ कापन्त॥ १६६॥

अथ अमृतध्वनि छन्द लक्षण—दोहा ।

यह अमृतध्वनि आदि में दोहा फिर कल आठ ।
तीन जगह फिर द्वै जमक बिरति तीन तहँ ठाठ ॥

उदाहरण यथा ।

उघटत शिव सङ्गीत सुर सुघटत ताल तरङ्ग ।
बाजत दुन्दुभि घोर धुनि धुद्दुद्दुनित मृदङ्ग ॥
धुद्दुद्दुनित मृगद्दुनि धीक द्दुकि धुनि ।
उद्दुद्दुनै समुद्दुद्दुनिधर मुद्दुद्दुनि मुनि ॥
चगड्डमरू उडड्डिम दगड रसु घटिता ।
तत्तत्तमकत मत्तत्तमवत तम्मै उघटता ॥१६८॥

अथ उल्लाला छन्द लक्षण—दोहा ।

पहले तीजे चरण में पन्द्रह कला उचार ।
दूजे चौथे तेरहें कल उल्लाला चारु ॥ १६९ ॥

उदाहरण यथा ।

हरि परम दयाल कृपाल जो, विभु प्रभु कमला कान्त नर । हितप्रद भजनानन्द सुन कर, सूझत कुछ नहि पन्थवर ॥ १७० ॥

अथ प्रज्वल छन्द लक्षण—दोहा ।

प्रतिपद प्रज्वल छन्द के सोरह कला सु देखि ।
लघु गुरु लघु पादान्त में पिङ्गल कहत विशेखि ॥

उदाहरण यथा ।

मोहन मुकुन्द माधव सुधार । भज सियाप्राण राधा-अधार ॥ हरि रामकृष्ण चित में सम्हार । यह जगज्जाल झूठो पसार ॥ १७२ ॥

अथ मृदुगति छन्द लक्षण—दोहा ।

प्रतिपद मृदुगति छन्द में बारह मात्रा लेखि ।
पाँच सात पर यति गनौ पिङ्गल कहत विशेखि ॥

उदाहरण यथा ।

धीर के धरैया तुम काम के करैया तुम ।
पाप के जरैया तुम हमारे तरैया तुम ॥ १७४ ॥

अथ लक्ष्मीछन्द लक्षण—दोहा ।

गनौ सु लक्ष्मी छन्द के प्रथम सु दल में तीस ।
दूजे दल सत्ताइसे कला सु कहत फनीस ॥ १७४ ॥

उदाहरण यथा ।

गौरी बाये भागे माहे आछे सुरापगा माथै ।
देवा शोभे काटे माया जाली निजै हाथै ॥ १७६ ॥

दोहा ।

ग्रन्थ सु छन्दोमञ्जरी कला छन्द सब वर्ण ।
वर्ण छन्द वर्णन करों सुखदायक कवि कर्ण ॥ १७७ ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

दोहा ।

श्रीराधागोविन्द के पद युग करत प्रणाम ।
रचत सु छन्दोमञ्जरी उत्तरार्द्ध अभिराम ॥१॥
नव प्रत्यय मात्रान के पूरब बरनै बेस ।
ताही विधि बरनन करत प्रत्यय वर्णविशेष॥२॥

अथ वर्णप्रस्तार लक्षण । पद्धरी छन्द ।

गुरु तरे सु लघु धरिये प्रमान । पुनि ऊर्द्ध पङ्क्ति ता सम सु ठान ॥ उबरे सु गुरू पूरहु सुजान । प्रस्तारवर्ण को यह बखान ॥ ३ ॥

जब लौं न सर्वलघु अन्त होय । प्रस्तार करौ तब लगि जु सोय ॥ प्रस्तारवर्ण की यहै रीति । बरनी सु नाग पिङ्गल प्रतीति ॥ ४ ॥

यथा प्रस्ताररूप ।

एक वर्ण प्रस्तार ।	अथ द्विवर्ण प्रस्तार ।
ऽ १ भेद	ऽ ऽ १ प्रथम भेद
। २ भेद	। ऽ २ भेद
	ऽ । ३ भेद
	। । ४ भेद

अथ तीन वर्ण प्रस्तार		
S S S	१	भेद
I S S	२	भेद
S I S	३	भेद
I I S	४	भेद
S S I	५	भेद
I S I	६	भेद
S I I	७	भेद
I I I	८	भेद

अथ चतुर्वर्ण प्रस्तार ।		
S S S S	१	भेद
I S S S	२	भेद
S I S S	३	भेद
I I S S	४	भेद
S S I S	५	भेद
I S I S	६	भेद
S I I S	७	भेद
I I I S	८	भेद
S S S I	९	भेद
I S S I	१०	भेद
S I S I	११	भेद
I I S I	१२	भेद
S S I I	१३	भेद
I S I I	१४	भेद
S I I I	१५	भेद
I I I I	१६	भेद

अथ वर्णछन्द संख्या ज्ञानम् । दोहा ।

संख्या जो दश वर्ण की जानौ चाहै वेस ।
तौ द्विगुनै करि अङ्क कौं नीचे लिखै विशेष ॥

वर्ण	१	२	३	४	५	६	७	८	९
संख्या	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२

याही कों वर्णोद्दिष्टाङ्क कहत हैं और याही कों वर्णसूचो के अङ्क कहत हैं।

इति वर्णप्रस्तारः।

अथ वर्णसूचो वर्णन।

वर्ण के छन्दों की संख्या की शुद्धता और उनके भेदों में आदि अन्त के गुरु की संख्या सूची के द्वारा प्रकाशित होती है। जितने वर्ण की सूची देखनी होय तो उसी वर्ण की संख्या तक दो, चार, आठ, अर्थात् दून २ अंक लिखे। फिर जो अन्त का अंक आवे वही संख्या छन्द भेद की है। और उसमे बाईं ओर के अंक समान आदि अन्त में लघु वर्ण हैं और इसमे बाईं ओर अर्थात् तीसरे स्थान के अंक के समान आद्यन्तलघु वर्ण हैं। और अन्त अंक से दूसरे अङ्क के समान आदि गुरु और अन्त गुरु है और तीसरे अङ्क के समान आद्यन्त गुरु है। और इस की शुद्धता के लिये प्रस्तार बना कर देख लो। आगे ४ वर्ण तक की सूची लिखी जाती है। एक वर्ण को सूची नहीं होती।

	आदिलघु । अन्तलघु ।	
२ वर्ण की सूची ।	२	४ छन्द की संख्या ।
	आदिगुरु । अन्तगुरु ।	

	आद्यन्तलघु	आदिलघु अन्तलघु ।	
३ वर्ण की सूची ।	२	४	८ वर्ण संख्या ।
	आद्यन्तगुरु	आदिगुरु अन्तगुरु ।	

	आद्यन्तलघु	आदिलघु अन्तलघु	
४ वर्ण की सूची २	४	८	१६ वर्ण संख्या ।
	आद्यन्तगुरु	आदिगुरु अन्तगुरु ।	

इस सूची से प्रकाशित हुआ कि ४ वर्णों के छन्द १६ ही हो सकते हैं । और उनमें ८ छन्द ऐसे होंगे कि जिनके आदि में लघु और अन्त में लघु है । और ४ छन्द ऐसे होंगे कि जिनके आद्यन्त में लघु है फिर और ८ ही छन्द ऐसे आन

पड़ेंगे कि जिनमें आदिगुरु अन्तगुरु हैं और ४ ही छन्द ऐसे आन पड़ेंगे कि जिनमें आद्यन्तगुरु है। और इसी प्रकार ३ वा २ वर्ण की सूची से जान लेवो और इस्की शुद्धता प्रस्तार से देख लेवो ॥

अथ वर्णपाताल वर्णन ।

प्रत्येक वर्ण के छन्दों के भेद अर्थात् सम्पूर्ण संख्या का ज्ञान और लघ्वादि लघ्वन्त गुर्वादि गुर्वन्त और सर्वगुरु सर्वलघु वर्णपाताल से जाने जाते हैं ।

अथ वर्णपातल बनाने की रीति ।

जितने वर्ण का पाताल बनाना होय उतनी ही ऊर्द्धरेखा खैंचे । फिर चार बड़ी रेखा खैंचै इस रीति से कोष्ठ बन जायगे फिर प्रथम के कोष्ठ में एक, दो इत्यादिक अङ्क लिखै । दूसरे में वर्णक सूची के अङ्क लिखै। और तीसरे कोष्ठ में सूची के अङ्कों का आधा लिखे । फिर चौथे कोष्ठ में पहिले तीसरे कोष्ठ का गुणन कर फल लिखै। इसी प्रकार इच्छित वर्ण तक का पाताल बनावै। जैसे नीचे ८ अङ्क तक का पाताल यह है।

९ वर्णों का पाताल।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	वर्णसंख्या।
२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२	सर्वसंख्या।
१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	लघ्वादि लघ्वंत। गुर्वादि गुर्वंत।
१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	सर्वगुरु। सर्वलघु।

इस पाताल के बनाने से प्रकाशित हुआ कि नौ वर्णं के ५१२ सब छंद हो सकते हैं। और उन छंदों में २५६ जगह लघु आदि और लघु अंत और गुरु आदि गुरु अंत में है॥ और २३०४ जगह गुरु और इतनी ही जगह लघु हैं। इसी प्रकार ८, ७, ६, ५, ४, ३, २, १, का भी जान लो और वे इसी चक्र से ज्ञात हो जायँगे।

अथ वर्ण उद्दिष्ट वर्णन।

कितने ही वर्णं के प्रस्तार का भेद प्रश्नकर्त्ता पूछे कि अमुक वर्णं का अमुक भेद कौन सा है। और उसने लिख भी दिया है, तो इसके बताने को वर्ण उद्दिष्ट वा वर्णोद्दिष्ट कहते हैं।

वर्णोद्दिष्ट की रीति।

जितने वर्णं का प्रस्तार भेद लिखा होय अर्थात् पूछा हो तो उस दिये हुये भेद के सिर पर १, २, ४ इत्यादि अर्थात् दूने २ अंक लिखै फेर लघु मात्रा के सिर के अंकों के जोड़ में एक युक्त कर देय तो वही भेद होगा।

आगे विद्यार्थियों के हेतु एक वर्ण के उद्दिष्ट से लेकर ४ वर्ण के उद्दिष्ट तक के उदाहरण लिखे जाते हैं।

१ वर्ण का उद्दिष्ट।

१ ऽ	१ भेद।
१ ।	२ भेद।

२ वर्ण का उद्दिष्ट।

१ २ ऽ ऽ	१ भेद।
१ २ । ऽ	२ भेद।
१ २ ऽ ।	३ भेद।
१ २ । ।	४ भेद।

३ वर्ण का उद्दिष्ट।

१ २ ४ ऽ ऽ ऽ	१ भेद।
१ २ ४ । ऽ ऽ	२ भेद।
१ २ ४ ऽ । ऽ	३ भेद।
१ २ ४ । । ऽ	४ भेद।
१ २ ४ ऽ ऽ ।	५ भेद।
१ २ ४ । ऽ ।	६ भेद।
१ २ ४ ऽ । ।	७ भेद।
१ २ ४ । । ।	८ भेद।

४ वर्णा का उद्दिष्ट ।

१ २ ४ ८ ऽ ऽ ऽ ऽ	१ भेद ।	१ २ ४ ८ ऽ ऽ ऽ ।	९ भेद ।
१ २ ४ ८ । ऽ ऽ ऽ	२ भेद ।	१ २ ४ ८ । ऽ ऽ ।	१० भेद ।
१ २ ४ ८ ऽ । ऽ ऽ	३ भेद ।	१ २ ४ ८ ऽ । ऽ ।	११ भेद ।
१ २ ४ ८ । । ऽ ऽ	४ भेद ।	१ २ ४ ८ । । ऽ ।	१२ भेद ।
१ २ ४ ८ ऽ ऽ । ऽ	५ भेद ।	१ २ ४ ८ ऽ ऽ । ।	१३ भेद ।
१ २ ४ ८ । ऽ । ऽ	६ भेद ।	१ २ ४ ८ । ऽ । ।	१४ भेद ।
१ २ ४ ८ ऽ । । ऽ	७ भेद ।	१ २ ४ ८ ऽ । । ।	१५ भेद ।
१ २ ४ ८ । । । ऽ	८ भेद ।	१ २ ४ ८ । । । ।	१६ भेद ।

स्मरण रहे कि जिस रूप में लघु रूप न आवै उसे पहिला भेद जानो ।

अथ वर्ण नष्ट वर्णन ।

कितनेही वर्णो के प्रस्तार का रूप प्रश्नकर्त्ता पूछै कि अमुक संख्या का भेद कैसा होगा, इस के जानने को ही वर्णनष्ट कहते हैं ।

अथ वर्णनष्ट की रीति ।

इसकी यह रीति है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न सम होय तो उसके स्थान में लघु का रूप लिखे और विषम हो तो गुरु का रूप लिखे फिर उस संख्या का आधा करै । जो यह आधा सम हो तो फिर लघु रूप लिखे; जो विषम हो तो फिर गुरु का रूप लिखे । निदान इसी प्रकार पूरा रूप बनावे और स्मरण रक्खै कि जो विषम संख्या है उसमें से एक हीन करके आधा करै । और जो आधा करने को नहीं अङ्क बचे तो शेष गुरु काही रूप लिखे । आगे विद्यार्थियों के ज्ञान हेतु एक वर्ण से लेकर चार वर्ण तक का नष्ट लिखा जाता है ।

१ वर्ण का नष्ट ।

१	०	ऽ
२	१	।

२ वर्ण का नष्ट ।

१	०	ऽ ऽ
२	१	। ऽ
३	१	ऽ ।
४	१	। ।

३ वर्ण का नष्ट ।				
१	०	०	०	ऽऽऽ
२	१	०	०	।ऽऽ
३	१	०	०	ऽ।ऽ
४	२	१	०	।।ऽ
५	२	१	०	ऽऽ।
६	३	१	०	।ऽ।
७	३	१	०	ऽ।।
८	४	२	१	।।।

४ वर्ण का नष्ट ।					
१	०	०	०	०	ऽऽऽऽ
२	१	०	०	०	।ऽऽऽ
३	१	०	०	०	ऽ।ऽऽ
४	२	१	०	०	।।ऽऽ
५	२	१	०	०	ऽऽ।ऽ
६	३	१	०	०	।ऽ।ऽ
७	३	१	०	०	ऽ।।ऽ
८	४	२	१	०	।।।ऽ
९	४	२	१	०	ऽऽऽ।
१०	५	२	१	०	।ऽऽ।
११	५	२	१	०	ऽ।ऽ।
१२	६	३	१	०	।।ऽ।
१३	६	३	१	०	ऽऽ।।
१४	७	३	१	०	।ऽ।।
१५	७	३	१	०	ऽ।।।
१६	८	४	२	१	।।।।

अथ वर्ण नष्ट को दूसरो रीति ।

जितने वर्ण के प्रस्तार का जौन से भेद का रूप निकालना हो तो कल्पित वर्ण के समान लघु रूप लिख कर उनके सिर पर वर्णोद्दिष्टाङ्क अङ्क लिखै फिर अन्त्य के उद्दिष्टाङ्क को दूना कर के पूछा हुआ रूप घटावे जो शेष बचें उनको उद्दिष्टाङ्कों में जहां कि सम्भव होय घटावे जौन

जौन सा उद्दिष्टाङ्क घट जाय उसी के लघु को दीर्घ कर दे तो पूछा हुआ भेद अर्थात् रूप निःकल आवेगा । इस बात के दिखाने के लिये केवल एकही उदाहरण बहुत है । जैसे किसी पृच्छक ने पूछा कि ६ वर्ण के प्रस्तार में २६ वां रूप कैसा होगा, तो उक्त रीति से इस प्रकार लिखे । यथा ।

१	२	४	८	१६	३२
।	।	।	।	।	।
	०	०			०
	S	S			S
।	S	S	।	।	S

∴ ३२ × २ = ६४ ∴ ६४—२६ = ३८ तो ३८ का अङ्क ३२ और ४ और २ में घट गया तो इन्हीं अङ्कों के नीचे के लघु रूप को गुरु कर दिया तो ऐसा (। S S । । S) रूप रहा, तो यही रूप २६ वां निकला इसी प्रकार और भी जानो ।

अथ वर्णमेरु का वर्णन ।

जितने वर्ण के सम्पूर्ण छन्द होते हैं उनके भेदों के रूपों में जितने २ गुरु और जितने २ लघु के जितने रूप होते हैं, उनको संख्या बता देने को वर्णमेरु कहते हैं ।

वर्णमेरु बनाने की रीति ।

वर्णमेरु बनाने को यह रीति है कि पहिले दो कोष्ठ लिखे फिर इनके नीचे अर्थात् नाभि की ओर को ३ और चार आदि कोष्ठ प्रश्न के अनुसार लिखे और उसके लिखने की यह रीति है कि आदि अन्त्य के कोष्ठों में एक एकही का अङ्क लिखे और आदि के कोष्ठों से आगे के कोष्ठों में और अन्त्य के कोष्ठों से पीछे के कोष्ठों में २, ३, चार आदि अङ्क लिखे । और शेष कोष्ठों के लिखने को यह रीति है कि शीर्ष के दो अङ्कों का जो जोड़ आवे वही लिख दे। आगे ८ वर्ण तक का मेरु विद्यार्थियों के ज्ञान के हेतु लिखा जाता है ।

वर्ण मेरु। २	१	१								१ वर्ण रूप।
४	१	२	१							२ वर्ण के रूप।
८	१	३	३	१						३ वर्ण के रूप।
१६	१	४	६	४	१					४ वर्ण के रूप।
३२	१	५	१०	१०	५	१				५ वर्ण के रूप।
६४	१	६	१५	२०	१५	६	१			६ वर्ण के रूप।
१२८	१	७	२१	३५	३५	२१	७	१		७ वर्ण के रूप।
२५६	१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१	वर्ण के रूप।

इस मेरु के बनाने से प्रकाशित हुआ कि ८ वर्णों के छन्दों में एक तो सर्वगुरु का भेद है। और ८ भेद ऐसे हैं कि जिनमें ७ गुरु और १

लघु है । और २८ भेद ऐसे हैं कि जिनमें ६ गुरु और २ लघु हैं और ५६ भेद ऐसे हैं कि जिनमें ५ गुरु और ३ लघु हैं और ७० भेद ऐसे हैं कि जिनमें ४ गुरु और ४ लघु हैं और ५६ ही भेद ऐसे हैं कि जिनमें ३ गुरु और ५ लघु हैं और २८ भेद ऐसे हैं कि जिनमें २ गुरु और ६ लघु हैं और ८ भेद ऐसे हैं कि जिनमें १ गुरु और ७ लघु हैं और एक भेद सर्व लघु का है। इसी प्रकार इसी मेरु में सात, छ आदि का मेरु जान लो।

वर्णं का एकावली मेरु।

उक्त मेरु में तो गुरु उलटे कहने पड़ते हैं और इसमें गुरु सीधे कहने पड़ते हैं इसी से इसको वर्णं का एकावली मेरु कहते हैं।

वर्ण एकावली बनाने की रीति।

पहिले २ फिर ३ फिर ४ इसी प्रकार कोष्ठ इच्छानुसार बनावे। फिर आदि अन्त्य के कोष्ठों में एकही एक लिखे। और आदि कोष्ठ के

आगे के कोष्ठों में और अन्त्य कोष्ठ के पीछे के कोष्ठ में दो, तीन इत्यादि लिखे । और शेष कोष्ठों में शीर्ष अङ्क जोड़कर लिखे तो वर्णों का एकावली मेरु बन जायगा। जैसे आगे केवल ६ वर्णों का एकावली मेरु यह है ।

१	१					
१	२	१				
१	३	३	१			
१	४	६	४	१		
१	५	१०	१०	५	१	
१	६	१५	२०	१५	६	१

IIIIII SIII I-SSIIII SSSIII-SSSSII SSSSSI SSSSSS

इस मेरु के बनाने से यह प्रकाशित हुआ कि ६ वर्णों के सम्पूर्ण छन्दों में एक छन्द सर्व लघु का है। और छ छन्द ऐसे हैं कि जिनमें १ गुरु और ५ लघु हैं। और १५ छन्द ऐसे हैं कि जिनमें दो गुरु और ४ लघु हैं। और २० छन्द ऐसे हैं कि जिनमें ३ गुरु और ३ लघु हैं। और

१५ ही ऐसे छन्द हैं कि जिनमें ४ गुरु और २ लघु हैं । और १ छन्द ऐसा है कि जिसमें ५ गुरु और १ लघु है । और एक छन्द सर्वगुरु का है । इसी प्रकार और भी जानो । अब आगे खण्डमेरु का वर्णन करते हैं ।

अथ खण्डमेरु का वर्णन ।

बिना मेरु के बनाये जिससे मेरु का काम निकले उसे खण्डमेरु कहते हैं ।

अथ खण्डमेरु के बनाने की रीति ।

जितने वर्णों का खण्डमेरु पूछे उतनेही कोष्ठ खैंचे । और एक कोष्ठ और भी अधिक लिखे और इन कोष्ठों के भरने की यह रीति है कि पहिले कोष्ठ में एक २ काही अङ्क लिखे फिर दूसरे कोष्ठ में जितने वर्णों का मेरु पूछा होय वहां तक के दो, तीन आदि । अङ्क लिखे तिस पीछे उत्तरोत्तर के अङ्क उपान्त्य की रीति से जोड़ कर सब कोष्ठ भर दे और जो अन्त्य में का अङ्क आवेगा उसी को उत्तर मानो । विद्यार्थियों के ज्ञान हेतु ८ वर्णों का खण्डमेरु लिखा जाता है ।

८ वर्ण का खण्ड मेरु स्वरूप ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	कोष्ठ
१	१	१	१	१	१	१	१	१	पहिला कोष्ठ
	२	३	४	५	६	७	८		
	३	६	१०	१५	२१	२८			
	४	१०	२०	३५	५६				
	५	१५	३५	७०					
	६	२१	५६						
	७	२८							
	८								

इसमें अन्त्य के अङ्क १।८।२८।५६।७० ।५६।२८।८।१। इनसे वही प्रयोजन समझो जो पूर्व मेरु में लिख आये हैं ।

दूसरे खण्डमेरु बनाने की यह रीति है कि जितने वर्ण का मेरु पूछे उतने ही कोष्ठ तिरछे बनावे और उनमें लिखने की यह रीति है कि

सब से नीचे के कोष्ठ अर्थात् तीसरे में एक, दो, तीन आदि अङ्क लिखे। फिर दूसरे कोष्ठ में उत्क्रम से अंक इच्छित वर्ण की संख्या से लेकर लिखे और रहा पहिले कोष्ठ उसके भरने की यह रीति है कि तीसरे और दूसरे कोष्ठ का गुणनफल लिखो। और शेष कोष्ठों में इस रीति से लिखो कि पहिले कोष्ठ के अंक को दूसरे कोष्ठ के अंक से गुणा दो और तीसरे कोष्ठ के अंक का भाग दो जो लब्धि आवे उसे लिखो। इसी प्रकार से शेष सब कोष्ठ भरो फिर जो पहिले कोष्ठ के अंक हैं उन्हीं को उत्तर मानो। जैसे ८ वर्ण का मेरु नीचे लिखा जाता है। प्रगट हो कि १ का अंक पहिले कोष्ठ की बाईं ओर सर्वगुरु का और भी रख ले तो पूर्वोक्त मेरु का जो काम है सो निकल आवेगा।

१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१	१
	८	७	६	५	४	३	२	१	२
	१	२	३	४	५	६	७	८	३

अथ वर्ण पताका वर्णन।

गुरु अरु लघु के भेद जितने २ वर्णमेरु के

द्वारा प्रकाशित होते हैं उनके स्थान जानने को वर्णपताका कहते हैं ।

वर्ण पताका बनाने की रीति ।

प्रथम एक दण्डाकार रेखा लिखे फिर बाईं ओर से दाहिनी ओर को वर्णमेरु के अङ्क के समान कोष्ठ बनावे । फिर इन कोष्ठों के भरने की यह रीति करो कि दण्डाकार कोष्ठों में कल्पित वर्ण के सूची के अङ्क लिखो । फिर शीर्षाङ्क में से तीसरे अङ्क को आदि लेकर घटाओ एक के अङ्क तक । और शेष प्रथम कोष्ठ में लिखता जाय तो यह पताका पहिली बनेगी । फिर पताका के अङ्कों में से सूची के तीसरे अङ्क को आदि ले १ तक घटावे । इसी प्रकार संपूर्ण पताका के कोष्ठ भर दे । और स्मरण रहे कि घटाने में जो अङ्क किसी और पताका के कोष्ठ में आ जावे तो उसको न लिखे। इसी रीति से एक वर्ण की पताका से लेकर छ वर्ण तक की पताका लिखी जाती है ।

१ वर्ण को पताका

।	२
ऽ	१

२ वर्ण को पताका

।।	४	
ऽ	२	३
ऽऽ	१	

३ वर्ण को पताका

।।।	८		
ऽ	४	६	७
ऽऽ	२	२	५
ऽऽऽ	१		

४ वर्ण की पताका।

।।।।	१६					
ऽ	८	१२	१४	१५		
ऽऽ	४	६	७	१०	११	१३
ऽऽऽ	२	३	५	९		
ऽऽऽऽ	१					

५ वर्ण को पताका।

।।।।।	३२									
ऽ	१६	२४	२८	३०	३१					
ऽऽ	८	१२	१४	१५	२०	२२	२३	२६	२७	२९
ऽऽऽ	४	६	७	१०	११	१३	१८	१९	२१	२५
ऽऽऽऽ	२	३	५	९	१७					
ऽऽऽऽऽ	१									

।।।।।।	६४	६ वर्ण को पताका ।											६१
ऽ	३२	४८	५६	६०	६२	६३							५९
ऽऽ	१६	२४	२८	३०	३१	४०	४४	४६	४७	५२	५४	५५	५८
ऽऽऽ	८	१२	१४	१५	२०	२२	२३	२६	२७	२९	३६	३८	३९
ऽऽऽऽ	४	६	७	१०	११	१३	१८	१९	२१	२५	३४	३५	४२
ऽऽऽऽऽ	२	३	५	१७	३३	४३	४५	५०	५१	५३	५७	३७	
ऽऽऽऽऽऽ	१											४१	
												४९	

इस पताका के करने से प्रकाशित हुआ। कि एक वर्ण के छन्दों में दूसरे छन्द में १ लघु । और पहिले छन्द में १ गुरु है इसी प्रकार २ वर्ण के छन्दों में २ लघु चौथे छन्द में और १ गुरु दूसरे और तीसरे छन्द में है और २ गुरु पहिले छन्द में हैं। और ३ वर्ण के छन्दों में ३ लघु ८ छन्द में और १ गुरु ४ । ६ । ७। वें छन्द में और २ गुरु २ । ३ । ५ । वें छन्द में और ३ गुरु पहिले छन्द में हैं। इसी प्रकार ४ और ५ और ६ वर्ण को पताका से समझो।

अथ मर्कटी वर्णन ।

वर्णों के छन्दों की संख्या गुरु आदि गुरु अन्त और लघु आदि और लघु अन्त और सर्व वर्ण और गुरु लघु और सर्व कला और पिण्ड मर्कटी के द्वारा जाने जाते हैं ।

वर्ण मर्कटी बनाने की रीति ।

इच्छित वर्ण के समान लम्बे कोष्ठ और सात कोष्ठ नाभि की ओर बनावे । लम्बे कोष्ठों में से पहिले कोष्ठों में बाँई ओर से एक दो आदि अङ्क लिखे । और दूसरे कोष्ठों में वर्ण सूची के अङ्क लिखे तीसरे में वर्ण सूची के अङ्कों का आधा लिखे । और चौथे कोष्ठों में पहिले और दूसरे कोष्ठों के अङ्कों का गुणन फल लिखे । और पाँचवें कोष्ठों में चौथे कोष्ठों का आधा लिखे । और चौथे पाँचवें कोष्ठों के अङ्कों का योग छठे कोष्ठों में लिखे और छठे कोष्ठों का आधा जो होय सो सातवें कोष्ठों में लिखे; जैसे छ वर्ण की मर्कटी नीचे लिखी है ।

मर्कटी यथा।

१	२	३	४	५	६	वर्ण संख्या।
२	४	८	१६	३२	६४	छन्दों की संख्या।
१	२	४	८	१६	३२	गुरु आदि गुरु अन्त लघु आदि लघ्वन्त।
२	८	२४	६४	१६०	३८४	सर्व वर्ण।
१	४	१२	३२	८०	१९२	गुरु लघु।
३	१२	३६	९६	२४०	५७६	सर्व कला।
१॥	६	१८	४८	१२०	२८८	पिण्ड।

इस मर्कटी के बनाने से प्रकाशित हुआ कि ६ वर्ण के छन्दों की संख्या ६४ है और उन में ३२ छन्दों में गुरु आदि गुरु अन्त और लघु आदि लघु अन्त हैं और ३८४ सम्पूर्ण छन्दों में वर्ण हैं। और सम्पूर्ण छन्दों में १९२ जगह गुरु और लघु हैं और सर्व कला ५७६ हैं और २८८ पिण्ड हुआ।

इति वर्ण छन्द प्रत्यय।

अथाष्टगण वर्णन – दोहा।

म न भ य ज र स त अष्टगन सर्व शास्त्र में होय।
छन्द सर्व तिन सों बने भाखत पिङ्गल सोय ॥
मगन नगन को मित्र कहि भगन यगन हैं दास।
उदासीन ज, त, जानिये र स रिपु करत प्रकाश ॥

अथ द्विगण फल वर्णन – छप्पय।

मित्र मित्र जहँ होय सिद्धिदायक सो जानहु ।
मित्र दास के मिले विजय बहु भाँति प्रमानहु ॥
मित्र उदासी मिले सफल कारज को लेखहु ।
मित्र शत्रु के मिले परम पीड़ा तनु देखहु ॥

गनिदासदासकेमिलनसोंसकलनासआसुहिकरत।
सुभ दास मित्र के मिलन सों भव्यभाव भूतल भरत॥
दास शत्रु के मिले अजत भय दास उदासहि ।
उदासीन अरु मित्र मिले सम फल सुप्रकासहि॥
उदासीन अरु दास मिले विपदा अति आवत ।
उदासीन अरु शत्रु मिले सु विरोधहि छावत ॥
जोह्वैउदाससुउदासजुतविफलतासुफलकविकहत।
हुवशत्रुशत्रुकेमिलनसोंविभवहानिविपदाचहत ॥

दोहा।

शत्रु मित्र मिलि सून्य फल शत्रु दास प्रियनाश।
शत्रु उदासी मिलन ते होत अजय अनयास ॥५॥

अथ गण शुभाशुभ फल स्वरूप चक्र वर्णनम् ।

गण	स्वामी	फल	मास	पक्ष	तिथि	बार	नक्षत्र	वर्ण	वस्त्र	रङ्ग	भूषण	कुल	माता	पिता	लोक
मगण	भूमि	श्री	वैशा०	सित	३	रवि	मघा	क्षत्री	श्वेत	श्वेत	श्वेत	पाहन	सरस्वती	पिंगल	सत्य
नगण	दिवग	सुख	मार्ग	सित	१२	बुध	मित्र	विप्र	स्वर्ण	चित्र	स्वर्ण	क्षत्री	सावित्री	ब्रह्म	स्वर्ग
भगण	चन्द्र	यश	श्रावण	सित	५	भृगु	मूल	क्षत्री	पीत	पीत	चुन्नी	इन्द्र	मङ्गला	ऋषभ	अमरावती
यगण	जल	धनद	का०	सित	११	भौम	ज्येष्ठ	विप्र	श्वेत	श्याम	रूपा	समुद्र	धर्मी	समुद्र	पाताल
जगण	भानु	शोक	चैत्र	कृष्ण	१२	गुरु	ऊषा	वैश्य	श्याम	श्याम	मणि	दैत्य	भल्ला	कश्यप	मृत्यु
रगण	अग्नि	जारक	ज्येष्ठ	कृष्ण	२	भौम	चित्रा	वैश्य	लाल	लाल	लाल	काल	जरा	मृत्यु	संयमनी
सगण	वायु	भ्रम	पौष	कृष्ण	४	भृगु	शतभि	शूद्र	हरित	धूम्र	स्वर्ण	वायु	बुद्धि	पवन	व्योम
तगण	व्योम	शून्य	अषाढ	कृष्ण	१	बुध	स्वाति	शूद्र	नील	श्वेत	लाल	पवन	दक्षिणा	यम	स्वर्ग

अथ वर्ण छन्द वर्णन – दोहा ।

सम सु अर्ध सम विषम गनि छन्द तीन विधि जान।
उक्तादिक छब्बीस २६ लौं दण्डक अधिक बखान॥

अथ सम वृत्त वर्णन – दोहा ।

श्री स्त्री मही जु सार पुन साधु छन्द ये पाँच ।
इक है अच्चर दीर्घ लघु पिङ्गल भाषित साँच॥७॥

उक्ता ॥ १ श्रीस्ते भूयात् ॥ १ ॥ श्यामा ॥
बामा ॥ सोहै मोहै ॥ २ ॥ कथा । पथः ॥ यथा ।
तथा ॥ ३ ॥ राम । चिन्त । मोर । मिन्त ॥ ४ ॥
हर हर ॥ जप जप ॥ ५ ॥

इति अत्युक्ता ॥ २ ॥ दोहा ।

मगन १ एक जुत छन्द जो नारी ताहि बखान।
यगण होय चहुँ चरण सो शशी छन्द परिमान॥५॥
कृष्णाजी ॥ विष्णूजी । तारो जो । मोको जो ॥६॥
गुपाला । कृपाला । सु हूजै । दयाला ॥ ७ ॥

दोहा ।

रगण सहित चहु चरण है प्रिया छन्द सो देखि ।
सगन होय चहुं चरण में रमण छन्द सो लेखि॥८॥
श्रीपते । श्रीधरे । मोच्च को । दो हरे ॥ ८ ॥
हमरी । अरजी ॥ तुम तें । हरि जी ॥

दोहा ।

तगन होय चहुँ चरण में छन्द सु गनि पञ्चाल ।
नगन होय चहुं चरण सो कमल छन्द छबि जाल ॥
श्रीराम । श्रीनाम । श्रीधाम । श्रीकाम ॥ ११ ॥
करत । भजन । डरत । कुजन ॥ १२ ॥

दोहा ।

जगन होय प्रतिचरण जहँ सो मृगेन्द्र कहि छन्द ।
भगन होय चहुं चरण में मन्दिर छन्द सुकन्द ॥ १३ ॥
विशाल । रसाल । सु दीनदयाल ॥ १४ ॥
गावहि रामहिं । पावहि । धामहिं ॥ १५ ॥

इति मध्या ॥ ३ ॥ दोहा ।

मगन एक गुरु चरण चहुं कन्या छन्द विचार ।
रगण सु लघु इक चरण चहुं तरणि छन्द उर धार ॥
राधाकृष्ण । माधो केशो ॥ गङ्गा विष्णो ।
झाकी वेशो ॥ १७ ॥ देव मात । कृष्ण तात ॥
लेत गोद । मान मोद ॥ १८ ॥

दोहा ।

रगण गुरू इक चरण प्रति धारी छन्द सु देखि ।
जगण एक गुरु जुत चरण नगणिक छन्द विशेखि ॥

नन्दलाला। कंस काला। बंश पाला। हो दयाला॥ गुपाल जू। दयाल जू। कृपाल जू। विशाल जू॥२१॥

दोहा।

सगन एक गुरु चरण चहुँ विमला छन्द विचार। नगन एक गुरु चरण प्रति सतो छन्द निरधार॥

बनवारी। गिरधारी॥ अघहारी॥ तज गारी॥२३॥ शरण ले। चरण को॥ पतित के। तरण को॥२४॥

इति प्रतिष्ठा॥ ४॥ दोहा।

मगन द्वि गुरु चरणन सहित संमोहा सो छन्द। भगन द्विगुरु जुत चरण प्रति पंक्ति छन्द स्वच्छन्द॥

श्रीकृष्णा रामा॥ देवेंगे कामा॥ श्रीराधा माधो॥ आराधो साधो॥ २६॥ रामहिँ गावै, धामहिँ पावै, श्रीहरि आवै, जो चित लावै॥२७॥

दोहा।

तगन दोय गुरु चरण प्रति हरित छन्द सो लेखि। नगन दोय लघु चरण प्रति जमक छन्द सो देखि॥

चण्डी कृपाली, ह्रजे दयाली, गौरी भवानी, जै जै मृडानी॥ २९॥ करत भल, चरण मल॥ भरण जग, धरण नग॥ ३०॥

इति सुप्रतिष्ठा ॥ ५ ॥ दोहा ।

जगन होय जहँ चरण प्रति मालति छन्द बखान।
यगन होय जिहि चरण प्रति सङ्खनारि सो जान ॥

सुनो हित बात, वृथा दिन रात। भजो नँद नन्द, कटै भव फन्द ॥३२॥ भजो जो खरारी, महा मोदकारी, शिला रूप भारी, अहिल्या सुतारी॥३३॥

दोहा ।

रगन होय जहँ चरण प्रति छन्द विमोहा जानि ।
सगन होय सो तिलक कहि पिङ्गल करत बखान॥

जीभ है चाम की, झूठ के ठाम की, बान ले नाम की, तो भले काम की ॥ ३५ ॥ हरि को जु भजे, खल संग तजे, सब काज सरे, भव सिन्धु तरै ॥ ३६ ॥

दोहा ।

नगन यगन द्वै चरण प्रति पादाकुलक बखान ।
मगन होय जुत चरण सो विधु रेखा परिमान॥३७॥

हरि गुण गावौ, सब सुख पावौ। बिलम न कीजे, वय नित छीजे ॥३८॥ गोविन्दा गोपाला, केशी कंसा काला, रामा कृष्णा मीता, जो गावै सो जीता ॥ ३९ ॥

दोहा।

जगण यगण द्वै चरण प्रति तनुँमध्या सो लेखि।
तगण यगण द्वै चहुँ चरण शशिवदना सो देखि॥

रमेश-मुरारी, कलेश-विदारी, सुबाल-विहारी, भरोस तिहारी ॥ ४१ ॥ हा हा बनवारी, दीजै दुखटारी, हा हा अघहारी, मेरी अब बारी॥४२॥

दोहा।

तगण सगण द्वै चरण प्रति सुमति छन्द सो जानि।
मगण दोय प्रति चरण सो विद्युल्लेखा मान ॥४३॥

गोपाल कहिये, आनन्द लहिये, गोविन्द गहिये, सो फन्द सहिये ॥४४॥ कंसा केशी कन्दा, गोविन्दा आनन्दा, वेनी माधो चन्दा, काटो मेरे फन्दा ॥ ४५ ॥

इति गायत्री ॥ ६ ॥ दोहा।

रगण यगण गुरु अन्त इक सो प्रमाणिका छन्द।
नगण जगण इक लघु चरण वाम छन्द स्वच्छन्द॥

कृष्ण कृष्ण साधे है, कोटि पाप बाधे है।
राम राम गावे है, राम धाम पावे है ॥४७॥

सब सुख धामहि, रट मन रामहि ।
तज जग कामहि, भज हरिनामहि ॥४८॥

दोहा।

नगण सगण लघु युत चरण छन्द जानि करहञ्ज।
मगण सगण गुरु इक सहित मदलेखा गणि मञ्जु॥

इक दिवस अन्त, भज मन अनन्त, शरण भगवन्त, रहत सब सन्त॥५०॥ गोपीनाथ अराधौ माया जालहि बाधौ, श्रीकृष्ण कहु साधौ, केशौ जौ हरि माधौ ॥ ५१ ॥

दोहा।

नगण दोय इक गुरु चरण मधुमति छन्द बखान।
रगण जगण गुरु युत चरण सो समानिका मान॥

इक दिन मरण, भज हरि-चरण, अशरण शरण, रट मन धरण ॥ ५३ ॥ गोपिका कहाय के, कृष्ण को बुलाय के, मोह को भगाय के, मोद को बढ़ाय के ॥ ५४ ॥

दोहा।

दोय सगण इक गुरु चरण होय सु अति अभिराम।
छन्द समाला तेहि कहैं तासों कवि गुणधाम ॥

हरि रामदयाला ॥ प्रभु कृष्ण कृपाला ॥
विभुमाधव लाला ॥ अब होहु निहाला ॥ ५५ ॥

इति उष्णिका ॥ ७ ॥ दोहा ॥

रगण जगण गुरु लघु सहित चरन मल्लिका छन्द ।
जगण रगण लघु गुरु चरण नगस्वरूपिणी बन्द ॥
आरती उतार माय । बार बार लेहु लाय ॥
उष्ण नीर सों न्हवाय ॥ दूध भातही खवाय ॥
भजौ कृपाल राम को ॥ पयोदश्यामगात को ॥
विशाल कञ्जनैन को ॥ स्वभक्त मोद दैन को ॥

दोहा ।

भगण होय गुरु होययुत चरण चित्रपद छन्द ।
नगन होय गुरु होय युत चरण तुङ्ग स्वच्छन्द ॥
रे मन ले हरिनामै । खेद कछू नहिं जामै ।
जो सब साधन कीनै, सो इक नामहि लीनै ॥
परम धरम सोहै, रघुबर यश मोहै । हरषि हरषि
गावै । चरण शरण आवै ॥ ६२ ॥

दोहा ।

जाकी चारहु चरन में पञ्चम लघु है वर्न ।
पद्म छन्द सो जानिये पिङ्गल कहत सुवर्न ॥६३॥

गोकुलपति कंसारी । यादवेन्द्र तेरी बली ।
पूतनाप्राण-संहारी । कीजै मोपै दया भली ॥

दोहा ।

मगण दोय गुरु दोय जहँ विद्युन्माला लेखि ।
जगण रगण लघु गुरु चरण सो प्रमाणिका लेखि ॥

रामा कृष्णा श्री लाला जी, कंसा केशी के काला जी । जै जै विष्णो गोपाला जी, राधा माधौ श्रीपाला जी ॥ ६६ ॥

गहौ गहौ दयाल को, कृपाल नन्दलाल को ।
भजौ भजौ गुपाल को, सदा जपो निहाल को ॥

दोहा ।

नगण सगण लघु गुरु चरण पद्म छन्द जग जान ।
जगण सगण लघु गुरु जहां कुमार ललिता मान ॥

यह मति गहो गहो, शरणन रहो रहो ।
सब सुख लहो लहो, शिव शिव कहो कहो ॥

रटो जु नँद नन्द को, तजो जु भव फन्द को ।
हरो जु दुखद्वन्द को, भजो जु सुखकन्द को ॥

दोहा ।

भगण तगण लघु गुरु जहां माणवकहि सुछन्द ।
मगण रगण है गुरु चरण श्लोक छन्द स्वच्छन्द ॥

गोविंद भूपाल कहै, सो सुख है लाल लहै ।
जो मन श्रीराम गहै, सो नर आनन्द रहै ॥७२॥
ज्ञानी ध्यानी गुरू मानी, त्यागी रागी सदा वानी ।
कीनी मेरी भली बानी, मीठी सानी कला आनी ॥
भगण रगण दो दो लघू विपुला छन्द विशेखि ।
तगण होय लघु गुरु सहित द्वितिय सु विपुला लेखि ॥
गोकुल चन्दनायज, शीतल शीतला सज ।
गोविंद गोपिका भज, दूषण दोष को तज ॥
दाता दयाला कहु रे, गोपी कृपाला गहु रे ।
पाओ उनी कि रहु रे, राधा गुपाला गहु रे ॥७६॥
रगण तगण दो गुरु चरण विपुला तृतिय जान ।
रगण भगण लघु गुरु चरण चतुरथ विपुला मान ॥
कृष्ण तू बंशी बजावे, यों न तेरी टेव जावे ।
गाय के मोको रिझावे, एक ना मेरो बसावे ॥
गोकुलाधीश अयने, माधवा नन्द दयने ।
शेषजी सिन्धु शयने, सेइये पद्मनयने ॥ ७८ ॥

दोहा ।

लघु है जहँ सप्तम वरण पञ्च विपुला लेखि ।
मगण नगण लघु गुरु चरण ईस कृत सुतिहि देखि ॥

मैं ताको तीको है हरी, तू ताके येकी ना घरी।
मेरे जाने ऐसो परी, तैं जो में निर्दाया धरी ॥
गोविन्दा चरण गहे, आनन्दा परम लहे।
गोपाला शरण रहे, पापों को सकल दहे ॥८२॥
जगण तगण दो गुरु चरण छन्द वितान विशेख।
पञ्चम सप्तम वर्ण लघु छन्द नाराच सु देख॥८३॥
भजो भजो राम को रे, कहो कहो श्याम को रे।
गहो गहो कृष्ण को रे, रटो रटो विष्णु को रे॥
साधो दयाल सोहना, माधो कृपाल मोहना।
रामा भुआल छोहना, छांडू कदापि तोह ना॥
इत्यनुष्टुप् ॥ ८ ॥ दोहा।
तीन रगण ह्वै चरण प्रति महालक्ष्मी छन्द।
नगण यगण ह्वै सगण जहँ सारङ्गिक स्वच्छन्द॥
राम के नाम को देख ले, आपनी बात को पेख ले।
चामकीदेहकोकामको,मानलेवानलेरामको॥८७॥
मन कहरे यादव को, वह सुख देवे सब को।
भज मन राधा माधव को, कहत न राखे भव को॥
दोहा।
मगण भगण है सगण युत प्रथिता छन्द बखान।
नगण होय ह्वै सगण इक कमला छन्द प्रमान॥

माधौ यादौ गिरधर को, केशो कृष्णा हरिहर को।
साधौ सन्तौ भज प्रभु को, तो पावेंगे सुख विभु को॥
अरुण चरण गहिये, जनम मरण रहिये।
रघुवर यश कहिये, तबहि कछुक पहिये॥ ८१॥

दोहा।

नगण सगण है यगण युत चरण बिम्ब मो छन्द।
तीन मगण है चरण प्रति रूपमालि सुछन्द॥८२॥
सुजन जन के बिहारी, सकल जन चितहारी।
बिबुध मन मोदकारी, हरहु बिपदा हमारी॥८३॥

गोपी कृष्णा केशो आराधो, माया जञ्जाला साधो बाधो। माधो यादौ रामा कंसारी, धावो गावो छांड़ो संसारी॥ ८४॥

दोहा।

मगण तीन युत चरण चहुँ छन्द मृगनि मणिबन्धु।
तीन नगण है चरण प्रति कुमुद छन्द कवि बन्धु॥
दीनदयाला माधव को, भक्त कृपाला यादव को।
नन्द गुपाला राघव को, देव जँजाला बाधव को॥
चरण सरसिज पर, चतुर चर सुख भर।
दनुजपति पुरजल, रटत गुणगण भज॥ ८७॥

दोहा ।

रगण नगण पुन सगण जहँ हलमुखि छन्द बखान ।
नगण दोय इक मगण युत भुजग शशिभृता जान ॥
धीर ना धरत ललना, नेकहू परत कल ना ।
होत बन्द न उछलना, सोवती न यह पलना ॥
अरुण चरण को ध्यावौ, कमल नयन को गावौ ।
पद्म पद्न को मानौ, जपतप तिसको ठानौ ॥

इति बृहती ॥ ८ ॥ दोहा ।

नगण जगण पुन नगण है गुरु सु अमृत गति छन्द ।
सगण जगण फिर जगण गुरु संयुक्त गनि स्वच्छन्द ॥
रघुबर गोविंद भजिये, खलन कुसङ्गति तजिये ।
नित सतसङ्गति करिये, भवभय सिन्धुहि तरिये ॥
नँद नन्द गोकुल साँवरे, मम चित्त भीतर आव रे ।
रघुनन्द सुन्दर गाव रे, नहि बारबार मुदाव रे ॥

दोहा ।

भगण मगण पुन सगण गुरु चम्पकमाला लेखि ।
भगण तीन गुरु युत जहाँ सारवती सो देखि ॥४॥
कंस निकन्दा केशव कृष्णा, वांमन माधौ

मोहन विष्णा। आनन्दकन्दा यादवचन्दा, का-
टहु मेरे भौ भय फन्दा ॥ ५ ॥

आदि अनादि विपत्ति भयं, काटत मोह विषाद मयं।
राम रमापति ज्ञानचयं, जारत पाप सुदेत जयं ॥

दोहा।

तगण यगण अरु भगण गुरु बामा छन्द बखान।
मगण भगण अरु सगण गुरु मत्ता छन्द प्रमाण॥

रामा कहना धामा रहना, नामा जपना कृष्णा कहना। साधो शरणा माधो चरणा, गावौ सुजना गाधा हरना ॥ ८ ॥

मोमे होवे अवगुण कोई, काटो केशो सुमिरहुँ तोई। रामा कृष्णा प्रभु कह जोई, होवे ऊँचा सब पर सोई ॥ ९ ॥

दोहा।

मगण सगण अरु जगण गुरु शुद्धविराट बखान।
मगण नगण पुन जगण गुरु पणव छन्द परिमाण॥

आनन्दामय पूतनाअरी, कुब्जा को अति सुन्दरी करी। साधौ के हित आपदा टरी, मेरे सङ्कट काट दो हरी ॥ ११ ॥

पूर्णानन्दहि हित जो भजै, देवाधीशहि मन सों सजै। क्रोधै कामहि छिन में तजै, ताकी श्री घर पटहा बजै ॥ १२ ॥

दोहा।

रगण जगण पुन रगण गुरु मयुर सारिणी छन्द।
तगण जगण है जगण गुरु उपस्थिता स्वच्छन्द ॥

दीनबन्धु दीनबन्धु रामे, रामचन्द्र रामचन्द्र नामे।
कृष्णचन्द्रकृष्णचन्द्रधामे, कीजियेसदासदाप्रणामे॥

वीरा करुणाकर सागरं, धीरा कमलापति आगरं।
वंशीधर वामन नागरं, धाता धन धाम उजागरं ॥

दोहा।

भगण तीन दो गुरु चरण दोधक छन्द बखान।
रगण नगण अरु भगण गुरु है गङ्गाधर जान ॥१६॥

पूरण पावन केशव चन्दे, श्रीधर वामन कौतुक कन्दे। जो रघुनन्दन में चित दीजे, तो जग जीत भलो यश लीजे ॥ १७ ॥

राम राम रघुनन्दन देवा। कृष्णचन्द मम मानहु सेवा॥ जीभ राम भजु पङ्कजनैना। आदि अन्त मधि पावत चैना ॥ १८ ॥

दोहा।

नगण जगण पुन जगण लगु, होय सुमुखि सो छन्द।
नगण तीन लघु गुरु चरण, मदन जानि स्वच्छन्द॥

रघुबर राम मुकुन्द लला। दशरथ नन्दन चन्दकला॥ भज मन श्रीहरि छाँड़ छला। बिगड़त क्या मन तोर भला॥ २०॥

परम धरम-धुज अयनं। जलनिधि जलकृत शयनं।
अमल कमल दल नयनं। भज मन सब सुख दयनं॥

दोहा।

रगन जगन पुन रगण लग, गुरुश्येनिका छन्द।
मगण तगण है गुरु जुगल शालिनि गन स्वच्छन्द॥

दीनबन्धु दीनबन्धु श्याम रे। मानुषी शरीर कौन काम रे॥ रामनाम जाप आठ याम रे। बोल राम राम राम राम रे॥ २३॥

गोविन्दा गोपाल राजेन्द्र रामा। राघो बंशी दीन के होत कामा। केशो काला भक्त ले तोर नामा। पावै आऊं राम धामै मचामा॥ २४॥

रगण नगण पुन रगण लग, छन्द रथोद्धत जान।
रगण नगण अरु भगण गल, स्वागत छन्द बखान॥

माधवा हरि बली विभो बशी । सन्तदास जन के हृदै बशी ॥ लोकपाल प्रभु रूप के शशी, दीन जान विपदा भली नशी ॥ २६ ॥

भानुवंश हरि राम धनेश, कौशलातनय बीर दयाल । बीर रूप अवतार फणेश, जानकी रमण होहु दयाल ॥ २७ ॥

भगण तगण अरु नगण है गुरु छै मौक्तिकदाम ।
रगण नगण पुन गभण लघु गुरु हरिरूप प्रकाम ॥

दीनदयाला हरिहर स्वामी । हो सब के अन्तर घटयामी ॥ जान कृपाला बहुबिधि कामी । मो तन देखो प्रभु हरिनामी ॥ २८ ॥

लङ्कनाथ निज मन्दिर गयो । देखि भ्रात अधिको को दुख भयो ॥ वारि वृष्टि हित आयसु दई । मेघ-वृन्द सुन भल्लक लई ॥ ३० ॥

दोहा ।

नगण भगण अरु तगण है गुरु कहि धीरा छन्द ।
मगण भगण अरु तगण दो गुरु वा तोर्मि अनन्द ॥

परम उत्तम धामे करोगे, कब हमें तुम चित्तधरोगे।
हरिप्रभूकबमीपैढुरोगे, कबसभीविपदाकोहरोगे ॥

हे गोविन्दा अघनाशी बिहारी, हे गोपाला व्रजबासी मुरारी, हे आनन्दा जगदीशा महाशी, कीजे सो मोर न होवे जु हासी ॥ ३३ ॥

दोहा ।

मगण भगण अरु नगण लग भ्रमरविलसिता नाम।
नगण दोय ह्वै सगण इक गुरु है हंसा दाम ॥३४॥

राधा कृष्णा सब दुखहरना, साधो सन्तो रघुपति चरणा, ऊधौ माधौ हरि हरि करना, तौ तो होवे सब विधि तरना ॥ ३५ ॥

भवभय अघहर दातारा, सुखकर हिय-चर बर्त्तारा, तुम विभु सब जग कर्तारा, तुमहि करत दुख हर्तारा ॥ ३६ ॥

नगण दोय इक रगण लग कहैं भद्रिका छन्द ।
जगण सगण ह्वै तगण गुरु है सु उपस्थित छन्द ॥

नरवर प्रभु लोक नायकं, सुरवर अज मोक्ष दायकं, हरि बिभु परमेश मायकं, भज मन नित सन्त भायकं ॥ ३८ ॥

हरे धरमधारी मोक्ष दाता, विभू करम धीशा

सन्त त्राता, प्रभू सुजन मोदी वीर भाता, सदा भजन तेरो मोहि भाता ॥ ३६ ॥

दोहा।

नगण रगण पुन रगण लग छन्द इन्दिरा जान।
तगण होय फिर जगण गग इन्द्रवज्र सो मान ॥

परम सोहना वीर धीरता, हरहु दीन के दुःख पीरता। धरम धाम के हेत वीरता, बकहि दुष्ट की चोंच चीरता ॥ ४१ ॥

गोविन्द गोपाल मनो-बिहारी, श्रीराम ब्रह्मादिक दुष्प्रहारी। भक्तानुकम्पा चित वृत्तधारी, त्रैलोकनाथाय नमो मुरारी ॥ ४२ ॥

दोहा।

जगण तगण पुन जगण गुरु है सु उपेन्द्रावज्र।
इन्द्रवज्र मिलि सो रहै भेद उपेन्द्रावज्र ॥ ४३ ॥

मुकुन्द गोपाल हरे मुरारी, स्वभक्त विज्ञान विनोदकारी। अनेक ब्रह्माण्ड सृजादि कर्त्ता, अशेषजन्मार्जित पाप हर्त्ता ॥ ४४ ॥

इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा मिलाकर १६ छन्द होते हैं उनके उदाहरण और प्रस्तार नीचे लिखे जाते हैं और उससे आदि गुरु की जगह इन्द्रवज्रा और आदि लघु की जगह उपेन्द्रवज्रा समझ लो यथा प्रस्तार—

१	SSSS	इन्द्रवज्रा
२	ISSS	कीर्त्ति
३	S SS	वाणी
४	IISS	माला
५	SSIS	शाला
६	IS S	हंसी
७	SIIS	माया
८	IIIS	जाया
६	SSSI	बाला
१०	ISSI	आद्रा
११	SISI	भद्रा
१२	IISI	प्रेमा
१३	SSII	रामा
१४	ISII	रिद्धि
१५	SIII	सिद्धि
१६	IIII	उपेन्द्रवज्रा

कीर्त्ति छन्द ।

मुकुन्द राधारमणे उचारो, श्रीराम कृष्णा भजिये सवारो । गोपाल गोविन्द हितै पसारो, ह्वैहै तबै सिन्धु-भवे उबारो ॥ १ ॥

वाणी छन्द ।

श्रीरामकृष्णा भजतो आनन्दा, अनेक बाधा पल में निकन्दा । संसार सिन्धू तरिहै अमन्दा, होवे कभी ना यमराज फन्दा ॥ २ ॥

माला छन्द ।

कुटुम्ब-माला अतिही जँजाला, न राख मोहा बस तेउ जाला । फन्दा परौ तोहिँ यहै विशाला, याते सदाही भज ले गुपाला ॥ ३ ॥

शाला छन्द ।

पीवो करो प्रेमरसै ब्रजेशा, गायो करो नाम सदा दिनेशा । गोविन्द गोपाल भलौ सु वेषा, ध्यायो करै जाहि नितै सुरेशा ॥ ४ ॥

हंसो ।

मुरारि कंसारि मुकुन्द श्यामे, गायो करै

प्रेमहि जाम जामे। यही उपाये तरिहै सकामे,
पैहै भली भाँतिहि दिव्य धामे ॥ ५ ॥

माया छन्द।

राधा रमा गौरि गिरा सु सीता, बूझे बिचारे
नित नीत गीता। कटै अपारे अघ ओघ भीता,
ह्वैहै सदा तोहि भला सुबीता ॥ ६ ॥

जाया छन्द।

भजौ भजौ रामहि राम भाई, वृथा चबै बैस
सु जात धाई। करौ करौ साधन साधुताई,
बाधौ उपाधी जग की जु छाई ॥ ७ ॥

बाला छन्द।

राखौ सदा शम्भु हिये अखण्डा, बाधौ सबै
शूरतनै जु दण्डा। धरौ बिभूती तन चक्र मण्डा,
नशै सबैई अघ ओघ चण्डा ॥ ८ ॥

आद्रा छन्द।

करौ कभी ना गरबै न मोहा, कामै बिनासो
इन लोभ कोहा। राखो अदम्भौ मन प्रेम-पोहा,
हरी हरी भाखि करौ सु दोहा ॥ ९ ॥

भद्रा छन्द ।

साधो भले योग नखे बढ़ाओ, खड़े रहो क्यों न त्वचै पचाओ । टीके सु छापे बहुतै लगाओ, वृथा सबै जो हरि को न गाओ ॥ १० ॥

प्रेमा छन्द ।

पुराण गावें नितही अठारे, श्रुतीन बेहो हँस के उचारे । एकै जगत् जोति भले प्रकारे, कहूँ न पावै तिहिं को जु पारे ॥ ११ ॥

रामा छन्द ।

गोपीन लेके बन को सिधारै, बंशी बजावै मनु बाण मारै । लिये छड़ी फूल-गुथी अपारे, बंशी बहै मोसन के निहारे ॥ १२ ॥

ऋद्धि छन्द ।

गुपाल कान्हा घनश्याम वेई, गोविन्द नारायण राम जेई । अनन्तनामै तिनकी जगेई, भजै जिनोंने सहजै तरेई ॥ १३ ॥

सिद्धि छन्द ।

कुब्जी उबारो गणिका सु तारी, अजामिलै

तार दियो मुरारी । कियो तिन्होंने बहु पाप भारी, तरे सबेही शरणै तिहारी ॥ १४ ॥

इति त्रिष्टुप ॥ ११ ॥ दोहा ।

चार यगण को छन्द सो गनौ भुजङ्गप्रयात ।
भगण चार को छन्द सो मोदक कहि अवदात ॥

भजेहं गुरुं श्रीहरिं श्रीनिवासं, विरंच्यादि सर्वेश्वरं स्वप्रकाशं । नमो राम रामानुजं भाष्यकारं, यतीन्द्रं फणाधीशशेषावतारं ॥ ४६ ॥

माधव केशव गोकुल नाथहि, श्रीरघुनाथ भजो धनु हाथहि । जो रघुनन्दन सो मिल बेगित, तो जगवन्दन होय महा हित ॥ ४७ ॥

दोहा ।

जगण चार जा छन्द में मोतीदाम सु लेखि ।
रगण चार सो शृङ्गिनी पिङ्गल कहत विशेखि॥४८॥

भजो मन कृष्ण गुविन्द गुपाल, कृपाल रसाल सु दीनदयाल । मनोहर मोहन सोहन श्याम, सदा शरणागत पूरण काम ॥ ४९ ॥

राम गोपाल गोविन्द माधो कहो, नाम को

एक विश्वास गाढ़ो गहो। भक्ति सो साधु के सङ्ग ही में रहो, मानुषी जन्म को पाय लाहो लहो॥

दोहा।

सगण चार जा छन्द में तोटक ताहि बखान ।
तगण चार जामें लखो मैनावली प्रमान ॥ ५१ ॥

मन रे भज श्रीरघुनन्दन को, जगवन्दन को दुखकन्दन को। रघुनायक को सुखदायक को, खलघायक को सबलायक को॥ ५२ ॥

हस्तौ भलो जो करै धर्म्म के काम, कर्णों भलो जो सुनै श्रीगुण-ग्राम। नैनो भलो कृष्ण शोभा लखै श्याम, जिह्वा भली जो कहै राम के नाम॥

दोहा।

न य न य जामें चरण प्रति कुसुमविचित्रा जान।
तीन तगन इक मगण सो सारङ्ग छन्द बखान॥

हरि भज नारायण भगवन्ता। जिहि जस गावै सुर मुनि सन्ता॥ विधि शिव जाके पद शिर नावै। तन मन अर्पै सब सिधि पावै॥ ५५ ॥

माधो मुरारी बली पूतना मारी। यादी कृपाला

महा रूप विस्तारी ॥ गोपाल गोविन्द श्री कंस कंसारी। केशो कृपासिन्धु मो पाप संहारी॥५६॥

दोहा।

चार नगण प्रति चरण में तरलनयनि सो छन्द।
नगण भगण है रगण इक द्रुत विलम्ब स्वच्छन्द॥

कलुष हरण हरि अघहर। कमल नयन कर गिरधर॥ सुजन करन सुख रघुबर। भजन करहु नित चित कर॥ ५८॥

गरुड़वाहन वामन विष्णु जू। मदनमोहन माधव कृष्ण जू॥ प्रणत पालन केशव राम जू। कस न देत परम्पद धाम जू॥ ५७॥

दोहा।

सगण जगण फिर दो सगण प्रतिमाच्चर.सो जान।
मगण दोय फिर यगण है वैश्व देवि सो मान॥

सब छोड़ भक्तजन राम रटै। हरि राम साध शत पाप कटै॥ प्रभु कृष्ण बोल त्रय ताप घटै। रघुराज मोद सुख देत झटै॥ ६१॥

राधा कृष्णा रामा हरी बीर धारी। माधौ

बिष्णू केशी अघासूर मारी॥ याही बंशीधारी बको नीच तारी। मेरो बाधा तेरे बिना कौन हारी॥

दोहा।

तगण होय द्वै जगण पुन रगण इन्द्रबंशाहि।
जगण सगण जगणो सगण जलोद्धता सो चाहि॥

राधा बियोगी नररूप धारिकै। रामा मुरारी अघ केशि मारि कै॥ कृष्णा मुरारी बक चोंच फारि कै। हीन्हें हमारे सब पाप तारि कै॥६४॥

करो अब विशोक राम मुझ को। अशेष हरि हूं दयाल तुझको। लगे नित जजाल श्याम मुझको। परे अब विहार ने जु तुझको॥६५॥

दोहा।

तगण यगण तगणौ यगण मणिमाला सो छन्द।
तगण भगण जगणौ रगण सुललित सो स्वच्छन्द॥

मेरी सुनि बोले नाहीं पति राधा। को और निवारे मेरी हरि बाधा॥ मैं तो तुम को चाहों अन्तर साधा। तारो हमको पारो कूप अगाधा॥

सोहै बसन्त अलि आज लाल के। गोपी मुख

लगि गुलाल लाल के ॥ बाजि मृदङ्ग धुनि छाय के रही । गावे नचे मुनि सबै सु मै कही ॥ ६८ ॥

दोहा ।

रगण चार है चरण प्रति कामिनिमोहन छन्द ।
नगण जगण है यगण जहँ तामरसहि स्वच्छन्द ॥

राधिका मोहने नन्द के बालको । गोपिका वल्लभे कंस के घालको ॥ रोहिणीनन्दने दीन के पाल को । गाय ले प्रीति सो जान के माल को ॥

तिन तब जाय अनेत निहारी । हय गज स्यन्दन की छवि भारी ॥ सब विधि देख बनाव अनूठे । सुरपुर साज लगे जिय झूठे ॥ ७१ ॥

दोहा ।

रगण नगण भगणै सगण चन्द्र मग सुगणि छन्द ।
जगण तगण जगणै रगण वंशस्थहि स्वच्छन्द॥७२॥

गर्जि तर्जि रथ ऊपर बरषे । वारि वृष्टि तनु आतप करषे ॥ चेल पाय रजनीचर गरजो । बेग भालु कपि को दल तरजो ॥ ७३ ॥

हरे मुरारी हर लोक पावना । दया प्रचारी

रघुनाथ भावना ॥ विभू बिहारी सब देत कामना।
भजौ सवारी सुर देव चामना ॥ ७५ ॥

दोहा।

नगण होय मगणै यगण भाषतपुट सो छन्द ।
नगण होय रगनै सगण प्रमुदित बदन अनन्द ॥

भवभय हरिहै सो तू दयाला । शुभ चित करिहै सो तू गुपाला ॥ मन सुख धरिहै सो तू कृपाला । अब हमहि करैगो तू निहाला ॥७६॥

अशरण शरणा सुनौ इतनी। कलिमलहरना करौं बिनती ॥ भव अघ दलना कहौं इतनी। हम हित जहि का भयौ मनती ॥ ७७ ॥

दोहा।

नगण भगण जगणै रगण प्रियम्बदा सो जान ।
नगण होय भगणै रगण उज्वल छन्द बखान॥७८॥

तुरतही करत मान खण्डना। दनुज नाश कर सन्त मण्डना ॥ अधिक शोकहर लोक सोहना। परम सुन्दर त्रिलोक मोहना ॥ ७९ ॥

कमलनयन पावन राम को। जलधिशयन

गोकुलधाम को ॥ सुगतिकरन मोहन श्याम को।
भजन करहु सोहन नाम को ॥ ८० ॥

दोहा।

मगण भगण सगणै मगण जलधर-माला छन्द ।
नगण जगण भगणै यगण बनमालिक स्वछन्द ॥

माधौ यादौ यदुपति केशीकन्दा। रामा धामा सुरपति मोतीचन्दा ॥ कृष्णा विष्णा भुवपति पूता नन्दा। देवो मोको कर गहिकै आनन्दा ॥

रघुपति दीनबन्धु मम स्वामी। निजपद प्रीति देहु प्रभु नामी ॥ हर करि घोर अंश अविवेकू । कब करिहो हमार सुधि नेकू ॥ ८३ ॥

दोहा।

नगण दोय पुन रगण है प्रभा छन्द परिमान ।
भगण मगण, है सगण यह ललना छन्द बखान॥

मधुरिपु मधुसूदना माधवा। हरि प्रभु अज बामन साधवा ॥ सब जग मुखमें सनौ यादवा। तुम सब दुख के अहौ बाधवा ॥ ८५ ॥

प्रीतम पूर्णा धामहि जान भलै। केशिय हन्ता

कृष्णहिँ नन्दलले ॥ यादववंश नाशक दुष्ट खलैं ।
ध्यावहु गावो तो बहु पाप दलै ॥ ८६ ॥

इति जगती दोहा ॥ १२ ॥

मगण तगण यगणै सगण गुरु इक माया * छन्द ।
सगण चार इक गुरु चरण तारक गणि स्वछन्द॥

माधौ यादौ मोहन अन्ता भगवन्ता । रामा कृष्णा भक्त-अनन्दा सुख सन्ता ॥ बीरा धीरा श्यामशरीरा बकहन्ता । श्री के कन्ता ज्ञान अनन्ता मनवन्ता ॥ ८८ ॥

यदुवंश प्रभू अव नाश हमारे । हम होवत हैं अब दास तिहारे ॥ सधना कुबजा कबिरादिक सारे । भवसागर तें अपने कर तारे ॥ ८९ ॥

दोहा ।

भगण नगण है जगण लघु एकावली सु छन्द ।
तगण भगण सगणै जगण गुरु सु प्रभावति छन्द॥

सोहन रदन कृपाल ब्रकोदर । मोहन मदन-मनोहर सुन्दर ॥ दानवदलन दयाल दमोदर । देहु अभयपद रामसहोदर ॥ ९१ ॥

* इसे मत्तमयूर भी कहते हैं ।

माधौ हरि धरणि धरो कृपा करो। यादो दया करण अघासुरी अरी॥ बंशीधरी तन-मन गोपिका हरी। कीनी भलो गिरधर कूबरी वरी॥

दोहा।

मगण नगण जगणी रगण गुरु प्रहर्षिणी जान।
भगण नगण है जगण लघु चम्पकमालिका मान॥

तोको पाप दह सु आपनो बनाऊँ। तोको हौं यदुपति दीनता जनाऊँ॥ तोको हौं निशि दिन प्रीति सो मनाऊँ। तोको हौं प्रभु दुख आपनो सुनाऊँ॥ ९४॥

यों उर धर अघ औगुण मूरति। नैन कपट-जल शोक विसूरति॥ मौन भरथजननी नहि सापिन। आतुर विलख गई अनुगामिन॥९५॥

दोहा।

सगण जगण है है गुरु मंजुभाषिणी जानि।
यगण मगण है रगण गुरु चंचरीक बलि मानि॥

कृतवीर्य्य सून हठ एक सों अरो। बलि लोकपाल कुल एक को धरो॥ पितु काँख एक प्रविशो अनन्द सों। तुम कौन तात दशभाल ब्रन्द सों॥

हरे माधौ यादौ बामना पूतनारी । प्रभू कृष्णा विष्णा कंस के प्राणहारी ॥ विभू रामा सीता दास के मुक्तकारी । कला शोभा धारी कूबरी दीन तारी ॥ ९८ ॥

दोहा ।

जगण भगण सगणै जगण गुरु रुचिरा सो छन्द ।
नगण होय मगनै जगण गुरु सु छमा स्वछन्द ॥

भजौ भजौ मन अघओघ-भंजनै । रटौ रटौ मन दुखदोष-गंजनै ॥ कहौ कहौ मन हरि नेत्र-कंजनै । गहौ गहौ मन तुम भक्तरंजनै ॥१००॥

रघुबर अबिनाशी को सुधार रे, प्रभुपद मन में नीके बिचार रे । हरि यश हिय में निश्चै सँभार रे, विभु अज अब तेरो का बिगार रे ॥१॥

दोहा ।

नगण होय तगणै रगण गुरु इक प्रति पद जान ।
छन्द चन्द्रिका जान सो पिंगल करत बखान ॥

परम पुरुष गोविन्द बामना जू, जगत विदित तू होय आपना जू । सकल भवन को पूर कामना जू, विपतहरण को तोहि भावना जू ॥

इति अति जगती ॥ १२ ॥ दोहा ।

तगण यगण सगणै तगण लघु है सुखदा छन्द ।
भगण तीन नगणै जु लग चक्र विरति स्वच्छन्द॥

माधो हरि गोपाल सु जै जै श्यामघन, केशीबक चाणूर, निपाती बीर रण। बंशीबट के बीच लता की ओट छन, टेरे सब गोपाल सु बंशी बाजहन ॥

माधव चतुर सुखद हरि गइये, केशव कमल-नयन हिय कहिये । मोहन अरुण चरण गहि रहिये, फेर न भवनिधि परि दुख सहिये ॥ ६ ॥

दोहा ।

तगण भगण है जगण गग सो वसन्ततिलकाहि।
तगण भगण है जगण गल हरिलीला कहि ताहि।

गोविन्द राम मधुसूदन जू मुकुन्दा, आनंदकंद जगवन्दन श्री अनन्दा । सर्वज्ञ ईश शरणागत मोदकर्ता, ब्रह्मादि कीट परयन्त सु विश्वभर्ता॥

देखे समीरसुत अंबक-नीरजात, धाये विलोकि परमाकुल राम-गात । लीने उछंग भरि सादर कण्ठ लाय, पोषे समोह निज छोर सुधा पिवाय॥

दोहा।

मगण तगण नगणै सगण दो गुरु सो सम्बन्ध।
नगण दोय रगणै सगण लग अपराजित सन्ध॥

आनंदाकंदा यदुबरकुल के चन्दा, काटौ माधौ मोहजनित यम के फंदा। गोविन्दा रामा ब्रजपति हरि आनंदा, श्री ईशा-धीशा गिरिधर भजु सानन्दा॥ ११॥

गिरवरधर गोकुला भवना हरी, तुव दरशन से बकी गति ले तरी। बिपतिहरण कृष्ण जू करुणा-धरी, हम हित यहि योग ना खल के अरी॥

दोह।

नगण दोय भगनै नगण लग प्रहरण कलि जान।
भगण जगण सगनै नगण इन्दुवदन गग मान॥

नरवर प्रभु मोहन गिरधर जू, जगत विदित माधव रघुबर जू। शुभगुणयुत केशव सुखकर जू, तुम बिन नहिं कोइ जु दुखहर जू॥१४॥

श्रीपति हरी सुखकरी मगनमूर्ती, गोपति विभू गिरधरी अमृत पूर्ती। भूपति प्रभू दुखहरी हरण शूला, तो बिन भजे मन सदा फिरत भूला॥

दोहा ।

जगण सगण मगनै भगण है गुणि मुनिविश्राम ।
लीला नामक छन्द यह बरणत बुध गुणधाम ॥

हरो परम शीला कौशल्यासुत रामा, प्रभू करणक्रीड़ा संसारी किय कामा । विभू धरणि धर्त्ता दीनानाथ अनामा, रटें हम तुमारे नामों को रहि धामा ॥ १ ॥

इति शक्करी ॥ १४ ॥ दोहा ।

रगण जगण रगणै जगण रगण सु चामर हाल ।
भगण जगण सगणनगण रगण सुगणि निशिपाल ॥

मोह-पाश काम काल आज काट दीजिये ।
दीन जान पाप-जाल नाथ दूर कीजिये ॥
वंश-पाल हंस-चाल लोक शोक छीजिये ।
धाम ते गुपाल आय मोर सोध लीजिये ॥
धीर धर बीरबर तोर गुन गाइये ।
राम नरसिंह प्रभु कृपा धन पाइये ॥
श्याम-तन भक्त-मन बीर-धन पाइये ।
आदि मधि अन्त मुख फेर कित जाइये ॥

दोहा।

सगण दोय जगणौ भगण रगण छन्द मनहंस।
नगण चार इक सगण युत शरभ छन्द अवतंस॥

हरि दीनबन्धु कृपाल पीतम पाइये।
सब छोड़ रे मन धन्ध मोहन धाइये॥
प्रभु रामचिन्द्र दयाल में चित लाइये।
रघुवंश आनन्दकन्द के पद गाइये॥

अमल कमल दल सुभग सुनयनी।
बिमल शरद शशि-मुख पिकबयनी॥
जलधि अमलमय हरि सँग शयनी।
हरहु सकल दुख भगवन-अयनी॥

दोहा।

पञ्च सगण प्रति चरण में भ्रमरावली सु लेखि।
नगण दोय पुन मगण है यगण मालिनी देखि॥

करुणानिधि कृष्ण कृपाल कृपा करिये।
मनमोहन माधव मो दुख को हरिये॥
कमलापति बामन राम दया धरिये।
चित दै भव से हमको अब के तरिये॥७॥

भज हरि बनमाली साधु तोषैकसाली, सकल जगत कर्त्ता कंसकालीय कालो । रघुबर भगवन्ता राक्षसानीकहर्त्ता । खलदनुज-प्रहर्ता सन्त आनन्द कर्त्ता ॥ १० ॥

दोहा ।

नगण जगण भगणे जगण रगण प्रभद्रक छन्द ।
नगण जगण है नगन पुन यगण सुरेला छन्द ॥

रघुबर आज मात पितु छाड़ के गये ।
अवधपुरी में दुःख द्वन्द आय के छये ॥
जगत कहै भलि कुयश कैकई लये ।
हम सब शोक के विपिन आजते भये ॥
रघुबर सो जगतहित करण को रे ।
फणिपति सो विपति दुखहरण को रे ॥
मन-सुख सो सुअशरण शरण को रे ।
हरि विभु सो भज अभय करण को रे ॥

दोहा ।

मगण रगण मगणै यगण यगण चरण प्रति होय ।
छन्द चन्द्रलेखा कह्यो पिङ्गल फणपति सोय ॥

जै गोविन्दा करै आनन्दा बलाधीश रामा, जै गोपाला बनै भूआला बसै नन्द धामा । जै कंसारी हरी संसारी भजो आठ यामा, होगा तेरा भला जो जी में जपै राम नामा ॥ १५ ॥

दोहा ।

रगण जगण रगनै जगण रगण अन्त लघु जान ।
चरण चरण प्रति होय सो छन्द चञ्चला मान ॥

धाम सो गुपाल आय चाव सो दुहाति धेन, सीस पाग मुक्तमाल लालहौ सरोजनैन । रुक्म दोहनी सु अंश पाटनैतिका रसाल, देख कै अनूप रूप गोपिका भई निहाल ॥ १७ ॥

दोहा ।

जगण रगण जगणै रगण जगण गुरू इक अन्त ।
यही पञ्चचामर कहै है नाराचल सन्त ॥ १८ ॥

सुपात्र औ कुपात्र को विचार दान दीजियै, सुकर्म औ सुधर्म में सु नित्त चित्त दीजियै । कुसंग को बिसार साधु संग रङ्ग भीजियै, सदा मुकुन्द विष्णु रामकृष्ण नाम लीजियै ॥ १९ ॥

दोहा।

भगण रगण चै नगण गुरु विलसित छन्द प्रमान।
नगण जगण भगणै जगण रगणग वाणिनि जान॥

मोहन मूर्त्ति धाम विपति हरण हमरे, सोहन-चन्द्र राम शरण रहहि तुमरे। पूरण वीर श्याम तुम जग विदित हरे, जो तुमरो करे भजन भव जलधि तरे॥ २१॥

रघुवर पारमेश जन के मनो निवासो, दशरथ पुत्र पावन महा प्रभू हुलासो। जन मन प्रीति-दायक सदा सुखाभिलाषी, अब कर दीजिये अभय नाहि होत हासी॥ २२॥

इत्यष्टी॥ १६॥

मगण भगण नगणै तगण तगण और गुरु होय।
मन्दाक्रान्ता छन्द है पिङ्गल भाषत सोय॥ २३॥

दीनानाथा सकल अघनाशाय औतार लीनो, गोपीचन्दा नरवर वपू माधवाताय होनो। कंशी कन्दा सुजन सुखदा तातको मुक्त दीनो, मोको तारो गिरधर प्रभू पाप ने वास कीनो॥ २४॥

दोहा।

नगण सगण मगणै रगण सगण लघू गुरु जान।
हरिणी छन्द बखानहो पिङ्गल मति बुधवान ॥

बिमलपद राघोजी वीरा दयाल करो सुखी,
दमन मन काहू ना देखो मनो चपला रुखी ।
अपन मन सें मोको देखो बड़ी विपदा दुखी,
दलकमल कीसी शोभा है जनो उपमा मुखी ॥

दोहा।

नगण सगण जगणै सगण यगणै लघु गुरु हेत ।
मालाधर सो छन्द है कविजन भाषत चेत॥२७॥

सुखद प्रद राम है परम प्रीति को देत है,
करण बड़ धाम है सुभग नीति सो पेत है ।
असुर हर श्याम है सु सुधि दास की लेत है,
चतुर सुखसीम है सुभग काम को पोत है॥२८॥

दोहा।

जगण सगण जगणै सगण यगणै लघु गुरु जान।
पृथ्वीछन्द बखानहो कवि पण्डित परिमान ॥२९॥

प्रसन्न त्रिपुरारि की बदन चन्द्र राका मनी,
श्रवै श्रवण भूमिका मधुर मञ्जु शोभा सनी। सुधा

सरिस नाम सो रुचिर राम ये सर्वदा, चकोर कर
चित्त को सुमति पान कीजे सदा ॥ ३० ॥

दोहा।

भगण रगण नगणै भगण नगणै लघु गुरु जान।
वंशपत्रपतिता कहौ छंद सु अति सुखदान ॥ ३१ ॥

दीनदयाल वंशकुलतारण भैयहरना,
मोदप्रदान वंसवकमारण सुखकरना।
माधव सन्तदीनजनकारण गिरिधरना,
श्रीपति चक्रपाणि मणिधारण भजु चरना॥

दोहा।

नगण जगण भगणै जगण तगणै लघु गुरु लेखि।
छंद सु नर्कुट कहत कवि पिंगल मत का देखि ॥
भज मन पूतनादमन राधिका ईशहिं को,
भज मन केशिया कदन द्वारिकाधीशहिं को।
भज मन बाँसुरीधरण भाषना गीतहिं को,
भज मन दारिदैदलन दीन के मीतहिं को ॥

दोहा।

यगण मगण नगणै सगण भगणै लघु गुरु जान।
छंद शिखरिणी जानिये पिंगल करत बखान ॥

बिहारी जू मैंने अधम जन के तारनन की,
सुनो जो मैं ठानो अधम वहते हूं दिनन की।
मुरारी जू मैंहूं पतित पति तू पाँवरन की, कृपा
पूरी देखो जय अजय होवे झुकन की ॥ ३६ ॥

भगण सगण नगणै जगण नगण रगण ये जान।
हीर छंद सो जानिये बरनत बुद्धिनिधान ॥३७॥

भाल तिलक माल उरसि छाप भुजन छावही,
श्याम सजल वारिद तन नैन कमल धावही।
कानन सुन पावन यश आनद उमगावही, प्रेम
मगन सन्तन मिलि जीवन फल पावही ॥ ३८ ॥

दोहा।

जहां होय षट यगण सो महा-मोदकारीय ।
पिंगल भाषत छंद मो सुखदायक अति होय ॥३९॥

धनी सूर बीरा रणी धर्म धीरः महा मोदकारी,
बिहारी दयालू अघारी कृपालू गुपालू मुरारी।
कृपा सिंधु केशो हरी कृष्ण माधो मुकुंदा खरारी,
बलो राम राघो हृषीकेश साधो भजो तोर वारी ॥

दोहा।

रगण सगण है जगणपुन भगण रगण युत जान।
चरण चारहू चर्चरी छंद सु विबुध बखान ॥ ४१ ॥

कृष्णचंद्र गुपाल माधव दीन-दारिद्र खंडनं,
रामचन्द्र कृपाल भूपति राघवं रघुनंदनं ।
चक्रपाणि महेश-मोहन केशवं बलिबंधनं ।
दीनबन्धुहिं छांड़ि के रट और ता सम अन्ध नं ॥

दोहा ।

मगण तगण अरु नगण जहँ यगण तीन जुत जान ।
कुसुमितलता-सुवेलिता पिङ्गल करत बखान ॥

जै जै गोबिंदा यदुपति हरी माधवो दीन रागी,
जै जै गोपाला त्रिभुवनपती साधवा भूरि भागी ।
जै जै श्री श्यामा जगतत्रयना संत के चित्त पागी,
जै जै आनंदा हितकर दया कीजिये मोह लागी ॥

दोहा ।

मगण सगण है जगण फिर भगण रगण युत जान ।
हरिणप्लुत सो छंद है भाषत सुकवि सुजान ॥४५॥

गोविन्दा मनमोहना यमुदालला यदुनाथजू,
हे माधो कमलापते बकघालका ब्रजनाथ जू ।
आनन्दा परिपूरणा मधुसूदनामरनाथ जू, चक्र-
पाणि हरे हरी प्रभु यादवा-कुलनाथ जू ॥ ४६ ॥

दोहा ।

नगणदोय फिर रगण चहुँ चरण चरणप्रति जान।
महामालिका छंद सो पिङ्गल करत बखान ॥४७॥

हरि गिरधर कोकिलाकंठधारी महारूप तू,
त्रिभुवन सुखदा महा दैत्यमारी बड़ो भूप तू।
विपतिदहन तू वकी नाशकारी सुधाकूप तू,
पतित पुरुष और पापीन को धर्म का यूप तू ॥४८॥

दोहा ।

भगण पांच इक अंत में सगण चरण प्रति जान।
छंद अश्वगति जानिये भाषत सुकवि सुजान ॥

माधव गोकुलचंद गदाधर पावन निरता,
केशव पूरन धाम हरीहर दूषनहरता। दीनन के
प्रतिपाल दया चित भावन धरता, जो सुमिरै तव
नाम भला वह क्यों दुख भरता ॥ ५० ॥

इति श्रुति ॥ १८ ॥ दोहा ।

मगण सगण जगणै सगण तगण तगण गुरु अन्त।
शारदूलविक्रीड़ितहिं छन्द कहत मतिवन्त ॥५१॥

हे बंशीधर हे दयानिधि हरे हे दीनबन्धो हरो,
हे रामानुज हे कृपालन करो हे पूर्ण शोभाधरो।

हे माधो बट छांह बैठ जनकी हे श्याम राधावरी,
हे पृथ्वीधर दास जान हम पै कीजे दया रावरी॥
दोहा।
तीन नगण है जगण पुन नगण अन्त लघु जान।
छन्द चन्द्रमाला यहै भाषत सुकवि सुजान॥५२॥
परम सुभग प्रभु मनमोहन राजिवनयन,
जगतविदित हरि करुणानिधि कोकिलवयन।
अशरणशरण पतितपावन दीननदयन,
जलधि मथन भय-हर सेवक भो जल शयन॥
दोहा।
यगण मगण नगणै सगण है रगणै गुरु अन्त।
छन्द मेघविस्फूर्जिता भाषत हैं बुधिवन्त॥५५॥
हरे रामा कृष्णा सुजन सुखदा राम आनन्दकारी,
कृपाधारो त्राता भवभय हरी दीन के दुःख टारी।
रमाधीशा चाता जगपति हितू सन्त के शोकहारी,
दयासिन्धू मेरे सुजन चित से दीजिये पाप जारी॥
दोहा।
भगण नगण जगणै भगण जगण जगण लघु अन्त।
छन्द रसाला जानि सो बरनत जे बुधिवन्त॥५७॥

मोहन मदन गुपाल राम प्रभु शोकविदारण,
सोहन परम कृपाल दीनजन पाप उधारण।
प्रीतम सुजन दयाल केशिवक-दानवमारण,
पूरण कारण सुनाम दीन-दुखदारिददारण ॥

इति श्रुति स्तुति ॥ १८ ॥ दोहा ।

सगण दोय जगणै भगण रगण सगण लग अन्त ।
गीति छन्द सो जानिये बरनत जे बुधिवन्त॥५८॥

रघुनन्द आनँदकन्द कौशलचन्द मोहन गाव रे,
हरि राम माधव मोहकाटन कंसमारन साँवरे ।
वसुदेव केशव केशिसूदन वासुदेवहिँ ध्याव रे,
चित चक्रपाणि विचार प्रीतम राम को सिर नाव रे॥

दोह ।

रगण जगण रगणै जगण रगण जगण गल अन्त ।
छन्द दण्डिका कहत है वृत्त छन्द पुन सन्त ॥

पूर्णब्रह्म शुद्ध चित्त गोपिका सनाथ कृष्ण राम राम,
कीजियेअनाथकोनिहालमानत्यागविष्णुरामराम।
चक्रपाणि दीनबन्धु श्री दयालु जिष्णु राम राम राम,
कोसहायहोतआजतोबिनाकृपालरामरामराम ॥

दोहा ।

नगण तीन जगणै सु है नगण सु लघु गुरु जान।
धवल छन्द सो जानिये पिङ्गल करत बखान ॥

रघुकुल रवि रघुवर को वपुष निरख हरषि,
भरत पुलक अति सिगरे नयन सलिल बरषि ।
प्रियतर पिय अँग सुखमा पट ऐंठ दृग परसि,
निज सुकृत प्रथम तनु को तनुधर जनु दरसि ॥

दोहा ।

मगण रगण मगणै नगण यगण भगण लग जान ।
चरण चरण प्रति होय सो छन्द सुवदना मान ॥

जै गोविन्दा गुपाला कलिमलदहना केशोहरणा जू,
जै आनन्दा कृपाला मन भयहरना भूमीधरणा जू ।
जै कंसारी दयाला जनहित करना तारन तरन जू,
जै बंशी के बजैया हम सकल परे तेरे चरणा जू ॥

इति कृति ॥ २० ॥ दोहा ।

मगण रगण भगणै नगण यगण तीन फिर जान ।
छन्द स्रग्धरा जानिये पिङ्गल करत बखान ॥६७॥

देवेन्द्रे सत्यसम्भो त्रिभुवन हर है यादवेशो कृपाला,
आनन्दे श्रीमुकुन्दे सवल नर हरे पूतना प्राण घाला।

देत्यारेश्रीविहारीमधुमथनकारीकंसकालीकृपाला,
माधौजीचक्रपाणीसकलदुखहरीनाथहूजेदयाला॥
दोहा।
भगण रगण नगणौ नगण जगण जगण यगणान्त।
छन्द समुच्चय जानिये पिङ्गल को सिद्धान्त॥६९॥
भाल बिसाल ऐन इभ-भुज इव काम शरासन भौंहैं,
लाजत देखि लाल नव जलरुह भ्राजत नैन जु सोहैं।
पादप-चौर कामतरुवर जनु विश्व मनोरथदाता,
देव अदेव सेव्य सरसिजपद भूरि कृपाजनधाता।
इति प्रकृति॥ २१ ॥ दोहा।
होय मगण तगणौ नगण तीन सगण गुरु अन्त।
हंसी छन्द बखानही पिङ्गल मत सों सन्त॥७१॥
रामा सीता गावौ धावौ निशि दिन सब विधि मन वच बानो, पावो भक्ती नौधा काटो भव दुख छिन इक चरनन ग्यानी। पीड़ा बाधा नाशै भारी खल दल दल-धर धनु शर पानी, जाकी ताकी भागें रोगा सुधरत हरि सुमरन कर ध्यानी॥
दोहा।
सात भगण प्रतिचरण में इक गुरु अन्त प्रमान।
मदिरा छन्द बखानहीं पिङ्गल मत बुधवान॥७२॥

मदिरा – सवैया ।

कानन कुण्डल जोति महा चपला दुति मन्द प्रभाकर से। माल गरे बनमाल परी मुरली कर मूरति बादर से ॥ मञ्जुल भूषण अङ्ग दिपे नट बेष किये सुखसागर से। दीखत नाहिं कहूं जग में बिन कारनही करुनाकर से ॥ ७४ ॥

दोहा ।

भगण पाँच फिर मगण इक सगण एक लघु अन्त।
कहि सवैया मोद इक सुनि सुख पावत सन्त ॥

कंसनिकन्दन कौरन फन्दन भौ भय नाशि गोकुलनाथ, दीन दयाकर जू सुखसागर नागर गोपी नावत माथ। मोहनमूरति मोहत मोहन मो मन जाति होत सनाथ, डूबत बारन ग्राह निवारण वेद बखानै गावत गाथ ॥ ७६ ॥

दोहा ।

भगण रगण नगणै रगण नगण रगण नग अन्त।
छन्द भद्रिका जानिये भाषत कवि मतिवन्त ॥

राम गुपाल दीन कुशला हरे परम पावना भज मना,
दीनदयालकृष्णभयहाबलीधरमधारनादुखहना ।

पाप विदार कै शिव कहा घनी परम सुन्दरी नरतना,
प्रेमप्रतीतनेमहितदासुखीकरणपापकाटहुघना ॥

इति आकृति ॥ २२ ॥ दोहा ।

सात भगण गुरु लघु सहित चरण चारहू जान ।
छन्द चकोर बखानिये पिङ्गल-मत को मान ॥

श्रीरघुवीर सिया सँग सोभित रूप निधान करो नित ध्यान, श्यामल गौर लसे पट भूषण आनन चन्द भरे सुख मान । तैसिय सुन्दर संग सखी कर चौंर सुगन्ध लिये मुद पान, जो यह रंग रँगे नहि होय कहा जप जोग किये व्रत दान ॥८०॥

दोहा ।

सात भगण दो गुरु चरण मत्तगयन्द बखान ।
सात जगण लघु गुरु चरण सुमुखि सवैया मान ॥८१॥

रावण बान बखानत वेद लखो गुणही कछु दोष न पेखो। छूट गई वह बान कहा अब मेरिय बार जु मागत लेखो ॥ और अनेक तरे पतितो इक होंहि रहो हिय होत परेखो । श्रीब्रजनाथ अहो रघुनाथ अनाथ कि ओर कृपा करि देखो ॥ ८२ ॥

गही पदपङ्कज जाहि लखि शिव गङ्ग तरङ्ग वही जिन ते। लजै रविनन्दनिजा परसि ग्रसते नहिं दोष दुरै तिनते॥ निशा मद मोह महा दुख दानव राम कृपाल मिटै किनते। रटो निशि बासर नाम उदारहिँ लोकन में न बड़ो इनते॥

दोहा।

नगण रगण नगणौ रगण नगण रगण न लगन्त।
अश्वललित सो छन्द है बरणत कवि बुधिवन्त॥

धरम धारना परम मीत मोहन रमा निवास प्रभु हरी। मदन-मोहना हरत भीत माधव कृपा-निधान सुख करी॥ रदैन सोहना बदन पद्म केशव दयानिधान दुख अरी। हमहि दीजिये परम भक्ति और न कछु सुहात तन धरी॥८५॥

इति विकृति॥ २३॥ दोहा।

यगण आठ प्रति चरण में महा भुजङ्गप्रयात।
आठ भगण प्रति चरण में छन्द किरीट सुनात॥

धरौ ध्यान गोविन्द को सीस नावो सजै मुक्त माला सुवेषा विशाला। गरो कम्बु सो कौस्तुभोरस्क छाजै विराजै सुखि वेणु बाजै रसाला॥ करौ नाम

उच्चार श्रीकृष्ण श्रीराम श्रीधाम जाही सहस्रास्य गावे । भरोसो करो राम के नाम को काम को एकतारी सु वेदौ बतावे ॥ ८७ ॥

धीर समीर ढिगै मुरली बट औ यमुनातट तुङ्ग तरङ्गित । फूल रहैं द्रुम कुञ्जन गुञ्ज करै अलि-पुञ्ज पराग सनेहित ॥ श्रीवृषभानसुता नँद नन्दन के गुण गान सुनै जितहो तित । कौन सुनै सु कहौं किहि सों ब्रज की छवि मो मन में खटकै नित ॥ ८८ ॥

दोहा ।

आठ रगण प्रति चरन में गङ्गोदक सो लेख ।
चन्द्रकला दुर्मिल कहै आठ सगण को देख ॥८९॥

पुत्र औ धाम औ बाम औ दाम राखै यही ठाम चालि नहीं साथ जू । स्वास यें रात द्यौसि घटै जात बोलि वृथा बात आवै कछा हात जू ॥ नैन सो श्याम शोभा लखौ कान सौं कान की प्रेम सानी सुनौ गाथ जू । बैन सो कृष्ण गोविन्द गोपाल श्रीराम श्रीधाम गावौ जगन्नाथ जू ॥९०॥

जु कछू लिख दीन ललाट दई सु दई निज कर्म्म मई सहिये। शुभ-कर्म्म कहै निगमागम में दृढ़ कै तिनको चित में गहिये॥ प्रभु के गुनगान जहाँ नित होंहि तहाँ सत-संगति में रहिये। हरि के पद को धरि ध्यान हिये हरि जू हरि जू हरि जू कहिये॥ ९१॥

दोहा।

सात जगण इक यगण जुत चरण चारहू लेख।
बाम छन्द मकरन्द कोउ कहत सवैया देख॥९२॥

गरे सिर-माल निशाकर भाल धरे लट-गङ्ग पुरेश पुरानै। लँगोट भुजङ्ग भुजङ्ग अभूषण भस्म लपेट शरीर सुहानै॥ लिये डमरू कर भङ्ग पिये अरधङ्ग शिवा गज-खाल उढ़ानै। सनाथ सदैव अनाथन के निगमागम वेद न वेद बखानै॥९३॥

इति सत्कृति॥ २४॥ दोहा।

आठ सगण अरु दोय गुरु चरण चारहू लेख।
कहत सवैया सुन्दरी पिङ्गल मति को देख॥९४॥

उत श्याम घटा इत हैं अलकैं बकपाँति उतै इत मोति लरी है। उत दामिनि दोसति दन्त

इतै उत चाप इतै भुव बङ्क धरो है॥ उत चातक ही पिय पीय रटै इत कामिनि की विपरीत घरी है। उत बुंद अखगड इतै अँसुवा मनु कामिनि सि घन होड़ परी है ॥ ९५ ॥

इति अतिक्षति ॥ २५ ॥ दोहा ।

आठ सगण फिर दोय लघु समुझ सवैया नाम ।
कुन्दलता पुन नाम भो कहत सुकवि मतिधाम ॥

शर चाप लिये कटि माथ सु चिन्ह महीसुर-माल क्यो हियरे पर । जटजूट पितम्बर संग भुजा हनुमादिक रेख ललाटन केशर ॥ दलि रावण को दई लङ्क बिभीषण आवत हैं अवधेश क्रपाकर । लखि नारि कुमारिनि को विरहा रवि अस्त भयो लखि रूप निशाकर ॥ ९७ ॥

दोहा ।

मगण दोय फिर तगण इक नगण तीन रगणेक ।
सगण एक लघु गुरु सहित सुजग विजृंभितसैक ॥

कंसा काली केशी मारा जगत बिदित तुम प्रभुजी सुखी जनकारण । माधौ याहौ राघौ साधौ कलिमल दहन सु विभु जो मनोरथ पारण ॥

दीनानाथा गोपीचन्दा हलधर कुलपति शुभजी
हरो दुख दारुणा। धीरा बीरा नन्दा दाता जल-
निधि बसत मलक्ष्मी हरीहर तारणा ॥ ८८ ॥

दोहा।

मगण सुषट नगणौ सगण दो गुरु सो अपवाह।
छन्द बखानत सु कवि सब पिङ्गल कौ मति चाह ॥

गोविन्दा परम धरम जन मन सुख भव-भय
हरण विहारी जू। कंसारी प्रभु मधुरिपु यदुकुल-
पति परम हितकर मुरारी जू॥ आनन्दामृत धनद
अभय करन जन हित धरन मुरारी जू। ताको
सेवहिँ निशिदिन निज मन कर जपत रहत
त्रिपुरारी जू ॥ १ ॥

दोहा।

चार भगण त्रय तगण दो भगण चरण प्रति जान।
सुधाधार दण्डक सु यह पिङ्गल करत बखान ॥

पूरण ब्रह्म सनातन श्री पति तू सो तुही है
गुसाईं दयाल दयाकर। कौन गुणी गुण गाय
सके प्रभु वेदो न भेदा जु जाने कछुक दमोदर।

सो कस गाय सकै नर ते गुण माया महामोह भूलो प्रपञ्च रहो भर । जान दया कर प्रीतम मोहरि मैं तू तजै तै कहा हौं सुधाधर श्रीधर॥३॥

दोहा ।

जगण रगण जगणो रगण जगण रगण जर अन्त।
वर्णक महिधर छन्द सो वरणत कोविद सन्त॥४॥

धरी विशाल पाग है भलो भरो पराग है मनो हिमांशु जाल है सुधा किये । सुवर्ण गुच्छ हाथ है सु मोर पुच्छ माथ है रमा जु सुच्छ साथ है बसी हिये ॥ अनाथ नाथ तात है मनोज पुञ्ज गात है सदा हमें सुहात है भलो जिये । सदैव चक्रपाणि है अधार मानि जानि है भरोस आस आनिहै हृदै दिये ॥ ५ ॥

दोहा ।

निधि९ऋषि७ऋषि७इषु५वर्णपैजहँबिश्रामविशेखि।
वर्णक रङ्गी छन्द सो भाषत पिङ्गल देखि ॥ ६ ॥

मन गान सुजान करो हरि हेरि समुझि समुझि दिन जात डरात नहीं । तन छीनहु

सलौनहु होयगो एक दिन फिर न रहो तुम काम के कहीं ॥ धन धाम रहे धरि है सब रे यहँही ठौर बाँधव लोग रहेंगे यहीं । चक्रपाणि अबही चेत तन मन कार के धर के हिय राम प्रतोदिनहीं ॥ ७ ॥

दोहा ।

नगण होय ऋषि यगण फिर लघु गुरु चरण न चन्त ।
वर्णक दण्डक छन्द सो पिङ्गल भाषत सन्त ॥८॥

सब जग सुखनिदाता तुही सीयमाता जनानन्द कारी तुही एक नारी रची । दरस हरष बढ़ावै महाराज श्रीराम के चित्त भावै न तोसी सुनी है शची ॥ पल पल बढ़त है जो प्रभा औरही रूप को को बखाने बड़ाई न एको बची । त्रिभुवन मध तुही एक है और दूजी विधाता न कीनी लखे जाहि रम्भा रची ॥ ९ ॥

दोहा ।

गुरु लघु क्रम सों वर्ण जहँ तीस चरण प्रति जान ।
नीलचक्र सों छन्द है वर्णन लखो विधान ॥१०॥

राम राम जाप जाप भीत प्रीति जानि नित्य लोक को वियोग सर्व हार दूर जाय। तात भ्रात पुत्र मित्र जानि बन्धु कोउ पास आव फेर नाहि होय मानुषीय काय॥ जोनि मध्य भर्म भर्म भूल भूल गोत खाय बूझि बात व्यर्थ मूल बात नाहि भाय। जानिये कहा भयो अरे मलीन- चक्रपाणि चेत रे अचेत राम नाम होय लाय॥ ११॥

दोहा।

सोरह पन्द्रह वर्ण पर जहँ विश्राम बिशेखि ।
वर्णक मनहर छन्द है घनाक्षरी सो लेख ॥१२॥

कर कर आयो जब खर खर काटी नार धर धर बाजो ढोल घर घर जानो है। दर दर दौरो जाय नर नर आगे दीन बर बर बकत न नेक अलसानो है। सर सर सोधो धन तर तर तोरे पात जर जर काटत अधिक मोद मानो है। फर फर फूल्यो फिरे डर डर पै न मूढ़ हर हर हसत न सुन्दर सकानो है॥ १३॥

पुनः।

जोम कर जोर जोर धन को धरा में धरे खावै

न खवावे मानै वेद की न चासना। गदाधर कहै मोह-मद में छकोई रहै दान की सुनै तें कछू ठाढ़ो होय पास ना। शम्भु को न सेवै वृथा जन मन सेवै बार-नारिन को सेवै मानै जम की न चासना। नेको बदी पाय जात पाछे पछताय जात बासना बिलाय जात रहि जात बासना॥

दोहा।

दस वसु वसु ऋतु वर्ण पै जहँ विश्राम बखान।
वर्णक कुण्डलनी गनो पिङ्गल करत प्रमान॥१५॥

माधव गोकुलचन्द हरी करुणाकर प्रीतम दीनदयाल कृपाल अधम उधार। केशव मोहन राम गदाधर गोकुलेश प्रभु पूरण परमेश्वर विपति बिदार। पुरुषोत्तम प्रवीण बीर धीर धुरन्धर अघ बकादि दैत्यमारण सुजन अधार। चक्रपाणि रघुनाथ राम हरि भजहु सप्रीति नाहि यह तन छीन होयगो सवार॥ १६॥

दोहा।

जगण सु दल लघु फिर गुरू चरण चरण जहँ होय।
गणि अनङ्गशेखर सु यह छन्द कहैं कवि सोय॥

रचौ विशाल वज्र शैल एक ओर लोभ ने धरै बनै न पाय घोर देख तीच्छाता भगै। धरौ प्रसक्त चाप पै रह्यो बिलोकि मर्म ठौर एक ओर काम त्रास भाजिबो बुरौ लगै। लिये प्रचंड पांशु को खड़ो कृतांत एक ओर रूप मोह बार बार कंठ ओर देखिये दिढ़ै कृशानु एक ओर आय दुष्ट क्रोध नै भजै सु जीव कौन ओर क्षेम ठौर लेखिये॥ १८॥

दोहा।

जगण पांच पुन रगणहू पांच सु लघु गुरु अंत।
द्विनाराचका छंद सो भाषत कबि बुधिवंत॥१९॥

प्रसन्नबक्त्र वक्र चारु पूर्णचंद्र के समान श्याम जोति माल भेष देख लोक लाभजै। लिये गदा सरोज शंख चक्रपाणि चार बाहु तस्र हृद्य पीठ विप्र लक्ष सोभ जै। विशाल भाल दिव्य खौर रत्नमाल कंठ में कुमोदबंधु मंदहास शुद्ध सोम वर्षियो, सजै रसाल अंग अंग अंग दादि भूषणै विलोक विष्णु रूप गात मात-रोम हर्षियो॥ १९॥

सम सु वृत्त वर्णन करे निज मति के अनुसार।
वर्णत वृत्त सु अर्ध सम पिंगल मत उर धार॥ २०॥

अथ अर्द्ध समवृत्त लक्षण—दोहा ।

प्रथम तृतिय सम द्वै चरण पूरब उत्तर अर्द्ध ।
सम द्वै अध समवृत्त कहि बर्णत सुकवि समर्द्ध॥१॥
प्रथम तीसरे चरण में तीन सगण गुरु होय ।
दूजे चौथे चरण में भगण तीन गुरु दोय ॥ २ ॥
बेगवती सो छंद है गणो अर्द्ध सम वृत्त ।
पिंगल मत सो कहत हैं कोविद निश्चै चित्त ॥३॥

उदाहरण ।

गिरिजापतिमोमनभायो,नारदशारदपारनपायो।
करजोरअधीनअभागे,ठाढ़भयेबरदायकआगे ॥४॥
प्रथम तीसरे चरण में सगण जगण गुरु दोय ।
दूजे चौथे चरण में सगण दोय पुनि होय ॥ ५ ॥
जगण सहित फिर एक गुरु आवत छंद सो जान।
पिंगलमत परिणाम सो कविजन करत बखान ॥

उदाहरण ।

यश तोर भूमि गाया, जग में नित तू प्रकाशनी।
कर आज नीक दाया, शिव सन्निधि नित्य वासिनी

द्वै नगण यगण फिर रगण जान । चौथे द्वितीय पद में प्रमाण ॥ द्वै नगण जगण फिर रगण वेष । गुरु एक सहित चित्रा विशेष ॥

करत जगत आप वो महेशा। धरत परम सुरू पशो नरेशा॥ हरत सकल दीन के कलेशा। करत अभय सुधार के अहेशा॥ ६॥

प्रथमहि सु तीसरे चरण देखि। सगणै सुजगण गुरु दोय लेखि॥ दूजेरु चतुरथे चरण जान। है सगण भगण है गुरू मान॥ १०॥

रमणीय छंद तिहि नाम वेष। शिशु लीला विय तिहि नाम देश॥ पिंगल बखान यह छंद चारु। बरनै विशाल कवि बुध उदार॥ ११॥

करुणाकर को जु नाम गायो। सब में लाभ भली विधि पायो॥ गिरिजापति को सुभाव भायो। जिन को पार कभी नहिं पायो॥ १२॥

प्रथम हि सु तीसरे चरण देखि। है नगण जगण यगण जगणै विशेखि॥ दूजेरु चतुरथे चरण जान। है भगण तीन दो गुरु बखान॥

द्रुत मध्य छंद पिंगल बिशाल। भाषे जु सु कवि पंडित रसाल॥ यह छंद ग्रन्थ में लेहु जान। श्रुति सुखद बखानत बुद्धिमान॥ १४॥

असुर विनाशन पुण्य शोरा । मोहन माधव केशव बीरा ॥ कब हर लेवहुगे मम परा । यादव गोकुल नाथ अहीरा ॥ ६५ ॥

दोहा ।

तगण जगण रगणै गुरू प्रथम तीसरे चर्ण ।
दूजे चौथे चरण में भगण सगण सुब वर्ण ॥ ६६ ॥
जगण होय गुरु अंत सो भद्रविराट बखान ।
पिंगल फणपति कहत हैं जान लेहु बुधवान ॥

लोकेश हरौ रमा विहारी । केशौ काल कृपा करो मुरारी । बीरेश हरी विभू मुरारी । मेरा तारन को भई सुबारी ॥ ६८ ॥

पहिले सु तीसरे चरण लेखि । सगणै सु तीन लग कलित देखि ॥ दूसरे चतुर्थ चरण जान । भगणै सु होय पुनि भगण मान ॥ ६९ ॥

इक गुरु सु अंत प्रतिचरण वेष । उपचित्र छंद जानहु विशेष ॥ पिंगल सुरीति सो कर बखान । जानै सु भेद सब बुद्धिमान ॥ ७० ॥

करुणानिधि माधव मोहना । दीनदयाल सुनो हमरी ॥ कमलापति यादव सोहना । मैं शरणागत हौं तुमरी ॥ ७१ ॥

दोहा।

पहिले तीजे चरण में सगण जगण सगयोग।
दूजे चौथे चरण में भगण रगण नगयोग॥ ७२॥
गुरु युत होवे अंत में केतुमती सो जान।
कवि कोविद्वरणतसबैपिंगल करत बखान॥७३॥

प्रभु जी हरौ हमहि तारो, मैं मन से सभी अघ निकारो। अपने हिये यह बिचारो, राम अनाथ को लखि उबारो॥ ७४॥

अथ विषम वृत्त लक्षण॥ दोहा।

जाके चारहु चरण में लक्षण होवे भिन्न।
बिषम वृत्त सो जानिये बरणैं बुद्धि अभिन्न॥७५॥

हंसी छंद।

राघू कृपालू रघुबीर पावना, सुरेश श्रीवामन हौं चकोर तेरो। हरे दयालो मन धोर भावना, गुपाल यादौ तव पाद पद्म को चेरो॥ ७६॥

सौरभ छंद।

हरि माधवा हरहु शोक, मधुमथन नंद-नंदन। गोपिकारमण नाथ हरे, तुव पाद पद्म युग दास दास हौं॥ ७७॥

ललिता छन्द ।

भज राधिकारमन माधौ, सकल मन काम दान को । तज विषम विषय भावना, जग जानिये सकल इन्द्रजाल को ॥ ७८ ॥

सुरभि छन्द ।

ब्रजपति तू कहाय के, मधुब्यूरी हरि जाय के रहे । परम कठोर चित्त तेरो, मदन गुपाल जौ दीन को बिसारो ॥ ७९ ॥

चित्रपाद छन्द ।

कृपा हमे नेक बंशी, सुनावो मधुर २ फूंकि के । जन्म जन्म की हैं हम तेरी दासी स्वामी, दया कीजिये भला अब चित्त से अपनी रिस छोड़ के ॥

आपीड़ छन्द ।

प्रभु असुर सु हर्त्ता, जग विदित पुन जगत भर्त्ता । दनुजकुल अरि जगत हित तुम धर्म धर्त्ता, अस प्रभु कह सरबस तज मन बिच भजर्त्ता ॥ ८१ ॥

कलिका छन्द ।

बसहु मम हिय करन भक्ति, शुभग तन सशक्ति । पद्म बदन सुख सयन करन मुक्ति, हम किस विधि तुम कहँ भजहिँ निरखत सु उक्ति ॥८२॥

लवली छन्द ।

भवभय हरण खलन मारी, तुम सब अधम मन जन अघ-दल-हारी। तुम पर बलिहारी, जब तुम जिस समय सब यदुकुल हित गिरधारी ॥८३॥

अमृतधारा छन्द ।

अमृत बचन कह दीजै, हरि हम सच कहत इतना यश लीजै। हम बन तज अब निशि समय समझ के जीवे, नहिं विष बट पीवे ॥ ८४ ॥

उल्लाल छन्द ।

कटि जात पाप घटि जात दुःख, सुख सम्पति ससन्तति लहित। दिन दिन उद्दोत विपति होत इत, हरिचरण नहि चित करत हित ॥ ८५ ॥

इति विषम वृत्त वर्णन—दोहा ।

सम सु अर्धसम विषम ये छन्द तीन विधि जान।
सु कवि गदाधर ने कहे अपने बुद्धिप्रमान ॥८६॥

पद्धरी ।

जमटनरेश श्रीमाधवेश, लहि हुकुम गदाधर कवि विशेष। पिङ्गल सु ग्रन्थ यह रच्यो आन, जिहि पढ़ै छन्द कहँ होय ज्ञान ॥ ८७ ॥

दोहा।

श्रीमाधव महिपाल को श्रीमुख हुकुम सु पाय।
रची मुछन्दोमञ्जरी बहु विधि छन्द बनाय॥८॥
आशिष जमटन्नपतिमणि माधवेश कों देत।
सुकवि गदाधर छन्द रचि छप्पय कवित समेत॥

छप्पय।

जब लगि शम्भु शिरीष गङ्ग धारा ध्रुव राजत।
जब लगि उन्नत मेरु महीमण्डल छवि छाजत॥
जब लगि शम्भु शिरीष गंग धारा ध्रुव राजत।
जब लगि श्रीरघुबीर-कित्ति हनुमान विशेषहु।
जबलग्गिइन्द्रअमरावतीशचियशारदासिद्दगणि।
तबलग्गिहोहुचिरजीवजगमाधवेशमहिपालमणि

कवित्त।

महल बनाये गढ़ी मध्य छवि छाये कोटि गुरज सुहाये तोप दुन्दुभो दराजा है। गदाधर कहै दीह दिव्य दहनालि बनीं बंगला विशाल बापो बाग सुख साजा है॥ गिलमे मसनन्द बँधे पर्दा चँदोवा तने भाड़ रँग रङ्गन के दीपक समाजा है। शूर सरदार कवि कोबिद उदार सभा साजे तहाँ राजे माधवेश महराजा है॥ ८१॥

कवित्त ।

बखतबुलन्द श्रीसुठालियानरेश बीर माधवेश कीरति विशाल सरसाता है। गदाधर कहै आप कविता रसज्ञ राजै कवित बनावै छन्द छप्पय विधाता है ॥ लक्षण अलक्ष लक्ष भूषण अनेक जानै जाचक को देखि सनमान दरसाता है । लोक-जन-त्राता शम्भु-भक्ति रसराता सदा कविन को ज्ञाता गज वाजि-धनदाता है ॥ ६२ ॥

ऊमटनरेश कुलमण्डन महीप मणि माधवेश बीर के विशाल दोर दण्ड है। गदाधर कहै दीह द्रोहिन को दण्डे सदा ओज में अखण्ड रूप तेज मारतण्ड है॥ प्रभुता प्रचण्ड आप उद्दत उमण्डे महा आयु बल साजै मून सोभित मृकंड है । देत है वितुंडे रिपु-मुण्डन को खंडे जस दान कर मंडै सों कृपान कर मंडै है ॥ ६३ ॥

ऊमटनरेश महाराज माधोसिंह बीर कीरति-प्रताप शशि-सूरज समेत हौ । गदाधर कहै धीर धरम धुरीन राजौ प्रभुता प्रवीन प्रजा पालन के

हेत हौ ॥ दान मनमान में प्रतच्छ कल्पब्रच्छ ह्वैकै द्विजन के आशिष अनेक भाँति लेत हौ । खीज कर अचला अरिन्दन को लेत पुनि रीझ कर अचला कविन्दन कों देत हौ ॥ ९४ ॥

भोजकुलकलस पमारन में सिन्धुराजै राजै भुज दण्ड गिरिबैरिन-बजर है । गदाधर कहै ओज मण्डित अखण्ड सदा मौजें देत हाल हौंन पावत फजर है ॥ कविता-रसज्ञ गुनी-गाहक अभिज्ञ जाको सुजस प्रताप लोक अजर अमर है । देखत कविन्दन का दौलत नजर करै माधव नरेश आप दौलतनजर है ॥ ९५ ॥

आयो दूरदेश तें सुठालिया दुआरिका में दूर भयो मारग को खेद, सुख साजा है । अच्छर द-सेक जंस अच्छत सु बाँधे गाँठ वैभव बिलोकि भूलो बिबुध समाजा है ॥ इँदिरा सु देखि मुख चकित भई सी रही सुन्दरी शची सी अलकेश-पति खाजा है । सुकवि गदाधर सो जाचक सुदामा जहाँ दानी कृष्णचन्द्र माधवेश महराजा है॥९६॥

आंगन में तरल तरङ्ग यमुना को लसै कीरति विशाल सित शोभा शशि शेश को। गदाधर कहै कोटि तड़िता तड़फ जासों दूर दुरि जाति कर-दीपति दिनेश की ॥ संगर में शम्भु को रिझावै मुण्ड मालन दै आशिष अनेक साजै तनुज नगेश को। जाको देखि पानी सूखे शत्रु मुख पानी ऐसी राजै कञ्ज-पानी में कृपानी माधवेश की ॥ ९७ ॥

रक्षा-बन्धनोत्सव—कवित्त।

सुन्दर सुरङ्ग बहुरङ्ग अङ्ग अङ्ग सोहै सित रत-नारी भारी सोभ सुख-साजा की। गदाधर कहै हीर हाटक जलज जेब लागि जगाजोति रवि किरन समाजा की॥ नील पीत हरित विचित्र जरतार सनी नवो ग्रह गुंफित सु हेतु छेम छाजा की। लोक अभिलाषी कोटि तैतिसङ्क साखी ऐसी रक्षा करै राखौ माधवेश महाराजा की ॥ ९८ ॥

कवित्त।

भाद्र बदि वेद[४] तिथि सम्वत अनन्त[१] फल[४] नन्द[९] शशि[१] सुखमा सुवेषता समाजा को। गदाधर कहै

ब्रह्ममण्डली उचारै स्वति मङ्गलीक गावै नारि दुन्दुभी दराजा को ॥ कदली कलस तनै तोरन सुदीप दिपै पूजि ग्रह सब चिरजीवो भक्ति साजा को । सबै चित चाह सुखसिन्धु अवगाह आज जन्म उछाह माधवेश महराजा को ॥ ९९ ॥

दोहा ।

ग्रन्थ सु छन्दोमञ्जरी रची गदाधर वेष ।
श्री-माधव नरनाह को हुकुम पाय सु विशेष ॥
जो यह छन्दोमञ्जरी पढ़ै पढ़ावै चाय ।
सो सब छन्द प्रबन्ध को ज्ञाता होय सुभाय ॥
प्रतिपद मेचक भाद्रपद नभश्रुति निधि शशि सार।
सम्बत नगर सुठालिया ग्रन्थ लयो अवतार ॥

सिद्धि श्रीमन्महाराज श्री १०८ माधवसिंह देववर्म्माश्रित श्रीमत्कविचक्रचूड़ामणि पञ्च श्री मत्कवि पद्माकर भट्टात्मज पञ्च श्रीकवि मन्नीलाल भट्टात्मज पञ्च श्रीकवि गदाधरकृत छन्दोमञ्जरी ग्रन्थेऽर्द्ध समविषमवृत्त दण्डादिक वर्णन नाम द्वितीय प्रकरणं। समाप्तोयं ग्रन्थः। श्रीमन्महाराज श्री १०८ माधवसिंहवर्म्मणां मुदे भूयात् ।

इति शुभम् ।

॥ उपन्यास ॥

अघोरपन्थी	/)	अमलावृत्तान्तमाला	॥।)
अकबर उपन्यास	॥)	भूतों का मकान	॥)
अजीब अजनबी	॥)	गंगागोविन्दसिंह	॥।)
ईश्वरीलीला	/)	उधेली	=)
कमलनी उपन्यास	।)	मधुमालती	॥।)
कांष्टेवृत्तान्तमाला	॥।)	कुलटा	/)
कुसुमलता चार भाग	२।)	कुसुमकुमारी चारो भाग	१)
स्वर्गीय कुसुमकुमारी	॥।)	कटोराभर खून	॥/)
काजल की कोठरी	॥/)	कमलकुमारी चार भाग	२)
मनोरमा उपन्यास	॥/)	चन्द्रकला	।)
चन्द्रकान्ता चारो भाग	१)	चन्द्रकान्तासन्तति२१भाग	१०॥)
जया उपन्यास	॥)	ठगवृत्तान्तमाला चारो भाग	३॥)
डबल चोर	।)	संसारदर्पण	२)
दुर्गेशनन्दिनी दोनों भाग	॥।)	दीपनिर्व्वाण	॥।)
दीनानाथ का गृहचरित्र	।/)	दलितकुसुम	।/)
नरेन्द्रमोहिनी दोनोंभाग	१)	भयानकभ्रमण	॥।)
मायाविनी	।)	नरपिशाच दो भाग	१॥)
प्रणयिनीपरिणय	/)	स्वर्णलता	॥।)

रामकृष्ण वर्म्मा

सम्पादक भारतजीवन काशी ।